ग्राम्य विकास एवं पलायन आयोग, उत्तराखण्ड़, पौड़ी गढ़वाल

जनपद देहरादून के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक विकास को सुदृढ़ करने एवं पलायन को कम करने हेतु सिफारिषें

अप्रैल 2022

प्रस्तावना

जनपद देहरादून उत्तर और उत्तर पश्चिम में उत्तरकाशी, पूर्व में टिहरी और पौड़ी, पश्चिम में हिमाचल प्रदेश का सिरमौर जनपद तथा दक्षिण में हरिद्वार और उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जनपद की सीमाओं से घिरा हुआ है। देहरादून जनपद के उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में शिवालिक की पहाड़ियाँ स्थित हैं। समुद्र तल से औसत 640 मीटर (2100 फीट) की ऊँचाई पर स्थित देहरादून जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3088 वर्ग किलोमीटर है।

जनपद देहरादून के कुल 231 ग्राम पंचायतों में 25781 व्यक्तियों द्वारा वर्ष 2018 के बाद अस्थायी पलायन किया गया है, जिसमें सबसे अधिक विकासखण्ड कालसी के 107 ग्राम पंचायतों में 11399 व्यक्तियों द्वारा तथा सबसे कम सहसपुर विकासखण्ड के मात्र 04 ग्राम पंचायतों में 144 व्यक्तियों द्वारा अस्थायी पलायन किया गया, जबकि विकासखण्ड विकासनगर के कुल 26 ग्राम पंचायतों में 7397 व्यक्तियों द्वारा अस्थायी पलायन किया गया है

जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन की समस्या आर्थिक विषमताओं; कृषि के उत्पादन में कमी; कम ग्रामीण आय और एक तनावग्रस्त ग्रामीण अर्थव्यवस्था के कारण अनेक समस्याऐं उत्पन्न कर रही हैं। इसी संदर्भ में आयोग ने देहरादून जिले के प्रत्येक विकास खण्ड का विस्तृत सामाजिक–आर्थिक विश्लेषण किया है। यह रिपोर्ट जनपद के सामाजिक–आर्थिक मापदंडों की विस्तार से विश्लेषण करती है, विशेष रूप से उनके संदर्भ में जो पलायन पर प्रभाव डालते हैं। जनपद की ग्रामीण सामाजिक–अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए सिफारिशें प्रस्तुत की गई हैं, जो इन क्षेत्रों से लोगों के पलायन को अवरूद्ध करेगी।

आयोग अपने अध्यक्ष श्री पुष्कर सिंह धामी, माननीय मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड द्वारा दिए गए मार्गदर्शन और प्रोत्साहन; श्री गणेश जोशी, मा0मंत्री, ग्राम्य विकास विभाग, उत्तराखण्ड, श्री आनन्द वर्द्धन, अपर मुख्य सचिव, ग्राम्य विकास, उत्तराखण्ड शासन, एवं श्री सचिन कुरवे, सचिव, ग्राम्य विकास, उत्तराखण्ड शासन को उनके सुझाव और समर्थन के लिए; डॉ0 आर0 राजेश, जिलाधिकारी, देहरादून एवं उनके अधिकारियों की टीम; विभिन्न लाइन विभागों के अधिकारी और कर्मचारी; जिले के सभी जनप्रतिनिधि; जिले के सभी वरिष्ठ अधिकारी; एन.जी.ओ. और ग्रामीणों, श्री रोशन लाल, सदस्य सचिव, ग्राम्य विकास एवं पलायन आयोग, श्री गजपाल चन्दानी, शोध अधिकारी, ग्राम्य विकास एवं पलायन आयोग तथा श्री भूपाल सिंह रावत, वैयक्तिक सहायक द्वारा इस रिपोर्ट को तैयार करने के अथक प्रयासों को विनम्रता के साथ स्वीकार करता है।

10 अप्रैल 2022

डॉ शरद सिंह नेगी
उपाध्यक्ष

अन्तर्वस्तु

अध्याय 1.	परिचय	1
अध्याय 2.	सामाजिक–आर्थिक आंकड़े	16
अध्याय 3.	पलायन की स्थिति	59
अध्याय 4.	ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु जनपद देहरादून में विभागों द्वारा संचालित कार्यक्रमों का विश्लेषण	74
अध्याय 5.	विश्लेषण एवं सिफारिशें	137

अध्याय ।

परिचय

वर्ष 2000 में माह नवम्बर को नवनिर्मित उत्तरांचल (उत्तराखण्ड) राज्य की अनंतिम राजधानी के रूप में घोषित देहरादून भारत के सबसे पुराने शहरों में से एक है। इसे द्रोण घाटी के नाम से भी जाना जाता है। हिमालय पर्वत श्रृंखला में बसे, प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर यह शहर देश की राजधानी से लगभग 230 किमी की दूरी पर स्थित है, जहाँ तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग, सर्वे ऑफ इण्डिया, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, वन अनुसंधान संस्थान, भारतीय सैन्य अकादमी, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, लाल बहादुर शास्त्री प्रशासनिक अकादमी, आदि जैसे प्रसिद्ध राष्ट्रीय संस्थान मौजूद हैं। देहरादून अपनी सुन्दरता और वैभव के कारण पर्यटकों तथा तीर्थयात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। देहरादून बासमती चावल, चाय और लीची के क्षेत्र में विश्वव्यापी पहचान बनाये हुए है।

❖ ऐतिहासिक रूपरेखा

जनपद का नाम इसके मुख्य शहर देहरादून के नाम पर रखा गया है, जो हमेशा गढ़वाल राज्य का भाग रहा है। देहरादून को देहरा और दून शब्दों में विच्छेद किया जाता है, जिसमें देहरा शब्द को डेरा (अस्थायी आवास या शिविर) का अपभ्रंश माना गया है। जहाँ एक ओर कुछ इतिहासकारों की माने तो यहाँ सिक्ख गुरू रामराय अपने अनुयायियों के साथ डेरा स्थापित कर रहते थे, जहाँ कालांतर में शहर का विकास इसी डेरे के आस–पास प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार डेरा शब्द के दून शब्द से जुड़ जाने के कारण यह स्थान देहरादून कहलाने लगा, वहीं दूसरी ओर कुछ इतिहासकारों का मानना है कि दून शब्द दूण से बना है, जो संस्कृत के द्रोणि का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ होता है घाटी, अर्थात देहरादून का शाब्दिक अर्थ हुआ देवालयों/मन्दिरों की घाटी, क्योंकि पुराणों में देहरादून जनपद के जिन स्थानों का सम्बन्ध रामायण एवं महाभारत काल से जोड़ा गया, उन स्थानों पर प्राचीन मन्दिर तथा मूर्तियां अथवा अवशेष प्राप्त हुए हैं।

❖ भौगोलिक आच्छादन

समुद्र तल से औसत 640 मीटर (2100 फीट) की ऊँचाई पर स्थित देहरादून जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3088 वर्ग किलोमीटर है। जनपद देहरादून उत्तर और उत्तर पश्चिम में उत्तरकाशी, पूर्व में टिहरी और पौड़ी, पश्चिम में हिमाचल प्रदेश का सिरमौर जनपद तथा दक्षिण में हरिद्वार और उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जनपद की सीमाओं से घिरा हुआ है। देहरादून जनपद के उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में शिवालिक की पहाड़ियाँ स्थित हैं। इस क्षेत्र में मसूरी, सहस्रधारा, चकराता, लाखामण्डल तथा डाकपत्थर जैसे कुछ पहाड़ी नगर अत्यन्त प्रसिद्ध है। जनपद के पूर्व में गंगा नदी और पश्चिम में यमुना नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है। जनपद दो भागों में विभाजित है जिसमें जहाँ एक ओर मुख्य शहर देहरादून एक खुली घाटी है जो कि शिवालिक तथा हिमालय की श्रेणियों से घिरी हुई है, वहीं दूसरी ओर जौनसार भाबर है जो हिमालय के पहाड़ी भाग में स्थित है।

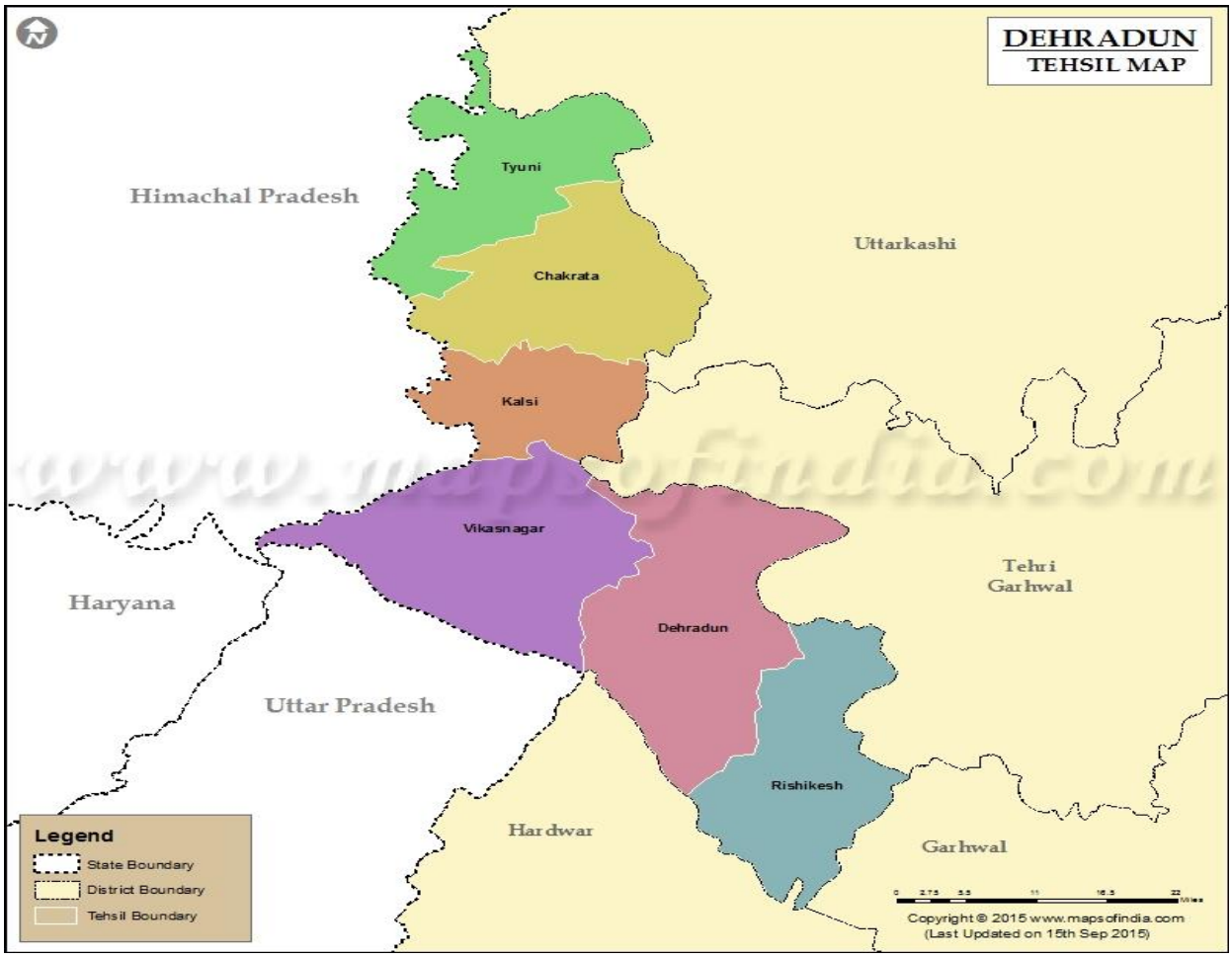

(District website)

❖ जलवायु विवरण

देहरादून जनपद की जलवायु समशीतोष्ण है। ऊँचाई वाले कुछ जगहों पर काफी सर्द मौसम रहता है जिनके आस–पास की पहाड़ियों पर सर्दियों में हिमपात होता है पर देहरादून का तापमान आमतौर पर शून्य से नीचे नहीं जाता। गर्मियों में स60

ामान्यतः यहाँ का तापमान 29.4 से 34.4 डिग्री सेल्सियस के बीच और सर्दियों में 3.6 से 19.3 डिग्री के बीच रहता है। वर्षा ऋतु में अच्छी बारिश होती है, जहाँ गर्मियों में पहाड़ियों पर मौसम सुहावना होता है, वहीं दून घाटी में मौसम गर्म रहता है। जनपद में उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी और पर्याप्त पानी होने से कृषि की स्थिति अच्छी है। पहाड़ी क्षेत्रों के अन्तर्गत सीढ़ीदार खेतों में खेती की जाती है। जलवायु का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

माह	वर्षा (mm)	सापेक्षित आर्द्रता (%)	अधितम तापमान (°c)	न्यूनतम तापमान (°c)	औसत तापमान (°c)
जनवरी	46.9	**91**	**19.3**	**3.6**	**10.9**

फरवरी	54.9	83	22.4	5.6	13.3
मार्च	52.4	69	26.2	9.1	17.5
अप्रैल	21.2	53	32.0	13.3	22.7
मई	54.2	49	35.3	16.8	25.4
जून	230.2	65	**34.4**	**29.4**	**27.1**
जुलाई	**630.7**	86	30.5	22.6	25.1
अगस्त	627.4	89	29.7	22.3	25.3
सितम्बर	261.4	83	29.8	19.7	24.2
अक्टूबर	32.0	74	28.5	13.3	20.5
नवम्बर	10.9	82	24.8	7.6	15.7
दिसम्बर	2.8	89	21.9	4.0	12.0
औसतन	**168.8**	**76**	**27.9**	**13.9**	**20.0**

❖ प्रशासनिक वर्णन

देहरादून वर्ष 1871 में अलग जिले के रूप में वर्ष 1968 तक मेरठ प्रभाग में प्रशासित हुआ, जिसके बाद इसे गढ़वाल प्रभाग में शामिल किया गया। आज देहरादून जनपद में 01 नगर निगम, 03 नगर पालिका परिषद, 02 नगर पंचायत, 04 छावनी क्षेत्र, 01 औद्योगिक कस्बा, 11 जनगणना शहर, 07 तहसील, 06 विकासखण्ड, 36 न्याय पंचायत और 402 ग्राम पंचायत सम्मिलित हैं। जिनका विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

	नगर निगम	**नगर पालिका परिषद**	**नगर पंचायत**	**छावनी क्षेत्र**	**ओद्योगिक कस्बा**
देहरादून जनपद का प्रशासनिक ढ़ांचा	देहरादून	विकासनगर, मसूरी, ऋषिकेश	हरबर्टपुर, डोईवाला	चकराता कैंट, लंढ़ौर कैंट, देहरादून कैंट, क्लेमेंटाउन कैंट	बीरभद्र
संख्या	**1**	**3**	**2**	**4**	**1**

	जनगणना शहर	**तहसील**	**विकासखण्ड**	**न्याय पंचायत**	**ग्राम पंचायत**
देहरादून जनपद का प्रशासनिक ढ़ांचा	प्रतीतनगर	देहरादून	रायपुर	3	35
	जीवनगढ़	चकराता	डोईवाला	4	36
	सेन्ट्रल होप टाउन	विकासनगर	सहसपुर	6	50
	नत्थनपुर	कालसी	विकासनगर	5	53
	मेहूवाला मॉफी	त्यूनी	चकराता	9	116

	नत्थुवाला	ऋषिकेश	कालसी	9	111
	ऋषिकेश	डोईवाला	NA		
	गुमानीवाला	NA			
	खरक माफी				
	हरीपुर कलां				
	एफ.आर.आई. एवं कालेज एरिया				
संख्या	**11**	**7**	**6**	**36**	**401**

सांख्यिकी विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि दशकीय जनसंख्या वर्ष 2001 से वर्ष 2011 के मध्य कुल 12 ग्राम गैर आबाद होते हैं, साथ ही 90 राजस्व ग्राम नगर क्षेत्र में सम्मिलित हुए, जो कि जनपद से हो रहे पलायन एवं छोटे कस्बों का बड़े कस्बों में बदलने की पुष्टि करते हैं। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं में दर्शाया गया ळें

जनपद में जनसंख्या 2011 एवं उसके बाद आधार भूत आंकडें सर्वेक्षण वर्ष 2019–20 के अनुसार ग्रामों का विकासखण्डवार विवरण

विकासखण्ड	आबाद ग्रामों की संख्या			गैर–आबाद ग्रामों की संख्या	कुल ग्रामों की संख्या	नवसृजित राजस्व ग्रामों की संख्या	2011 की जनगणना के बाद नगर क्षेत्र में स्थानान्तरित की संख्या
	वर्ष 2011	वर्ष 2020	बदलाव	वर्ष 2020	वर्ष 2020		
कालसी	203	203	0	1	204	0	0
चकराता	154	156	2	0	156	2	0
सहसपुर	103	88	-15	***5***	93	1	19
विकासनगर	67	67	0	***2***	69	2	2
डोईवाला	75	51	-24	1	52	0	24
रायपुर	110	70	-40	0	70	3	45
समस्त विकासखण्ड	**712**	**635**	**-77**	**9**	**644**	**8**	**90**
वन क्षेत्र	19	19	0	3	22	0	0
योग जनपद	**731**	**654**	**-77**	**12**	**666**	**8**	**90**

विकासखण्डवार नवसृजित ग्राम एवं नगर क्षेत्र में सम्मिलित राजस्व ग्रामों का विवरण			
क्र0 सं0	विकासखण्ड का नाम	नवसृजित राजस्व ग्राम का नाम	नगर निगम/नगर पालिका में सम्मिलित राजस्व ग्राम का नाम
		राजस्व ग्राम का नाम	राजस्व ग्राम का नाम
1	चकराता	1–मानवा, 2–बाणाधार	–
2	विकासनगर	1–चीलियो, 2–बाढ़वाला	1–रसूलपुर, 2–बाबूगढ़
3	सहसपुर	1–भुड्डी	1–आर्केडिया,2–बकराल गांव, 3–डोम गांव, 4–जौहरी, 5– कुठाल गांव, 6–मालसी, 7–मिट्टी भेटी, 8–विजयपुर गोपीवाला, 9–विजयपुर हाथीबड़कला, 10–खाला गांव, 11–भण्डार गांव, 12–मक्कावाला, 13–दानियों का डाण्डा, 14– किरसाली गांव, 15–सिनौला, 16–डूमल गांव, 17–गोपीवाला, 18–शाहपुर संतौर, 19–रान्धरवाला
4	रायपुर	1–नेहरू ग्राम, 2–गढ़बुरांशखण्डा 3–चलचला	1–खुरांवा, 2–कुरांवा, 3–नांगल हटनाला, 4–मरोठा, 5–किरसाली, 6–कुल्हान करनपुर, 7–कुल्हान मान सिंह, 8–कालागांव, 9–भण्डारीवाला, 10–गुजरमी, 11–टिब्बा नालापानी, 12–लाडपुर, 13–नेहरूग्राम, 14–ननूरखेड़ा, 15–सौंधीवाला, 16–आमवाला, 17–हटवाला गांव, 18–आमवाला करनपुर, 19–आमवाला तरला, 20–सुन्दरवाला, 21–आशारोड़ी, 22–पित्थूवाला, 23–चन्द्रबनी खालसा, 24–चन्द्रबनी ग्रान्ट, 25–हरवंशवाला, 26–हरभजनवाला, 27–मोहब्बेवाला, 28–सेवलाकला, 29–सेवलाखुर्द, 30–तरला नांगल, 31–गुजराड़ा मानसिंह, 32–जगतखाला, 33–डाण्डा खुदानेवाला, 34–डाण्डा धोरण, 35–डाण्डा लखौण्ड, 36–डांडा नूरीवाला, 37–नवादा, 38–हरिपुर ग्रामीण, 39–बंजारावाला, 40–बद्रीपुर, 41–मोथरोवाला, 42–सिंधोवाला धोरन, 43–चक बंजारेवाला, 44–आमवाला उपराला, 45–चन्द्रबदनी
5	डोईवाला	–	1–चकतुनवाला, 2–बालावाला, 3–मियांवाला, 4–माजरी माफी, 5–मोहकमपुर खुर्द, 6–मोहकमपुर कला, 7–हर्रावाला, 8–नकरौन्दा, 9–कुंआवाला, 10–लच्छीवाला, 11–मिस्सरवाला कला, 12–मिस्सरवाला खुर्द, 13–घिस्सरपड़ी, 14–हंसुवाला, 15–डैशवाला, 16–कान्हरवाला,17–संगतिवाला खुर्द, 18–भारूवालाग्रांट, 19–अठूरवाला, 20–भानियावाला, 21–जौलीग्रांट, 22–वीरपुर खुर्द, 23–डोईवाला, 24–ऋषिकेश ग्रामीण

❖ भूमि व्यवस्था

वर्ष 2009 से 2019 के मध्य भूमि आवरण में वर्गवार परिवर्तन						
भूमि आवरण की श्रेणी	वर्ष 2009		वर्ष 2019		वर्ष 2009 से 2019 के मध्य बदलाव	
	क्षेत्रफल (वर्ग किमी में)	क्षेत्रफल (%)	क्षेत्रफल (वर्ग किमी में)	क्षेत्रफल (%)	क्षेत्रफल (वर्ग किमी में)	क्षेत्रफल (%)
वनस्पति युक्त	**1431.71**	**46.57%**	**876.15**	**28.50%**	**-555.56**	**-18.07%**
जल निकाय भूमि	**199.81**	**6.50%**	**85.27**	**2.77%**	**-114.54**	**-3.73%**
बंजर भूमि	353.89	11.51%	413.15	13.44%	59.26	1.93%
निर्माण युक्त	385.40	12.54%	564.65	18.37%	179.25	5.83%
कृषि युक्त	703.60	22.89%	1135.19	36.92%	431.59	14.04%
कुल	3074.41	100%	3074.41	100%	0.00	0.00%

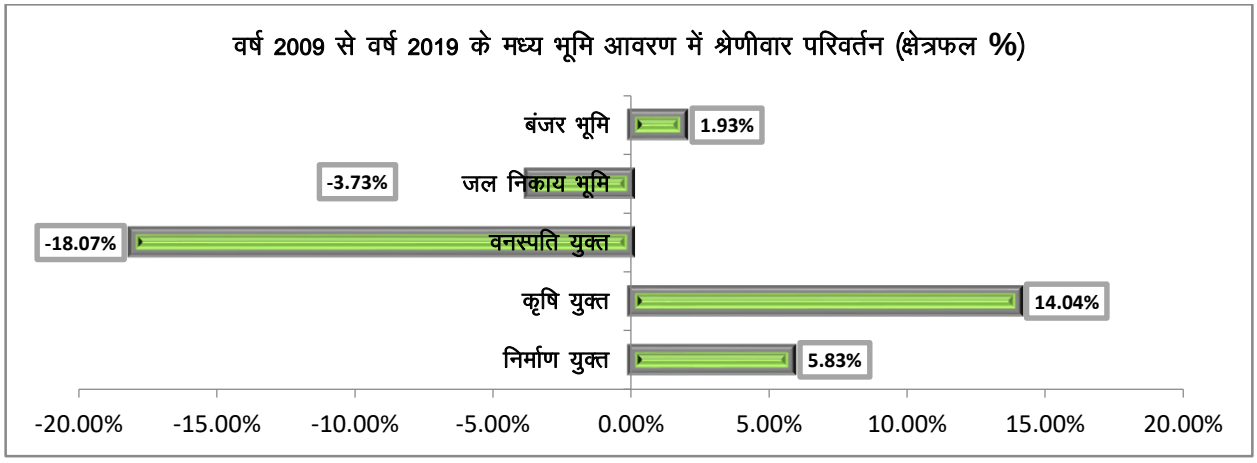

जनपद देहरादून के अन्तर्गत विगत एक दशक अर्थात् वर्ष 2009 से वर्ष 2019 के मध्य भूमि आवरण की श्रेणियों में धनात्मक एवं ऋणात्मक परिवर्तन देखने को मिला, परिवर्तन के आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता हैं कि जहाँ एक ओर वनस्पति वाले आवरण क्षेत्र में 555.56 वर्ग किमी एवं जल विकास के क्षेत्र में 114. 54 वर्ग किमी की गिरावट दर्ज हुई है, वहीं दूसरी ओर कृषि क्षेत्रफल में 431.59 वर्ग किमी एवं निर्माण युक्त भूमि में 179.25 वर्ग किमी की वृद्धि होती है, जो नगरीय चकाचौंध के नकारात्मक एवं सकारात्मक विकास को दर्शाता है। जनपद में वनस्पति एवं जल निकाय की भूमि का दोहन यदि इसी गति से बढ़ता रहा तो जनपद को शीघ्र ही पेयजल और स्वच्छ वातावरण की समस्या का सामना करने के लिए भी तैयार होना पड़ेगा। आंकड़ों का विवरण उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

❖ जनसांख्यिकीय विवरण

जनपद देहरादून हेतु वर्ष 1901 से वर्ष 2011 के मध्य दशकीय जनगणना आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है, कि वर्ष 1941 से वर्ष 2011 के मध्य दशकीय जनगणनाओं हेतु जनसंख्या वृद्धि दर में लगातार विचलन देखा जा सकता है अर्थात जनसंख्या वृद्धि दर में हो रहा विचलन, पलायन के उतार–चढ़ाव की पुष्टि करता है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

वर्ष 1901 की स्थिति से वर्ष 2011 के मध्य जनसंख्या में दशकीय बदलाव						
जनपद	जनगणना वर्ष	जनसंख्या	पूर्ववर्ती जनगणना के बाद जनसंख्या में बदलाव		पुरूष	महिला
			शुद्व बदलाव	प्रतिशत		
देहरादून	1901	177465	NA	NA	102374	75091
	1911	204534	27069	+15.25	120578	83956
	1921	211877	7343	+03.59	127971	83906
	1931	229850	17973	+08.48	137348	92502
	1941	265786	35936	***+15.63***	161671	104115
	1951	361689	95903	***+36.08***	210860	150829
	1961	429014	67325	***+18.61***	242987	186027
	1971	577306	148292	***+34.57***	326108	251198
	1981	761668	184362	***+31.93***	420465	341203
	1991	1025679	264011	***+34.66***	556432	469247
	2001	1282143	256464	***+25.00***	679583	602560
	2011	1696694	414551	***+32.33***	892199	804495

जनगणना वर्ष 2001 से वर्ष 2011 के मध्य विकासखण्डवार जनसंख्या वृद्धि दर हेतु आंकड़ों से ज्ञात होता है कि जनपद के सुदूर पहाड़ी क्षेत्र में स्थित विकासखण्ड कालसी में वृद्धि सबसे कम तथा विकासखण्ड सहसपुर और विकासनगर में सबसे अधिक वृद्धि होती है। अन्य विकासखण्ड़ों में भी दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर अपेक्षाकृत कम ही रहती है जबकि जनपद के वन बस्तियों में अधिक मात्रा में जनसंख्या वृद्धि हुई।

विकासखण्डवारतथा क्षेत्रवार दशकीय जनगणना हेतु जनसंख्या वृद्धि दर का तुलनात्मक विवरण				
विकासखण्ड	विकासखण्डवार एवं क्षेत्रवार जनसंख्या वितरण			
	वर्ष 2001	वर्ष 2011	बदलाव	बदलाव प्रतिशत
कालसी	55127	58228	3101	05.63%
डोईवाला	151236	168986	17750	11.74%
रायपुर	88628	99844	11216	12.66%
चकराता	59466	67258	7792	13.10%
विकासनगर	124246	153793	29547	23.78%

सहसपुर	120048	167501	47453	39.53%
योग ग्रामीण	**598751**	**715610**	116859	19.52%
नगरीय क्षेत्र	678742	941941	263199	38.78%
योग जनपद	**1282143**	**1696694**	414551	32.33%

जनगणना 2011 हेतु आयु वर्गावार जनसंख्या के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जनपद के अन्तर्गत लिंगानुपात में ज्यादा अन्तर देखने को नहीं मिलता है। जनपद की कुल जनसंख्या में नगरीय क्षेत्र की जनसंख्या का सभी आयु वर्ग में ग्रामीण क्षेत्र की जनसंख्या के सापेक्ष अधिक योगदान रहता है अर्थात ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर पलायन हो रहा है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

जनपद में आयु वर्गानुसार जनसंख्या (जनगणना–2011)					
आयु वर्ग	कुल		☚योग☛	ग्रामीण क्षेत्र की जनसंख्या का योगदान	नगरीय क्षेत्र की जनसंख्या का योगदान
	पुरूष	स्त्रियां			
सभी आयुवर्ग का योग	**53%**	**47%**	**100%**	**44%**	**56%**
00-04	53%	47%	**100%**	50%	50%
5.09	54%	46%	**100%**	49%	51%
10-14	54%	46%	**100%**	48%	52%
15-19	55%	45%	**100%**	46%	54%
शून्य से 19 आयुवर्ग का योग	**54%**	**46%**	**100%**	**48%**	**52%**
20-24	52%	48%	**100%**	44%	56%
25-29	51%	49%	**100%**	42%	58%
30-34	52%	48%	**100%**	42%	58%
35-39	51%	49%	**100%**	42%	58%
40-44	52%	48%	**100%**	40%	60%
20 से 44 आयुवर्ग का योग	**52%**	**48%**	**100%**	**42%**	**58%**
45-49	53%	47%	**100%**	40%	60%
50-54	53%	47%	**100%**	40%	60%
55-59	51%	49%	**100%**	41%	59%
45 से 59 आयुवर्ग का योग	**52%**	**48%**	**100%**	**40%**	**60%**
60-64	52%	48%	**100%**	47%	53%
65-69	54%	46%	**100%**	44%	56%
70-74	54%	46%	**100%**	44%	56%
75-79	52%	48%	**100%**	41%	59%
>=80	48%	52%	**100%**	43%	57%
आयु नही बतायी गयी	57%	43%	**100%**	37%	63%
60 से 80 से ऊपर आयुवर्ग का योग	**53%**	**47%**	**100%**	**44%**	**56%**

❖ आर्थिकी का वितरण

जनपद की अर्थव्यवस्था हेतु वर्ष 2011–12 से वर्ष 2016–17 के लिए GDDP हेतु उपलब्ध आंकड़ों से स्पष्ट होता है, कि उक्त अवधि के मध्य जनपद की GDDP एवं प्रति व्यक्ति आय में क्रमशः 1.2% तथा 2.0% की गिरावट हुई है, जो जनपद के सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु उचित नहीं है। आंकड़ों को निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

सकल जिला घरेलू उत्पाद हेतु वर्षवार विवरण			
वर्ष	GDDP (लाख में)	पूर्ववर्ती GDDPके बाद से बदलाव	
		शुद्ध बदलाव	बदलाव प्रतिशत
2011–12	2221193	NA	NA
2012–13	2521800	300607	13.53%
2013–14	2863184	341384	13.54%
2014–15	3232306	369122	12.89%
2015–16	3612100	379794	11.75%
2016–17	4057583	445483	12.33%

प्रति व्यक्ति आय का वर्षवार विवरण			
वर्ष	PCI(रूपये में)	पूर्ववर्ती PCI के बाद से बदलाव	
		शुद्ध बदलाव	बदलाव प्रतिशत
2011–12	114020	NA	NA
2012–13	127848	13828	12.13%
2013–14	142718	14870	11.63%
2014–15	159807	17089	11.97%
2015–16	176658	16851	10.54%
2016–17	195925	19267	10.91%

प्राथमिक क्षेत्र :– देहरादून जनपद में कुल 66231 हेक्टेयर भूमि या कुल भौगोलिक क्षेत्र का 18 प्रतिशत से थोड़ा अधिक खेती के अन्तर्गत आती है। 20796 हेक्टेयर भूमि पर गेहूँ प्राथमिक फसल है, जबकि गेहूँ के अलावा, अन्य प्रमुख फसलों में चावल, मक्का, फल, सब्जियाँ और चाय बागान शामिल हैं।

माध्यमिक क्षेत्र :– जिला औद्योगिक केन्द्र के अनुसार 5883 पंजीकृत औद्योगिक इकाइयाँ हैं, जिनकी अनुमानित संख्या 34733 और 4471 दैनिक श्रमिक लघु, मध्यम और बडे उद्योगों में कार्यरत हैं। वर्ष 2011–12 तक उद्योगों द्वारा कुल निवेश 57887.25 लाख था। कुछ प्रमुख सूक्ष्म, लघु और कारीगर इकाइयाँ निम्नवत हैं :–

औद्योगिक उद्यम	इकाइयाँ
1. खाद्य उत्पाद एवं पेय पदार्थ	105
2. परिधान और ड्रेसिंग	269
3. रासायनिक उत्पाद	84
4. लकड़ी एवं लकड़ी के उत्पाद	43
5. रबर और प्लास्टिक	56
6. निर्मित धातु	53
7. इलेक्ट्रॉनिक मशीनरी एवं उपकरण	67
8. कपड़ा उद्योग	19
9. कम्प्यूटर से सम्बन्धित गतिविधियाँ	129
10. मरम्मत और रखरखाव	81
योग	**906**

तृतीयक क्षेत्र :– राज्य की राजधानी और राज्य का सबसे बड़ा शहर होने के अलावा, तृतीयक क्षेत्र की अधिकांश गतिविधियाँ देहरादून में केन्द्रित हैं। जिले के मुख्यालय में हर साल बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। देहरादून में कई पर्यटन स्थल हैं जैसे मसूरी, गुरूराम राय दरबार साहिब, सहस्रधारा, गुच्चूपानी (लुटेरों की गुफा), डाकपत्थर, टपकेश्वर महादेव मन्दिर, मालसी डियर पार्क, आदि।

जनपद में जनसंख्या का आर्थिक वर्गीकरण के लिए विगत दशकीय जनगणना के प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जनपद में वर्ष 1991 की जनगणना से वर्ष 2011 की जनगणना तक मुख्य कर्मकर में कृषकों की संख्या में 10.3% तथा कृषि श्रमिकों की संख्या में 5.3% कमी आई। आंकड़ों से यह भी स्पष्ट होता है कि जहाँ मैदानी विकासखण्डों में कृषकों एवं कृषि श्रमिकों जैसे कर्मकरों की संख्या कम है वहीं पारिवारिक उद्योग एवं अन्य कर्मकरों की संख्या अधिक है जबकि पहाड़ी विकासखण्डों में इसके उलट स्थिति है अर्थात पर्वतीय क्षेत्रों से हो रहे पलायन को रोका जा सकता है क्योंकि इन स्थानों पर रोजगार की अधिक सम्भावनाएं हैं, जिसके लिए सरकार को गाँवों में भी शहर जैसी सुविधाएं उपलब्ध करानी होगी। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

जनपद में विकासखण्डवार जनसंख्या का आर्थिक वर्गीकरण							
वर्ष/विकासखण्ड	मुख्य कर्मकर					सीमान्त कर्मकर	कुल कर्मकर
	कृषक	कृषि श्रमिक	पारिवारिक उद्योग	अन्य	कुल		
1991	20.7%	8.8%	0.8%	62.0%	92.3%	7.7%	100%
2001	15.4%	4.4%	1.9%	62.3%	84.0%	16.0%	100%
2011	***10.4%***	***3.5%***	**3.1%**	**66.8%**	83.8%	16.2%	100%
विकासखण्डवार 2011							
सहसपुर	9.2%	6.3%	3.2%	60.3%	78.9%	21.1%	100%
रायपुर	12.3%	2.2%	3.0%	64.6%	82.1%	17.9%	100%

विकासनगर	14.8%	13.2%	1.8%	48.5%	78.3%	21.7%	100%
डोईवाला	10.6%	5.6%	3.8%	55.7%	75.7%	24.3%	100%
कालसी	56.7%	3.0%	1.3%	15.6%	76.7%	23.3%	100%
चकराता	57.1%	5.6%	1.1%	11.0%	74.8%	25.2%	100%
समस्त विकासखण्ड	**21.9%**	**6.4%**	**2.6%**	**46.8%**	**77.7%**	**22.3%**	**100%**
वनवस्तियॉ	3.9%	1.5%	21.9%	44.3%	71.6%	28.4%	100%
ग्रामीण क्षेत्र	21.8%	6.3%	2.7%	46.8%	77.6%	22.4%	100%
नगरीय	0.8%	1.1%	3.4%	83.6%	88.9%	11.1%	100%
योग जनपद	**10.4%**	**3.5%**	**3.1%**	**66.8%**	**83.8%**	**16.2%**	**100%**

जिला योजना में आंवटित धनराशि :–जनपद की जिला योजनान्तर्गत आंवटित हो रही धनराशि का उपयोग मात्र वर्ष 2006–07 से वर्ष 2008–09 में ही 100 प्रतिशत धनराशि का ही व्यय किया जाता है, जबकि अन्य उल्लिखित वर्षों में संतोषप्रद परिणाम नहीं रहा है। आंकड़ों का वर्षवार विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

जिला योजनान्तर्गत कुल परिव्यय धनराषि के सापेक्ष व्यय धनराषि का वर्षवार विवरण				
क्र0सं0	वर्ष	परिव्यय	व्यय	परिव्यय के सापेक्ष व्यय का प्रतिशत
1	2000-2001	280.69	186.93	66.60%
2	2001-2002	228.07	227.43	99.72%
3	2002-2003	256.55	160.09	62.40%
4	2003-2004	256.55	186.82	72.82%
5	2004-2005	233.2	194.9	83.58%
6	2005-2006	3618	3256.07	90.00%
7	2006-2007	3980	4382.57	110.11%
8	2007-2008	270.19	310.89	115.06%
9	2008-2009	333.98	334.95	100.29%
10	2009-2010	4974	3532.65	71.02%
11	2010-2011	4974	4465.07	89.77%
12	2011-2012	4974	4365.5	87.77%
13	2012-2013	7461	3852.92	51.64%
14	2013-2014	7461	5081.38	68.11%
15	2014-2015	7461	6114.15	81.95%
16	2015-2016	6963.6	6045.11	86.81%
17	2016-2017	4917.39	3605.71	73.33%
18	2017-2018	4974	4151.48	83.46%

जिला योजनान्तर्गत वर्ष 2016–17 में आंवटित धनराशि के सापेक्ष व्यय धनराशि के आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

जिला योजनान्तर्गत वर्ष 2016–17 में आंवटित धनराशि के सापेक्ष व्यय धनराशि का विवरण					
क्र0सं0	विभाग / सैक्टर	अनुमोदित परिव्यय	अवमुक्त धनराशि	क्रमिक व्यय	अवमुक्त के सापेक्ष व्यय का प्रतिशतम
1	वन विभाग	112.93	60.22	0.00	0%
2	महिला कल्याण	0.46	0.00	0.00	0%
3	पंचायती राज	332.48	354.68	0.00	0%
4	वैकल्पिक ऊर्जा	129.87	71.56	8.00	11.18%
5	पर्यटन	113.11	62.32	14.09	22.61%
6	राजकीय सिंचाई (नहरें)	1624.08	919.73	451.68	49.11%
7	लघु सिंचाई	161.87	149.35	82.88	55.49%
8	सड़क एवं पुल	1272.19	541.64	445.33	82.22%
9	पेयजल निगम	1038.95	652.40	545.34	83.59%
10	सूचना विभाग	15.42	8.35	8.28	99.16%
11	कृषि	73.40	30.03	29.94	99.70%
12	रेशम	42.29	21.52	21.46	99.72%
13	एलोपैथिक चिकित्सा	306.00	188.57	188.37	99.89%
14	होम्योपेथिक चिकित्सा	46.67	46.67	46.67	100%
15	जल संस्थान	854.90	495.54	495.54	100%
16	नलकूप खण्ड (सिंचाइ)	684.07	346.85	346.85	100%
17	आयुर्वेदिक चिकित्सा	74.90	44.37	44.37	100%
18	ग्राम्य विकास सामुदायिक विकास	203.46	135.62	135.62	100%
19	माध्यमिक शिक्षा	225.86	124.00	124.00	100%
20	अनुसूचित जाति कल्याण	15.00	6.00	6.00	100%
21	पिछड़ी जाति कल्याण	12.10	5.32	5.32	100%
22	समाज कल्याण (वृद्धावस्था पेंशन)	9.98	4.72	4.72	100%
23	सैनिक कल्याण	8.71	4.00	4.00	100%
24	उद्यान	32.18	17.72	17.72	100%
25	भेषज विकास	4.68	2.54	2.54	100%
26	पशुपालन	233.71	143.38	143.38	100%
27	मत्स्य	2.00	1.00	1.00	100%
28	दुग्ध विकास	46.22	25.46	25.46	100%
29	सहकारिता	59.85	32.57	32.57	100%
30	गन्ना	27.10	15.07	15.07	100%

31	ग्रामीण लघु उद्योग	8.47	6.66	6.66	100%
32	खादी ग्रामोद्योग	18.63	15.22	15.22	100%
33	अर्थ एवं संख्या	11.00	5.54	5.54	100%
34	खेलकूद	233.76	138.80	138.80	100%
35	प्रादेशिक विकास दल	377.35	218.31	218.31	100%
36	सेवायोजना	42.35	21.66	21.66	100%
महायोग		**8456.00**	**4917.39**	**3605.71**	**73%**

जिला योजनान्तर्गत वर्ष 2017–18 में आंवटित धनराशि के सापेक्ष व्यय धनराशि का विवरण					
क्र0सं0	विभाग / सैक्टर	अनुमोदित परिव्यय	अवमुक्त धनराशि	क्रमिक व्यय	अवमुक्त के सापेक्ष व्यय का प्रतिशतम
1	सैनिक कल्याण	3.00	2.00	0.00	0%
2	लोक निर्माण विभाग	1304.17	922.38	361.05	39.14%
3	वन विभाग	65.33	46.52	32.18	69.17%
4	होम्योपैथिक चिकित्सा	46.67	33.24	26.53	79.81%
5	राजकीय सिंचाई नहरें	1374.22	977.94	786.15	80.39%
6	एलोपैथिक चिकित्सा	232.92	165.87	137.40	82.84%
7	सेवायोजना	22.40	14.95	14.04	93.91%
8	नलकूप खण्ड	565.35	402.61	387.71	96.30%
9	पंचायती राज	52.00	43.36	41.86	96.54%
10	कृषि	60.66	43.20	43.15	99.88%
11	रेशम	60.00	42.73	42.71	99.95%
12	पशुपालन	221.42	157.68	157.67	99.99%
13	पेयजल निगम	858.64	611.48	611.48	100%
14	जल संस्थान	653.32	465.26	465.26	100%
15	वैकल्पिक उर्जा	79.00	56.26	56.26	100%
16	लघु सिंचाई	133.78	95.23	95.23	100%
17	आयुर्वेदिक चिकित्सा	53.78	38.14	38.14	100%
18	ग्राम्य विकास सामुदायिक विकास	153.96	109.64	109.64	100%
19	माध्यमिक शिक्षा	186.66	132.93	132.93	100%
20	समाज कल्याण	9.00	6.41	6.41	100%
21	उद्यान	26.59	18.94	18.94	100%
22	भेषज विकास	3.87	2.76	2.76	100%
23	मत्स्य	2.00	1.76	1.76	100%
24	दुग्ध विकास	53.20	37.89	37.89	100%

25	सहकारिता	49.46	35.26	35.26	100%
26	गन्ना	22.40	15.95	15.95	100%
27	लधु उद्योग	10.00	7.12	7.12	100%
28	खादी ग्रामोद्योग	20.00	14.24	14.24	100%
29	पर्यटन	93.48	66.56	66.56	100%
30	अर्थ एवं संख्या	9.00	8.58	8.58	100%
31	खेलकूद	165.00	117.50	117.50	100%
32	युवा कल्याण	370.00	263.49	263.49	100%
33	सूचना विभाग	11.24	7.57	7.57	100%
34	महिला कल्याण निराश्रित विधवा भरण पोषण सहित	12.00	8.55	8.55	100%
महायोग		**6984.52**	**4974.00**	**4151.48**	**83.46%**

उपरोक्त आंकड़ों के अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि वर्ष 2016–17 में जिला योजनान्तर्गत आंवटित धनराशि को वन विभाग, महिला कल्याण, पंचायती राज, वैकल्पिक ऊर्जा व पर्यटन विभाग द्वारा न्यूनतम रूप से व्यय किया गया, जबकि सिचांई, लोक निर्माण, होम्योपैथिक और ऐलोपैथिक चिकित्सा तथा पेयजल निगम द्वारा आंवटित धनराशि का अपेक्षाकृत कम ही व्यय किया गया। आधारभूत आवश्यकताओं तथा रोजगार की अपार सम्भावनाओं वाले इन क्षेत्रों में अपेक्षा से कम व्यय किया जाना जनपद हित में नहीं है। योजनाओं एवं कार्यक्रमों को ससमय पूर्ण किये जाने का प्राविधान यदि भविष्य में किया जाय तो यह कदम जनपद की सामाजिक–आर्थिक विकास को सुदृढ़ करने और हो रहे पलायन पर अंकुश लगाने में सहायक सिद्ध होगा।

❖ साक्षरता

साक्षरता के दृष्टिकोण से सबसे कम सारक्षता विकासखण्ड चकराता एवं कालसी में प्रलक्षित होती है जबकि सबसे अधिक विकासखण्ड रायपुर में 79.23% की दर से देखी जा सकती है। जनपद में साक्षरता हेतु प्राप्त आंकड़ों से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा नगरीय क्षेत्रों में साक्षरता का प्रतिशत अधिक है। जनपद में महिलाओं का साक्षरता प्रतिशत पुरूषों की अपेक्षा कम ही है चाहे ग्रामीण क्षेत्र हो या नगरीय क्षेत्र। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

जनपद में दशकवार एवं विकासखण्डवार साक्षर व्यक्ति तथा साक्षरता का प्रतिशत						
वर्ष / विकासखण्ड	**साक्षर व्यक्ति**			**साक्षरता का प्रतिशत**		
	पुरूष	**स्त्री**	**कुल**	**पुरूष**	**स्त्री**	**कुल**
1991	367114	230274	597388	77.80	59.11	69.35
2001	505379	371062	876441	85.87	71.20	78.98
2011	702216	557290	1259506	89.40	78.53	84.25
विकासखण्डवार 2011						
चकराता	20675	13765	34440	70.79	51.58	61.61
कालसी	20170	13883	34053	77.50	58.26	68.30

विकासनगर	56656	42327	98983	81.83	67.19	74.86
सहसपुर	63441	50651	114092	88.38	76.76	82.81
डोईवाला	84162	66474	150636	91.01	77.02	84.25
रायपुर	46137	37577	83714	92.91	80.71	86.67
समस्त विकासखण्ड	**291241**	**224677**	**515918**	**85.97**	**71.93**	**79.23**
वन	1141	777	1918	59.09	44.66	52.25
नगरीय	**409834**	**331836**	**741670**	**92.14**	**83.90**	**83.31**
योग जनपद	**702216**	**557290**	**1259506**	**89.40**	**78.53**	**84.25**

❖ प्रक्रिया और पद्धति

यह रिपोर्ट जनपद देहरादून के सामाजिक–आर्थिक मानकों का, विशेषतः उन कारणों के संदर्भ में जो पलायन पर असर डालती है का विस्तार से जांच करती है। माध्यमिक जानकारी का आधार जनपद के रेखीय विभागों के जनपदस्तरीय अधिकारियों की प्रकाशित और अप्रकाशित सूचनाएं हैं। प्राथमिक जानकारी, आयोग की टीम, खण्ड विकास अधिकारियों और ग्राम विकास अधिकारियों के द्वारा क्षेत्र भ्रमण से संकलित की गई सूचनाओं पर आधारित है। विकास खण्डवार आंकडे एकत्रित कर विश्लेषण किया गया है।

इस रिपोर्ट में जनपद की ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की लिये सिफारिशें प्रस्तुत की गयी हैं। जिससे पलायन को कम किया जा सके। इससे स्थानीय सामाजिक–आर्थिक अर्थव्यवस्था को भी बढावा मिल सकता है एवं पलायन पर अंकुश भी लगेगा।

अध्याय II

सामाजिक–आर्थिक आंकड़ें

जनपद देहरादून द्वारा जहाँ राज्य के भौगोलिक क्षेत्रफल में 5.8% के माध्यम से 8वें स्थान पर है, किन्तु वहीं राज्य में जनसंख्या के आंकड़ों के लिए दूसरे स्थान पर रहते हुए 16.8% की दर से अपनी भागीदारी की जाती है। देहरादून जनपद के ग्रामीण और नगरीय जनसंख्या के आंकड़ों को देखे तो स्पष्ट होता है कि जहाँ 44% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों तथा 56% जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में रहती है, वहीं राज्य स्तर पर देहरादून जनपद द्वारा लगभग 31% नगरीय जनसंख्या द्वारा योगदान किया जा रहा है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में मात्र 11% जनसंख्या से हिस्सेदारी की जा रही है। अर्थात जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन होने की पुष्टि होती है, क्योंकि जनपद देहरादून का मैदानी क्षेत्र प्रत्येक वर्ग के लिए आर्कषण का केन्द्र बना हुआ है। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

देहरादून एक नजर में				
मद	इकाई	वर्ष 2011 हेतु जनपद विवरण	वर्ष 2011 हेतु राज्य विवरण	राज्य में योगदान प्रतिशत
भौगोलिक क्षेत्रफल	वर्ग किमी0	3088	53483	5.8%
जनसंख्या				
पुरूष	संख्या	892.20	5137.77	17.4%
स्त्री	संख्या	804.50	4948.52	16.3%
योग	संख्या	1696.69	10086.29	16.8%
ग्रामीण	***संख्या***	***754.75***	***7036.95***	***10.7%***
नगरीय	***संख्या***	***941.94***	***3049.34***	***30.9%***
अनुसूचित जाति	संख्या	228.90	291.49	78.5%
अनुसूचित जनजाति	संख्या	111.66	1892.19	5.9%
साक्षर व्यक्तियों की संख्या				
कुल	संख्या	1259.51	6880.95	18.3%
पुरूष	संख्या	702.22	3863.71	18.2%
स्त्री	संख्या	557.29	3017.25	18.5%

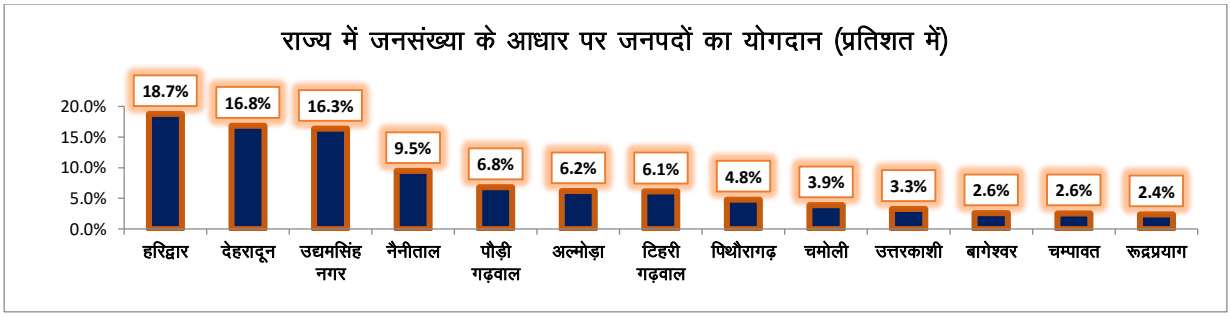

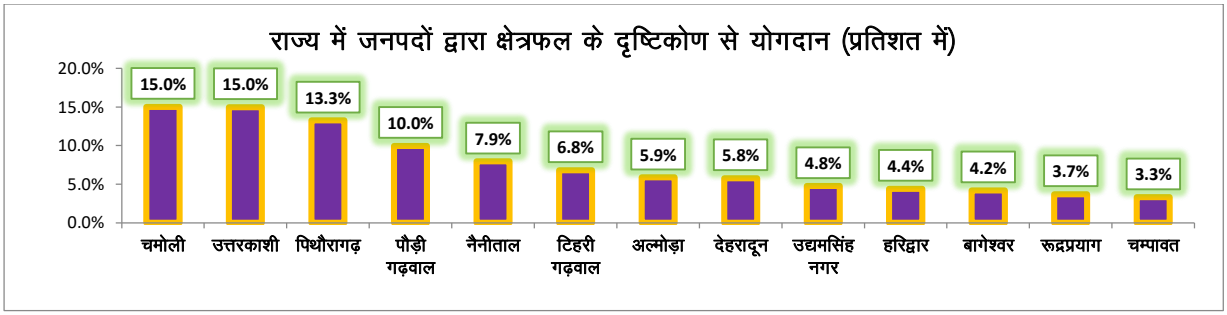

जनपद में वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य आधारभूत बदलाव एक दृष्टि में

क्र0 सं0	मद	इकाई	वर्ष 2016.17	वर्ष 2019.20	दोनों वित्तीय वर्षों के मध्य बदलाव
निर्वाचन क्षेत्रों की संख्या					
1	विकासखण्ड	संख्या	6	6	0
2	न्याय पंचायत	संख्या	40	36	***-4***
3	ग्राम पंचायत	संख्या	459	401	***-58***
ग्रामों की संख्या					
1	आबाद ग्रामों की संख्या	संख्या	731	635	***-96***
2	गैर आबाद ग्रामों की संख्या	संख्या	18	9	***-9***
3	वन ग्राम	संख्या	22	0	***-22***
4	कुल ग्राम	संख्या	749	666	***-83***
5	नगर एवं नगर समूह	संख्या	22	16	***-6***
6	नगर निगम	संख्या	1	2	1
7	नगर पालिका परिषद	संख्या	5	4	***-1***
8	छावनी क्षेत्र	संख्या	4	4	0
9	नगर पंचायत	संख्या	0	0	0
10	सेन्सस टाउन	संख्या	11	5	***-6***

11	रेलवे स्टेशन (हाल्ट सहित)	संख्या	8	8	0
रेलवे लाइन की लम्बाई					
1	बडी लाइन	कि0मी0	64.5	64.5	0
कृषि					
1	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	हे0 में	39	35.36	***-3.64***
2	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल	हे0 में	18	16.47	***-1.53***
3	शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल	हे0 में	21	17.20	***-3.80***
4	सकल सिंचित क्षेत्रफल	हे0 में	30	26.93	***-3.07***

षष्टम आर्थिक गणना 2012				
क्र0सं0	**मद**	**ग्रामीण**	**नगरीय**	**योग**
1	**उद्यम**			
	अ. कृषि उद्यम			
	• स्वकार्य उद्यम	1185	365	1550
	• कम से कम एक कार्यरत वैतनिक व्यक्ति सहित उद्यम	153	58	211
	ब. गैर–कृषि उद्यम			
	• स्वकार्य उद्यम	13815	24296	38111
	• कम से कम एक कार्यरत वैतनिक व्यक्ति सहित उद्यम	6231	15876	22107
	स. कुल उद्यम			
	• स्वकार्य उद्यम	15000	24661	39661
	• कम से कम एक कार्यरत वैतनिक व्यक्ति सहित उद्यम	6384	15934	22318
2	**उद्यमों में कार्यरत व्यक्ति**			
	अ. कृषि उद्यम			
	• वैतनिक पुरूष	537	163	700
	• वैतनिक महिला	94	15	109
	• अवैतनिक पुरूष	1226	349	1575
	• अवैतनिक महिला	936	258	1194

	• कुल पुरूष	1763	512	2275
	• कुल महिला	1030	273	1303
	ब. गैर कृषि उद्यम			
	• वैतनिक पुरूष	25529	62752	88281
	• वैतनिक महिला	12192	17698	29890
	• अवैतनिक पुरूष	17983	41085	59068
	• अवैतनिक महिला	2720	5220	7940
	• कुल पुरूष	43512	103837	147349
	• कुल महिला	14912	22918	37830
3	**8 या अधिक कार्यरत व्यक्तियों वाले उद्यम**			
	• उद्यम	854	1783	2637
	• कार्यरत व्यक्ति	26686	52143	78829
4	**हस्तषिल्प/हस्तकरघा उद्यम**			
	• उद्यम	641	416	1057
	• कार्यरत व्यक्ति	1489	1344	2833

जनपद में जनगणना के अनुसार प्रतिदशक आबाद ग्रामों की संख्या, जनसंख्या तथा प्रतिदशक प्रतिशत अन्तर (1901–2011)

जनगणना वर्ष	आबाद ग्रामों की संख्या	जनसंख्या			प्रतिदशक प्रतिशत अन्तर		
		कुल	ग्रामीण	नगरीय	कुल	ग्रामीण	नगरीय
1901	416	177465	137999	39466	NA	NA	NA
1911	423	204534	148880	55654	15.25	7.88	41.02
1921	466	211877	145567	66310	3.59	2.23	19.15
1931	424	229850	165458	64392	8.48	13.66	2.89
1941	835	265786	172057	93729	15.63	3.99	45.56
1951	804	361689	190090	171599	39.08	10.48	83.08
1961	761	429014	231179	197835	18.61	21.62	15.29
1971	767	577306	305529	271777	34.54	32.16	37.38
1981	743	761668	389527	372141	31.93	27.49	36.93
1991	746	1025679	510199	515480	34.66	30.98	38.52

2001	738	1282143	603401	678742	25.00	18.27	31.67
2011	731	1696694	754753	941941	32.33	25.08	38.78

जनपद में विकासखण्डवार मुख्य फसलों के अर्न्तगत क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)						
वर्ष / विकासखण्ड	चावल खरीफ		गेहूँ		जौ	
	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित
2016–17	10185	9548	17469	10859	530	21
2017–18	9292	8904	16849	11523	577	6
2018–19	8631	8409	14799	10607	583	1
विकासखण्डवार 2018–19						
चकराता	1216	1179	1350	268	221	0
कालसी	457	427	1583	185	234	0
विकासनगर	2024	1968	3398	2419	13	0
सहसपुर	1573	1579	3207	2139	14	0
रायपुर	1334	1326	1764	1749	69	1
डोईवाला	2027	1930	3497	3847	32	0
जनपद	**8631**	**8409**	**14799**	**10607**	**583**	**1**

वर्ष / विकासखण्ड	मक्का खरीफ		कुल मक्का		मडुंवा	
	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित
2016–17	7289	11	7295	14	1053	1
2017–18	6748	16	6748	16	1169	0
2018–19	6432	25	6433	26	765	2
विकासखण्डवार 2018–19						
चकराता	782	0	782	0	266	0
कालसी	875	2	875	2	203	0
विकासनगर	1590	5	1590	5	77	0
सहसपुर	1670	6	1670	6	58	0
रायपुर	768	7	768	7	91	2
डोईवाला	747	5	748	6	70	0

जनपद	**6432**	**25**	**6433**	**26**	**765**	**2**

वर्ष / विकासखण्ड	सावा खरीफ		राम दाना		कुल धान्य		उर्द खरीफ	
	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित
2016–17	202	0	803	0	37537	20443	590	0
2017–18	254	20	655	0	35544	20469	733	11
2018–19	157	0	423	1	31797	19046	779	3
विकासखण्डवार 2018–19								
चकराता	26	0	96	0	3958	1447	99	0
कालसी	54	0	88	0	3495	614	92	3
विकासनगर	19	0	56	0	7178	4392	214	0
सहसपुर	14	0	64	0	6601	3724	99	0
रायपुर	37	0	72	1	4136	3086	163	0
डोईवाला	7	0	47	0	6429	5783	112	0
जनपद	**157**	**0**	**423**	**1**	**31797**	**19046**	**779**	**3**

वर्ष / विकासखण्ड	मसूर		चना		मटर		अरहर		मोठ	
	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित
2016–17	282	3	21	0	46	4	229	0	1	1
2017–18	324	4	18	0	275	71	306	0	2	0
2018–19	406	10	16	0	396	63	492	0	1	0
विकासखण्डवार 2018–19										
चकराता	57	1	0	0	43	12	100	0	0	0
कालसी	115	1	7	0	76	15	113	0	0	0
विकासनगर	44	1	4	0	75	9	89	0	0	0
सहसपुर	77	4	0	0	60	10	119	0	0	0
रायपुर	42	2	3	0	68	8	26	0	0	0
डोईवाला	71	1	2	0	74	9	45	0	1	0
जनपद	**406**	**10**	**16**	**0**	**396**	**63**	**492**	**0**	**1**	**0**

वर्ष / विकासखण्ड	कुल दालें		कुल खाद्यान		लाही / सरसों	
	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित
2016–17	3197	13	40734	20456	879	619
2017–18	3225	110	38769	20600	812	567
2018–19	4241	98	36032	19144	784	529
विकासखण्डवार 2018–19						
चकराता	832	20	4789	1467	351	240
कालसी	938	24	4432	638	158	110
विकासनगर	754	17	7931	4409	57	38
सहसपुर	636	14	7236	3738	107	71
रायपुर	545	11	4680	3097	23	11
डोईवाला	536	12	6964	5795	88	59
जनपद	**4241**	**98**	**36032**	**19144**	**784**	**529**

वर्ष / विकासखण्ड	कुल तिलहन		गन्ना		आलू		राजमा	
	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित
2016–17	1032	621	4023	4014	670	505	1379	2
2017–18	1266	849	3881	3863	735	490	783	23
2018–19	940	529	3810	3807	534	423	1296	17
विकासखण्डवार 2018–19								
चकराता	372	240	0	0	274	227	425	7
कालसी	196	110	0	0	159	125	357	5
विकासनगर	89	38	836	836	23	20	181	5
सहसपुर	140	71	915	915	7	3	129	0
रायपुर	41	11	1096	1093	7	2	108	0
डोईवाला	102	59	963	963	64	46	96	0
जनपद	**940**	**529**	**3810**	**3807**	**534**	**423**	**1296**	**17**

वर्ष / विकासखण्ड	हल्दी		प्याज		अदरक		लहसून	
	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित	कुल	सिंचित
2016–17	22	1	57	39	572	25	21	7
2017–18	21	0	55	34	694	41	35	0
2018–19	13	2	60	28	670	49	24	5

विकासखण्डवार 2018–19								
चकराता	2	0	7	0	58	3	2	0
कालसी	1	0	10	3	156	8	7	2
विकासनगर	3	0	11	7	147	26	6	2
सहसपुर	1	0	10	7	135	7	4	1
रायपुर	3	1	10	5	99	3	2	0
डोईवाला	3	1	12	6	75	2	3	1

उत्तराखण्ड राज्य में आधारभूत सुविधाओं के कारण विगत दस वर्षों के अन्तर्गत लगभग 27.78% पलायन हुआ, जिसमें देहरादून जनपद द्वारा लगभग 20.03% दर से योगदान दिया गया। इसी को देखते हुए जनपद के सभी विकासखण्डों में ऐसे ग्रामों की संख्या पर अध्ययन किया गया जिनमें आधारभूत सुविधाऐं 5 किमी से अधिक की दूरी पर उपलब्ध होती हैं।

आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि आधारभूत सुविधाओं के अभाव से सबसे अधिक पलायन विकासखण्ड कालसी एवं चकराता विकासखण्ड से हुआ है, क्योंकि इन विकासखण्ड़ों में 05 किमी से भी अधिक की दूरी पर आधारभूत सुविधाओं से अभावग्रस्त ग्रामों की संख्या अधिक है। आंकड़ों का विस्तृत विवरण निम्नवत तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है।

वर्ष 2019–20 में विकासखण्डवार प्रमुख सुविधा केन्द्रों से 5 किमी से अधिक दूरी पर स्थित ग्रामों की संख्या										
विकासखण्ड	सीनियर बेसिक स्कूल बालक	सीनियर बेसिक स्कूल बालिका	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बालक	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बालिका	एलोपैथिक चिकित्सालय	आयुर्वेदिक चिकित्सालय	यूनानी औषधालय	होम्योपैथिक चिकित्सालय	परिवार कल्याण केन्द्र	पक्की सड़क
चकराता	34	82	78	88	88	115	156	141	84	20
कालसी	41	78	71	85	136	144	203	193	102	13
विकासनगर	0	49	11	30	23	46	67	65	9	7
सहसपुर	4	62	11	20	27	48	88	77	10	0
रायपुर	17	45	21	25	25	30	65	58	18	0
डोईवाला	4	25	0	40	7	29	44	40	3	0
योग जनपद	**100**	**341**	**192**	**288**	**306**	**412**	**623**	**574**	**226**	**40**

वर्ष 2019–20 में विकासखण्डवार प्रमुख सुविधा केन्द्रों से 5 किमी से अधिक दूरी पर स्थित ग्रामों की संख्या										
विकासखण्ड	पशु चिकित्सालय	ग्राम पंचायत विकास अधिकारी केन्द्र	कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र	बीज / उर्वरक / कीटनाशक भण्डार / ग्रामीण गोदाम	कृषि सेवा केन्द्र	सस्ते गल्ले की दुकान	बाजार / हाट	थोक / कृषि मण्डी	क्रय / विक्रय सहकारी समिति	शीत भण्डार
चकराता	101	15	142	105	156	0	115	156	156	156
कालसी	148	44	163	148	203	20	169	195	201	203
विकासनगर	18	0	13	26	67	0	28	45	46	67
सहसपुर	24	4	24	34	88	0	50	84	74	88
रायपुर	34	4	24	33	70	0	42	59	53	70
डोईवाला	11	0	13	12	51	0	9	51	35	51
योग जनपद	**336**	**67**	**379**	**358**	**635**	**20**	**413**	**590**	**565**	**635**

जनपद में पेयजल के अभाव की वजह से जनपद से हो रहे कुल पलायन में 1.20% का योगदान दिया जाता है। पेयजल के अभाव हेतु प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि विकासखण्ड चकराता एवं कालसी में वर्ष 2019–20 तक क्रमशः 115 तथा 95 ग्राम पेयजल के अभाव से ग्रस्त है साथ ही इन विकासखण्डों में ही सबसे कम दर से पेयजल की सुविधा दी जा रही है अर्थात मैदानी क्षेत्र के विकासखण्डों की अपेक्षा पर्वतीय विकासखण्डों में पेयजल आपूर्ति की सुविधा का अभाव है अर्थात इन विकासखण्डों में पेयजल सुविधा की आपूर्ति पर विशेष ध्यान देने की अति आवश्यकता है क्योंकि जनपदान्तर्गत इन विकासखण्डों में ही अधिक पलायन के आंकड़ें प्राप्त होते हैं। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

जनपद में वर्षवार एवं विकासखण्डवार पेयजल के अभाव से ग्रस्त तोकों का विवरण						
विकासखण्ड / वर्ष	वर्षवार तोकों की कुल संख्या			वर्षवार पेयजल अभाव से ग्रस्त तोकों की कुल संख्या		
	2018–19	2019–20	बदलाव दर	2018–19	2019–20	बदलाव दर
चकराता	803	800	-3	123	115	-8
कालसी	750	754	4	104	95	-9
विकासनगर	236	233	-3	68	48	-20
सहसपुर	295	227	-68	123	59	-64
डोईवाला	321	236	-85	68	0	-68
रायपुर	365	243	-122	104	0	-104
समस्त विकासखण्ड	**2770**	**2493**	**-277**	**590**	**317**	**-273**

प्राविधिक शिक्षण तथा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा रोजगार उपलबधता के लिए दिये जा रहे प्रशिक्षणों हेतु प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद में विगत चार वर्षों के मध्य जहाँ एक

ओर प्रशिक्षणों की संख्या में 6% की वृद्धि होती है वहीं दूसरी ओर निर्धारित सीटों के सापेक्ष प्रशिणार्थियों की संख्या में 45% की गिरावट आई, जो इस बात की पुष्टि करता है कि युवाओं में इस तरह के प्रशिक्षणों हेतु उनकी रूचि में कमी हुई है, क्योंकि उन्हें रोजगार के सुअवसर प्रदान नहीं हो पा रहे हैं जिसमें सबसे बुरी स्थिति कालसी एवं रायपुर विकासखण्डों तथा नगरीय क्षेत्र की है। सरकार को जनपद स्तर पर ही सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों को स्थापित करने की ठोस रणनीति तैयार करने की आवश्यकता है, ताकि युवाओं को स्थानीय रूप में रोजगार के सुअवसर प्रदान हो सके। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

जनपद में विकासखण्डवार एवं वर्षवार प्राविधिक शिक्षण संस्थान, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, तथा उनमें भर्ती

विकासखण्ड	वर्ष 2019–20			वर्ष 2018–19			वर्ष 2017–18			वर्ष 2016–17		
	संख्या	सीटों की सं0	भर्ती	संख्या	सीटों की सं0	भर्ती	संख्या	सीटों की सं0	भर्ती	संख्या	सीटों की सं0	भर्ती
चकराता	3	88	60	3	88	64	2	46	40	2	60	54
कालसी	1	20	22	1	20	22	2	62	54	2	60	57
विकासनगर	2	58	47	2	58	36	2	58	43	2	58	45
सहसपुर	4	542	387	4	542	417	3	348	259	3	378	273
रायपुर	1	42	34	1	42	34	1	83	64	1	83	71
डोईवाला	1	21	19	1	21	19	2	51	39	1	21	18
समस्त विकासखण्ड	**12**	**771**	**569**	**12**	**771**	**592**	**12**	**648**	**499**	**11**	**660**	**518**
नगरीय	**7**	**1238**	**1085**	**7**	**1238**	**1086**	**7**	**1361**	**1205**	**7**	**1356**	**1184**
योग जनपद	**19**	**2009**	**1654**	**19**	**2009**	**1678**	**19**	**2009**	**1704**	**18**	**2016**	**1702**

जनपद में प्राविधिक शिक्षण संस्थान, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, तथा उनमें भर्ती

वर्ष	रोजगार हेतु दिये जा रहे प्रशिक्षणों का वर्षवार विवरण			रोजगार हेतु प्रशिक्षण लेने वाले प्रशिणार्थियों की संख्या में बदलाव प्रतिशत का वर्षवार विवरण
	संख्या	सीटों की सं0	भर्ती	
2015-16	17	1889	1719	**NA**
2016-17	18	2016	1702	-1.0%
2017-18	19	2009	1704	0.1%
2018-19	19	2009	1678	-1.5%
2019-20	19	2009	1654	-1.4%

वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य बदलाव	**6%**	**-0.3%**	**-3%**	**-45%**

विकासखण्ड	वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य बदलाव		
	संख्या	सीटों की सं0	भर्ती
चकराता	1	28	6
कालसी	**-1**	**-40**	**-35**
विकासनगर	0	0	2
सहसपुर	1	164	114
रायपुर	0	**-41**	**-37**
डोईवाला	0	0	1
समस्त विकासखण्ड	1	111	51
नगरीय	0	**-118**	**-99**
योग जनपद	1	**-7**	**-48**

राज्य में शिक्षा के अभाव के कारण विगत 10 वर्षों के दौरान 15.21% पलायन हुआ है, जिसमें देहरादून जनपद द्वारा 12.50% के माध्यम से योगदान दिया गया है। जनपद में वर्ष 2015–16 से वर्ष 2019–20 के मध्य शिक्षण सस्थाओं हेतु प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि शिक्षण संस्थान जैसे जूनियर बेसिक स्कूल, सीनियर बेसिक स्कूल तथा हायर सेकेण्ड्री स्कूलों की संख्या में गिरावट का होना, नगरीय क्षेत्रों में शिक्षण संस्थाओं का उच्चीकरण तथा ग्रामीण क्षेत्रों में छात्र–छात्रों की संख्या में कमी के कारण शिक्षण संस्थाओं का संचालन बन्द किया जाना है।

जनपद में जहाँ एक ओर शिक्षण संस्थाओं के बन्द होने के आंकड़े सबसे अधिक कालसी एवं चकराता विकासखण्डों में देखे जा सकते है, क्योंकि इन विकासखण्डों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या भी अन्य विकासखण्डों के अपेक्षा बहुत कम है, वहीं दूसरी ओर शिक्षण संस्थाओं के उच्चीकरण होने के आकड़े सबसे अधिक विकासखण्ड रायपुर तथा नगरीय क्षेत्रों में मिलते हैं क्योंकि इन क्षेत्रों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या पर्वतीय विकासखण्डों की सापेक्ष अधिक है, अर्थात ग्रामीण अंचलों में शिक्षण सुविधा का अभाव होने के कारण ग्रामीणों द्वारा उचित शिक्षा हेतु विकसित इलाकों में पलायन किया जा रहा है। विभाग को शिक्षण सुविधाओं में आधुनिक तकनीकी के साथ न्याय पंचायत स्तर पर आदर्श विद्यालय की सोच के साथ समुचित व्यवस्था किये जाने की आगामी कार्ययोजना तैयार किया जाना पलायन पर अंकुश लगाने में सहायक होगा। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दिया गया है।

जनपद में वर्षवार मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं की संख्या का तुलनात्मक प्रतिशत विवरण									
वर्ष / विकासखण्ड	जूनियर बेसिक स्कूल	सीनियर बेसिक स्कूल		हायर सेकेण्ड्री स्कूल		महाविद्यालय		स्नातकोत्तर महाविद्याालय	
		कुल	बालिका	कुल	बालिका	कुल	बालिका	कुल	बालिका
2014-15	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA
2015-16	0%	2.0%	0%	1.3%	0%	20.0%	0%	0%	0%
2016-17	0%	1.9%	0%	2.8%	0%	**-33.3%**	0%	33.3%	0%
2017-18	0%	0%	0%	0%	**-19.5%**	0%	0%	0%	0%
2018-19	**-9.6%**	8.3%	**-14.3%**	21.1%	**-18.2%**	0%	0%	0%	0%
2019-20	**-4.5%**	**-0.5%**	33.3%	**-9.8%**	40.7%	0%	0%	0%	0%

विकासखण्डवार मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं की संख्या में वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य बदलाव प्रतिषत का विवरण					
वर्ष / विकासखण्ड	जूनियर बेसिक स्कूल	सीनियर बेसिक स्कूल		हायर सेकेण्ड्री स्कूल	
		कुल	बालिका	कुल	बालिका
चकराता	-6.9%	-45.5%	0.0%	-5.1%	0.0%
कालसी	-16.1%	-6.0%	0.0%	-7.5%	0.0%
विकासनगर	16.2%	40.9%	0.0%	22.7%	200.0%
सहसपुर	26.2%	38.8%	0.0%	93.0%	100.0%
रायपुर	-30.9%	79.5%	-25.0%	88.5%	75.0%
डोईवाला	32.0%	53.0%	0.0%	41.7%	25.0%
समस्त विकासखण्ड	-1.5%	35.6%	-14.3%	44.1%	58.8%
नगरीय	-62.0%	-53.2%	-42.9%	-52.9%	-54.2%
योग जनपद	**-13.6%**	7.7%	**-23.8%**	9.3%	**-7.3%**

जनपद में विकासखण्डवार मान्यता प्राप्त शिक्षा संस्थाओं से स्तरवार अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या का प्रतिषत विवरण								
विकासखण्ड	कक्षा 1 से 5 तक		कक्षा 6 से 8 तक		कक्षा 9 से 12 तक		कुल अध्ययनरत विद्यार्थी	
	छात्र	छात्रायें	छात्र	छात्रायें	छात्र	छात्रायें	छात्र	छात्रायें
कालसी	2%	2%	2%	3%	2%	3%	2%	3%
चकराता	3%	3%	3%	3%	2%	3%	3%	3%
विकासनगर	12%	12%	11%	11%	12%	12%	12%	12%

डोईवाला	21%	20%	21%	20%	20%	19%	21%	20%
सहसपुर	19%	18%	18%	19%	19%	19%	19%	18%
रायपुर	18%	22%	21%	21%	18%	19%	19%	21%
समस्त विकासखण्ड	**75%**	**77%**	**76%**	**77%**	**74%**	**75%**	**75%**	**77%**
नगरीय	**25%**	**23%**	**24%**	**23%**	**26%**	**25%**	**25%**	**23%**
योग जनपद	100%	100%	100%	100%	100%	100%	100%	100%

रोजगार दिये जाने में जनपद के अन्तर्गत वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य स्थापित उद्यमों हेतु प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2017–18 के बाद आंकड़ों में लगातार गिरावट देखने को मिलती है क्योंकि पहाड़ी विकासखण्डों में मैदानी विकासखण्डों की अपेक्षा बहुत कम उद्यम इकाईयाँ स्थापित हुई हैं, जिस कारण इन क्षेत्रों में रोजगार दिये जाने के आंकड़ें भी न्यूनतम हैं। रोजगार के सुअवसरों में कमी के कारण इन क्षेत्रों से पलायन का होना स्वाभाविक है अर्थात विभाग को पहाड़ी क्षेत्रों में उपलब्ध होने वाले कच्चे माल के अनुसार उद्यम स्थापित करवाने के लिए सर्वेक्षण कर कार्ययोजना तैयार करने की आवश्यकता है। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य जनपद में पंजीकृत कारखाने लद्यु औद्योगिक इकाईयों, खादी ग्रामोद्योग इकाईयां एवं उनमें कार्यरत व्यक्ति की संख्या में आये बदलाव प्रतिशत का विकासखण्डवार तुलनात्मक विवरण

विकासखण्ड	पंजीकृत कारखाने		लद्यु औद्योगिक इकाईयों		खादी ग्रामोद्योग इकाईयां		कुल इकाई एवं कार्यरत व्यक्ति	
	कारखानों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति	इकाईयों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति	इकाईयों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति	इकाईयों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति
चकराता	0%	0%	1%	0%	11%	7%	2.1%	0.5%
कालसी	0%	0%	4%	1%	7%	7%	3.6%	0.9%
विकासनगर	1%	1%	5%	1%	18%	20%	5.6%	1.8%
डोईवाला	4%	7%	21%	19%	18%	18%	19.4%	13.2%
रायपुर	21%	8%	18%	22%	11%	10%	17.4%	14.8%
सहसपुर	39%	21%	20%	19%	20%	21%	22.0%	20.1%
समस्त विकासखण्ड	65%	38%	69%	63%	86%	82%	70.1%	51.2%
नगरीय	35%	62%	31%	37%	14%	18%	29.9%	48.8%
योग जनपद	100%	100%	100%	100%	100%	100%	100%	100%

जनपद में पंजीकृत कारखाने लघु औद्योगिक इकाईयों, खादी ग्रामोद्योग इकाईयां एवं उनमें कार्यरत व्यक्तियों का वर्षवार तुलनात्मक प्रतिशत में विवरण								
वर्ष	पंजीकृत कारखाने		लघु औद्योगिक इकाईयों		खादी ग्रामोद्योग इकाईयां		कुल इकाई एवं कार्यरत व्यक्ति	
	कारखानों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति	इकाईयों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति	इकाईयों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति	इकाईयों की संख्या	कार्यरत व्यक्ति
2015-16	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA
2016-17	2.54%	5.39%	10.75%	7.89%	1.57%	1.70%	6.11%	5.91%
2017-18	20.05%	53.41%	12.04%	6.80%	2.25%	3.46%	8.12%	18.03%
2018-19	18.99%	4.55%	10.09%	8.30%	1.04%	1.56%	6.80%	5.83%
2019-20	0.96%	1.83%	10.10%	11.49%	1.15%	1.58%	6.02%	6.59%

पशु चिकित्सालय एवं अन्य सेवाओं के लिए वर्षवार एवं विकासखण्डवार आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद में वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य जहाँ एक ओर पशु चिकित्सालय एवं कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र में मात्र 3% की वृद्धि हुई है, वहीं दूसरी ओर विकासखण्ड चकराता, कालसी में क्रमशः 5 से 4 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों की कमी हुई अर्थात इन विकासखण्डों में पशुपालकों का अभी भी प्राकृतिक गर्भाधान की ओर अधिक झुकाव है।

भेड़ विकास केन्द्रों हेतु विगत चार वर्षों के आंकड़ों को देखे तो ज्ञात होता है कि चकराता विकासखण्ड में स्थापित 02 भेड़ विकास केन्द्र वर्तमान में शत–प्रतिशत निष्क्रीय हैं अर्थात जनपद में भेड़ की उपयोगिता पूर्ण रूप से समाप्त हो गयी है, उचित नहीं लगता। विभाग को भेड़ विकास केन्द्रों को नये प्रजाति की भेड़ों के साथ–साथ आधुनिक सूक्ष्म–लघु उद्यमों को बढ़ावा दिये जाने की कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए

जनपद देहरादून के अन्तर्गत ग्राम पंचायतों में मात्र 2.22% व्यक्ति ही डेरी व्यवसाय में कार्यरत हैं अर्थात पशुपालकों का इस क्षेत्र में कम ध्यान केन्द्रित है, क्योंकि पशुपालकों द्वारा इस व्यवसाय को आय के मुख्य स्रोत के रूप में नहीं लिया जाता बल्कि अतिरिक्त आय का स्रोत माना जाता है। पशुपालन क्षेत्र को यदि मुख्य आय के स्रोत के रूप में परिवर्तित किया गया तो इस क्षेत्र में रोजगार की अधिक सम्भावनाएं हैं। इसके लिए विभागीय पशु सेवा केन्द्रों के साथ–साथ कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों की संख्या में इजाफा करते हुए पशु सेवा दाताओं की संख्या में भी वृद्धि करने से पशुपालकों को समुचित सुविधायें मिलने लगेगी साथ ही पशुओं की उन्नत नस्ल उपलब्ध हो सकेगी। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किये गये हैं।

पशु चिकित्सालय एवं अन्य सेवाओं का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण					
वर्ष / विकासखण्ड	पशु चिकित्सालय	पशुसेवा केन्द्र	कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र	पशु प्रजनन फार्म	भेड़ विकास केन्द्र
2016-17	29	50	68	1	2
2017-18	29	50	68	1	2

2018-19	30	50	70	1	2
2019-20	**30**	**50**	**70**	**1**	**0**
विकासखण्डवार 2016–17					
चकराता	5	9	9	0	2
कालसी	4	10	9	1	0
विकासनगर	1	10	10	0	0
सहसपुर	3	4	8	0	0
रायपुर	2	8	9	0	0
डोईवाला	3	6	9	0	0
समस्त विकासखण्ड	**18**	**47**	**54**	**1**	**2**
नगरीय	11	3	14	0	0
योग जनपद	**29**	**50**	**68**	**1**	**2**

विकासखण्डवार वर्ष 2019–20 तक पशु चिकित्सालय एवं अन्य सेवायें में आये बदलाव का विवरण					
विकासखण्ड	**पशु चिकित्सालय**	**पशुसेवा केन्द्र**	**कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र**	**पशु प्रजनन फार्म**	**भेड़ विकास केन्द्र**
चकराता	0	0	*-5*	0	*-2*
कालसी	0	0	*-4*	0	0
विकासनगर	3	0	1	0	0
सहसपुर	2	3	3	0	0
रायपुर	5	0	2	0	0
डोईवाला	2	0	*-1*	0	0
समस्त विकासखण्ड	12	3	-4	0	-2
नगरीय	-11	-3	6	0	0
योग जनपद	**1**	**0**	**2**	**0**	*-2*

पंचवर्षीय जोत गणना के विगत चार वर्षों के आंकड़ों से स्पष्ट होता है किजनपद में विगत चार वर्षों के दौरान सबसे अधिक जोत 0.5 हेक्टेयर से कम क्षेत्रफल वाले किसानों की है, जबकि बड़ी जोत की संख्या अपेक्षाकृत न्यून है। वर्ष 2015–16 हेतुकुल जोतों की संख्या में 16% ऋणात्मक कमी हुई है जिसमें सबसे अधिक योगदान 0.5 हैक्टेयर से कम क्षेत्रफल वाली जोतों द्वारा 22% ऋणात्मक की दर से किया गया अर्थात

जनपद में कृषि भूमि का उपयोग निर्माण क्षेत्र में अधिक हो रहा है। बिखरी एवं छोटी जोत होने के कारण कृषि उत्पादन में कमी देखी जा सकती है, जिससे उद्यमियों को पलायन के लिए मजबूर होना पड़ता है। सरकार को स्वैच्छिक चकबन्दी के साथ भू–कानून को भी लागू किया जाना जनपद और राज्य हित में होगा। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

जनपद में क्रियात्मक जोतों के आकार वर्गानुसार संख्या एवं क्षेत्रफल (कृषि गणना–2010–11)							
वर्ष	आकार वर्ग हेक्टेयर						
	0.5 हेक्टेयर से कम	0.5 से 1.00 हेक्टेयर	1.00 से 2.00 हेक्टेयर	2.00 से 4.00 हेक्टेयर	4.00 से 10 हेक्टेयर	10 हे0, तथा उससे अधिक	कुल जोतों की संख्या
	कुल जोत में योगदान प्रतिशत						
2000-01	57.63%	17.96%	11.86%	7.33%	5.04%	0.18%	100%
2005-06	59.80%	17.82%	12.26%	7.42%	2.49%	0.20%	100%
2010-11	60.46%	17.98%	12.00%	7.07%	2.31%	0.18%	100%
2015-16	55.84%	19.17%	13.53%	8.43%	2.80%	0.22%	100%

जनपद में क्रियात्मक जोतों के आकार वर्गानुसार संख्या एवं क्षेत्रफल (कृषि गणना–2010–11)							
वर्ष	आकार वर्ग हेक्टेयर						
	0.5 हेक्टेयर से कम	0.5 से 1.00 हेक्टेयर	1.00 से 2.00 हेक्टेयर	2.00 से 4.00 हेक्टेयर	4.00 से 10 हेक्टेयर	10 हे0, तथा उससे अधिक	कुल जोतों की संख्या
	संख्या	संख्या	संख्या	संख्या	संख्या	संख्या	संख्या
2000-01	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA
2005-06	-5%	-9%	-5%	-7%	-55%	3%	-8%
2010-11	-8%	-8%	-11%	-13%	-16%	-19%	-9%
2015-16	-22%	-10%	-5%	0%	2%	5%	-16%

जनपद में उत्पादित हो रही 39 फसलों में से 32 फसलों की उत्पादन मात्रा एवं भाव हेतु प्राप्त विगत चार वर्षों के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जनपद में प्रमुखतया बोयी जाने वाली फसल जैसे चावल, जौ, रामदाना, मंडुवा, सावां, गहथ, मटर, भट्ट, राजमा, सरसों, तिल, मूँगफली, सोयाबीन, आलू, हल्दी तथा लहसून आदि फसलों के उत्पादन में गिरावट आई। उत्पादन के आंकडों को देखा जाय तो स्पष्ट होता है कि यदि कोई किसान साल भर 32 फसलों का उत्पादन करे तो किसान को प्रति कुन्तल की दर से रूपये 1,056,58 की आमदनी होगी जिसमें विगत चार साल में मात्र रूपये 17,418 की ही वृद्धि हुई। अर्थात विगत चार वर्षों के दौरान फसलों के भाव में अपेक्षाकृत कोई बदलाव नहीं आया है, जिस कारण कृषकों के मनोबल में कमी आ रही है। विभाग को किसानों को उन्नत बीज, खाद उपलब्ध कराने के साथ–साथ भाव वृद्धि पर भी ध्यान

केन्द्रित कर कार्ययोजना तैयार करने की आवश्यकता है। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

जनपद में उत्पादित हो रही फसलों की उत्पादन मात्रा एवं भाव का वर्षवार तुलनात्मक विवरण											
क्र0 स0	फसल का नाम	उत्पादन मात्रा (कु0 में)					भाव (रु0प्र0कु0)				
		2015-16	2016-17	2018-19	2019-20	वर्ष 2015–16 से वर्ष 2019–20 के मध्य बदलाव	2015-16	2016-17	2018-19	2019-20	वर्ष 2015–16 से वर्ष 2019–20 के मध्य बदलाव
1	**धान्य**										
1	चावल	221260	207380	195620	202780	-18480	2100	2050	2217	2260	160
2	गेहूँ	335590	424670	394320	381800	46210	1680	2200	2051	2232	552
3	जौ	9570	8350	8960	9510	-60	2200	2500	2037	2260	60
4	ज्वार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
5	रामदाना	7650	6950	6170	3520	-4130	0	7100	1699	0	0
6	मक्का	155680	161000	185350	160930	5250	1750	1650	1690	2203	453
7	मंडुवा	16270	16680	19410	16240	-30	1520	2150	2264	2913	1393
8	सावां	3730	2680	3410	2260	-1470	3100	2100	0	0	-3100
9	कोदो	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
10	गहथ	7550	0	0	0	-7550	7100	0	0	0	-7100
11	कुटकी	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
12	बाजरा	0	0	0	0	0	0	1699	0	0	0
कुल धान्य		757300	827710	813240	777040	19740	19450	21449	11958	11868	-7582
2	**दालें**										
13	उर्द	5610	4660	7890	7240	1630	4625	4750	6155	7845	3220
14	मूंग	0	10	20	0	0	4760	4760	6546	0	-4760
15	मसूर	2550	2390	2120	3560	1010	7600	4500	5027	5934	-1666
16	चना	140	170	150	140	0	3800	4800	5119	5873	2073
17	मटर	4820	320	1870	2820	-2000	3250	3600	4884	6091	2841
18	अरहर	2600	1910	2700	4340	1740	8250	6500	0	7813	-437
19	मोठ	0	0	10	10	10	0	0	0	0	0

20	गहत	0	5030	7800	8150	3120	0	7850	7517	9567	1717
21	भट्ट	0	120	90	80	-40	0	0	0	0	0
22	राजमा	0	16950	10910	16760	-190	0	8150	8148	8567	417
कुल दालें		15720	31560	33560	43100	27380	32285	44910	43396	51690	19405
कुल खाद्यान (1+2)		773020	859270	846800	820140	25020	51735	66359	55354	63558	11823
3	**तिलहन**										
23	लाही / सरसों	1960	5460	7900	7630	5670	4200	4048	4114	4367	167
24	अलसी	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
25	तिल शुद्ध	230	0	230	200	-30	3800	0	0	0	-3800
26	रेडी	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
27	मूँगफली	800	610	170	400	-400	6400	5903	5843	6066	-334
28	सूरजमुखी	30	0	0	30	0	2750	0	0	0	-2750
29	सोयाबीन	280	90	120	140	-140	3800	4620	4640	4673	873
कुल तिलहन		3300	6160	8420	8400	5100	20950	14571	14597	15106	*-5844*
4	**अन्य फसलें**										
30	गन्ना	2553470	2606900	2619680	2926080	372610	330	330	0	0	-330
31	आलू	99700	80530	101460	65390	-34310	820	750	1147	1069	249
32	तम्बाकू	0	0	0	0	0	3800	0	0	0	-3800
33	जूट	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
34	कपास	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
35	सनई	0	**0**	0	0	0	0	0	0	0	0
36	हल्दी	780	440	0	320	***-460***	5500	1050	8754	8152	2652
37	प्याज	0	3500	8960	9620	6120	0	1500	1313	2930	1430
38	अदरक	0	70000	99270	90680	20680	0	3000	5037	6524	3524
39	लहसून	0	440	0	310	***-130***	0	3500	2697	8319	4819
योग अन्य फसल		**2653950**	**2761810**	**2829370**	**3092400**	**364510**	**10450**	**10130**	**18948**	**26994**	**8544**

समस्त फसलों का योग (1+2+3+4)	3430270	3627240	3684590	3920940	394630	83135	91060	88899	105658	17418

सिंचाई के संसाधनों द्वारा हो रहे वास्तविक सिंचित क्षेत्रफल हेतु प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद में विगत चार वर्षों के दौरान नहरों, नलकूपों, कुऐं, तालाब तथा अन्य संसाधनों द्वारा सिंचित क्षेत्रफल में वर्ष 2015–16 से वर्ष 2018–19 के मध्य 18.2% हेक्टेयर ऋणात्मक गिरावट देखी जा सकती है, जिसमें सभी विकासखण्ड़ों का योगदान अपेक्षाकृत अधिक ही रहा है। विकासखण्ड चकराता और कालसी की स्थिति ज्यादा ही खराब है। विभाग को जनपद में निजी नलकूप, तालाब, सेन वाटर हार्वेस्टिंग, टपक सिंचाई के साथ–साथ स्प्रिंकल सिंचाई को बढ़ावा दिये जाने की कार्ययोजना तैयार कर सिंचित क्षेत्रफल को बढ़ावा दिया जाना कृषकों के हित में होगा।सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

जनपद में विकासखण्डवार एवं वर्षवार सिंचाई के संसाधनों द्वारा वास्तविक सिंचित क्षेत्रफल का विवरण (हेक्टेयर प्रतिशत में)

वर्ष/विकासखण्ड	नहरें	नलकूप		कुऐं	तालाब	अन्य	योग
		राजकीय	निजी				
2015-16	14687	2911	0	1392	0	2053	21043
2016-17	14350	2799	0	1785	0	2038	20972
2017-18	14998	2694	0	73	4	1509	19278
2018-19	13977	2333	0	0	1	893	17204
विकासखण्डवार 2015–16							
कालसी	401	0	0	0	0	114	515
चकराता	437	0	0	0	0	389	826
रायपुर	1909	756	0	529	0	181	3375
सहसपुर	2603	916	0	444	0	246	4209
डोईवाला	4180	405	0	376	0	999	5960
विकासनगर	5157	834	0	43	0	124	6158
योग जनपद	**14687**	**2911**	**0**	**1392**	**0**	**2053**	**21043**

जनपद में विकासखण्डवार सिंचाई के संसाधनों द्वारा वास्तविक सिंचित क्षेत्रफल में वर्ष 2015–16 से वर्ष 2018–19 के मध्य हुए बदलाव का तुलानात्मक विवरण (हेक्टेयर प्रतिशत में)

विकासखण्ड	नहरें	नलकूप		कुऐं	तालाब	अन्य	योग
		राजकीय	निजी				
चकराता	-5.0%	0.0%	0.0%	0.0%	0.0%	-56.8%	-29.4%

कालसी	-5.1%	-19.4%	0.0%	-100.0%	0.0%	-56.9%	-26.0%
डोईवाला	-5.1%	-20.0%	0.0%	-100.0%	0.0%	-56.9%	-21.4%
विकासनगर	-4.3%	-21.0%	0.0%	-100.0%	0.0%	-56.1%	-20.1%
रायपुर	-5.0%	0.0%	0.0%	0.0%	0.0%	-57.0%	-16.5%
सहसपुर	-5.0%	-19.5%	0.0%	-100.0%	0.0%	-57.3%	-8.7%
योग जनपद	**-4.8%**	**-19.9%**	**0.0%**	**-100.0%**	**0.0%**	**-56.5%**	**-18.2%**

भूमि उपयोगिता हेतु प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद में विगत चार वर्षों के दौरान कुल प्रतिवेदित क्षेत्र, कृषि योग्य बंजर भूमि, वर्तमान परती तथा उसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि में क्रमशः 0.11%, 1.31%, 18.98% व 0.65% हेक्टेयर की वर्षवार ऋणात्मक कमी आई, जबकि वर्ष 2015–16 से वर्ष 2018–19 के मध्य कुल प्रतिवेदित क्षेत्र तथा उसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि हेतु सभी विकासखण्ड में आंकड़ों में गिरावट देखे जा सकती है। अर्थात जनपदान्तर्गत भूमि का उपयोग सीमेन्ट के घरोंदूँ हेतु अधिक हो रहा है। सरकार द्वारा उत्तराखण्ड राज्य का भू–कानून लाना राज्य के चहुंमुखी विकास को प्रशस्त करना होगा। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

जनपद में वर्षवार भूमि उपयोग में बदलाव का विवरण (हेक्टेयर प्रतिशत में)							
वर्ष / विकासखण्ड	**कुल प्रतिवेदित क्षेत्र**	**वन**	**कृषि योग्य बंजर भूमि**	**वर्तमान परती**	**अन्य परती**	**उसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि**	**कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग भूमि**
2013-14	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA
2014-15	0.05%	0.00%	0.03%	-28.49%	0.05%	0.69%	4.84%
2015-16	0.00%	0.00%	0.92%	55.66%	9.34%	3.97%	0.15%
2016-17	0.00%	0.00%	0.10%	0.66%	0.23%	-0.16%	0.24%
2017-18	0.00%	0.00%	1.53%	40.20%	0.83%	-17.15%	0.87%
2018-19	-0.11%	0.00%	-1.31%	-18.98%	10.38%	-0.65%	0.67%

जनपद में वर्ष 2015–16 से वर्ष 2018–19 के मध्य भूमि उपयोग का विकासखण्डवार तुलनात्मक बदलाव विवरण (हेक्टेयर प्रतिषत में)							
वर्ष	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	वन	कृषि योग्य बंजर भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	उसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग भूमि
विकासनगर	-0.10%	0.00%	0.23%	14.22%	11.32%	-17.57%	-25.81%
चकराता	-0.10%	0.00%	0.54%	14.72%	11.20%	-17.45%	2.09%
रायपुर	-0.10%	0.00%	-0.14%	14.25%	11.13%	-17.98%	2.16%
कालसी	-0.10%	0.00%	0.55%	14.38%	11.14%	-17.60%	2.16%
सहसपुर	-0.10%	0.00%	-1.00%	14.19%	11.08%	-17.68%	2.16%
डोईवाला	-0.18%	0.00%	-22.32%	14.23%	15.49%	-22.89%	38.26%
जनपद हेतु योग	-0.11%	0.00%	0.31%	14.34%	11.55%	-17.82%	1.79%

जनपद में फसलवार भूमि उपयोगिता हेतु वर्षवार आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वर्ष 2018–19 के लिए एक बार से अधिक बोये गये क्षेत्रफल में 11.89% हेक्टेयर की ऋणात्मक कमी हुई है क्योंकि शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल में भी 3.54% हेक्टेयर की गिरावट देखी जा सकती है, साथ ही रबी और खरीफ की फसलों के लिए भी भूमि उपयोगिता के आंकड़ों में क्रमशः 10.60% व 3.50% हेक्टेयर की कमी हुई। उल्लिखित स्तरों के आंकड़ों का वर्ष 2015–16 से वर्ष 2018–19 के मध्य तुलाना करें तो ज्ञात होता है किउद्यानों, बागों, वृक्षों एवं झाडियों के अतिरिक्त सभी स्तरों में ऋणात्म्क गिरावट हुई है जो कृषि विकास के लिए उचित नहीं हैअर्थात विभाग को एक बार से अधिक बोये जाने वाली उन्नत प्रजाति की फसलों का उत्पादन करते हुए किसानों को वितरण करने की कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए। सम्बन्धित आंकड़ों का विरवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

जनपद में भूमि उपयोग का फसलवार एवं वर्षवार बदलाव विवरण (हेक्टेयर प्रतिशत में)								
वर्ष	चारागाह	उद्यानों, बागों, वृक्षों एवं झाडियों का क्षेत्र	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र	सकल बोया गया क्षेत्रफल			
					कुल	रबी	खरीफ	जायद
1	9	10	11	12	13	14	15	16
2013-14	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA
2014-15	-0.30%	-5.74%	3.72%	-11.77%	-0.92%	-0.11%	-2.11%	8.20%
2015-16	0.00%	-1.05%	-8.75%	12.25%	-3.13%	-3.98%	-2.18%	-7.78%
2016-17	0.00%	-0.39%	-0.31%	1.76%	0.33%	0.08%	0.33%	3.18%
2017-18	-6.41%	0.49%	-6.78%	3.86%	-3.44%	1.88%	-7.17%	-4.30%
2018-19	0.00%	12.74%	-3.54%	-11.89%	-6.36%	-10.60%	-3.50%	-0.70%

जनपद में वर्ष 2015–16 से वर्ष 2018–19 के मध्य भूमि उपयोग का फसलवार एवं विकासखण्डवार बदलाव विवरण (हेक्टेयर प्रतिशत में)								
विकासखण्ड	चारागाह	उद्यानों, बागों, वृक्षों एवं झाडियों का क्षेत्र	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र	सकल बोया गया क्षेत्रफल			
					कुल	रबी	खरीफ	जायद
चकराता	-6.08%	13.11%	-10.80%	-6.96%	-8.90%	-9.25%	-9.50%	0.00%
कालसी	-12.65%	13.12%	-10.80%	-6.96%	-8.89%	-9.27%	-9.52%	0.00%
विकासनगर	-2.78%	12.87%	-10.79%	-6.96%	-8.90%	-9.24%	-9.51%	-1.71%
सहसपुर	-3.46%	13.16%	-10.81%	-7.00%	-8.90%	-9.24%	-9.49%	-1.59%
रायपुर	17.77%	13.15%	-10.80%	-6.97%	-8.90%	-9.26%	-9.50%	-1.33%
डोईवाला	99.21%	7.64%	-8.48%	-6.76%	-10.44%	-7.65%	-11.94%	-3.29%
जनपद योग	-6.41%	12.84%	-10.36%	-6.88%	-9.28%	-8.85%	-10.12%	-1.94%

जनपद में जनसंख्यावार ग्रामों के वर्गीकरण हेतु विगत दशकीय जनगणना के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जहाँ एक ओर 1000–1499 जनसंख्या से 5000 से अधिक जनसंख्या वाले ग्रामों की संख्या में वृद्धि हुई वहीं दूसरी ओर 500–999 जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले ग्रामों की संख्या में कमी हुई अर्थात छोटे कस्बों से बडे कस्बों की ओर पलायन की पुष्टि होती है क्योंकि बडे कस्बों में जनमानस की आवश्यकता के अनुसार सुविधाओं की कमी कम होती है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

जनपद में कुल जनसंख्या के अनुसार वर्गीकृत ग्राम								
वर्ष / विकासखण्ड	200 से कम	200-499	500-999	1000-1499	1500-1999	2000-4999	5000 अधिक	योग
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1991	36.9%	34.5%	12.7%	5.2%	4.2%	4.6%	2.0%	100%
2001	32.2%	34.4%	14.6%	6.0%	3.9%	6.2%	2.6%	100%
2011	32.1%	32.8%	12.7%	6.0%	4.0%	8.8%	3.6%	100%
विकासखण्डवार 2011								
चकराता	20.1%	53.9%	18.8%	6.5%	0.6%	0.0%	0.0%	100%
कालसी	50.7%	40.4%	5.9%	1.5%	1.0%	0.5%	0.0%	100%
विकासनगर	10.4%	9.0%	10.4%	4.5%	13.4%	43.3%	9.0%	100%
सहसपुर	25.2%	20.4%	22.3%	5.8%	11.7%	9.7%	4.9%	100%
रायपुर	41.8%	28.2%	6.4%	9.1%	0.9%	9.1%	4.5%	100%
डोईवाला	13.3%	17.3%	17.3%	14.7%	5.3%	18.7%	13.3%	100%

योग विकासखण्ड	31.3%	33.1%	12.8%	6.0%	4.1%	9.0%	3.7%	100%
वन	63.2%	21.1%	10.5%	5.3%	0.0%	0.0%	0.0%	100%
योग जनपद	**32.1%**	**32.8%**	**12.7%**	**6.0%**	**4.0%**	**8.8%**	**3.6%**	**100%**

राज्य के विभिन्न गांवों में रहने वाले लोगों का मुख्य व्यवसाय के क्षेत्रों में से उद्यानीकरण का 2.11% का योगदान है जिसमें जनपद देहरादून द्वारा 2.93% के माध्यम से तीसरे स्थान पर योगदान दिया जा रहा है। विभाग द्वारा विगत चार वर्षो के दौरान किये गये फल पौध वितरण के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जनपद में शीतोष्णी तथा समशीतोष्णी फलों के आधार पर उद्यानीकरण क्षेत्र को विकसित किया जा रहा है, किन्तु वर्तमान में ग्लोबल वार्मिंग के चलते फलों के उत्पादन क्षेत्र में भी बदलाव करते हुए आगामी कार्ययोजना तैयार करने की आवश्यकता है, जिससे उद्यमियों को अधिक से अधिक लाभ प्राप्त होगा। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है।

सेब के फल पौध वितरण का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण					
विकासखण्ड	वर्ष 2016–17	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	कुल योग
चकराता	11800	12922	29590	31339	85651
कालसी	6500	0	5127	7575	19202
सहसपुर	1000	0	0	278	1278
रायपुर	500	0	278	0	778
विकासनगर	500	0	0	0	500
डोईवाला	0	0	0	0	0
योग जनपद	**20300**	**12922**	**34995**	**39192**	**107409**

नाशपाती के फल पौध वितरण का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण					
विकासखण्ड	वर्ष 2016–17	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	कुल योग
चकराता	2000	2116	1812	1112	7040
कालसी	1100	0	1612	1112	3824
सहसपुर	1000	0	0	0	1000
रायपुर	500	0	0	0	500
विकासनगर	0	0	0	0	0
डोईवाला	0	0	0	0	0
योग जनपद	**4600**	**2116**	**3424**	**2224**	**12364**

आड़ू के फल पौध वितरण का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण					
विकासखण्ड	वर्ष 2016–17	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	कुल योग
चकराता	2800	4170	0	0	6970
कालसी	1650	0	500	0	2150
सहसपुर	1000	0	800	0	1800
रायपुर	2010	0	0	0	2010
विकासनगर	1500	0	0	0	1500
डोईवाला	500	0	0	0	500
योग जनपद	**9460**	**4170**	**1300**	**0**	**14930**

पुलम के फल पौध वितरण का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण					
विकासखण्ड	वर्ष 2016–17	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	कुल योग
चकराता	1500	0	0	0	1500
कालसी	450	0	0	0	450
सहसपुर	0	0	0	0	0
रायपुर	0	0	0	0	0
विकासनगर	0	0	0	0	0
डोईवाला	0	0	0	0	0
योग जनपद	**1950**	**0**	**0**	**0**	**1950**

अखरोट के फल पौध वितरण का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण					
विकासखण्ड	वर्ष 2016–17	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	कुल योग
चकराता	4000	0	490	2440	6930
कालसी	2000	0	1500	450	3950
सहसपुर	0	0	0	0	0
रायपुर	1500	0	0	0	1500
विकासनगर	0	0	0	0	0
डोईवाला	0	0	0	0	0
योग जनपद	**7500**	**0**	**1990**	**2890**	**12380**

नीबू के फल पौध वितरण का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण				
विकासखण्ड	वर्ष 2016–17 (आच्छादित क्षे0 हे0 में)	वर्ष 2017–18 (पौध संख्या में)	वर्ष 2018–19 (पौध संख्या में)	वर्ष 2019–20 (आच्छादित क्षे0 हे0 में)
चकराता	53.83	834	2699	204.10
विकासनगर	3.58	0	3278	208.10
रायपुर	7.96	556	1478	753.66
सहसपुर	5.7	556	878	900.14
कालसी	62.73	556	973	460.00
डोईवाला	5.04	278	0	175.20
योग जनपद	**138.84**	**2780**	**9306**	**2701.2**

आम के फल पौध वितरण का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण				
विकासखण्ड	वर्ष 2016–17 (आच्छादित क्षे0 हे0 में)	वर्ष 2017–18 (पौध संख्या में)	वर्ष 2018–19 (पौध संख्या में)	वर्ष 2019–20 (आच्छादित क्षे0 हे0 में)
सहसपुर	10775.8	800	1100	1325.20
रायपुर	5259.58	910	1200	1109.60
कालसी	2625.45	1301	1225	671.50
विकासनगर	1555.56	333	1650	303.80
डोईवाला	2539.3	260	700	260.90
चकराता	591.83	153	1400	281.00
योग जनपद	**23347.5**	**3757**	**7275**	**3952**

लीची के फल पौध वितरण का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण				
विकासखण्ड	वर्ष 2016–17 (आच्छादित क्षे0 हे0 में)	वर्ष 2017–18 (पौध संख्या में)	वर्ष 2018–19 (पौध संख्या में)	वर्ष 2019–20 (आच्छादित क्षे0 हे0 में)
डोईवाला	760.73	655	300	1462.10
सहसपुर	441.91	560	175	1390.60
रायपुर	331.11	255	200	1699.80
कालसी	129.5	380	250	895.50
विकासनगर	261.48	145	80	881.40
चकराता	12.59	60	0	36.20
योग जनपद	**1937.32**	**2055**	**1005**	**6365.6**

जनपद देहरादून में वर्ष 2019–20 के मध्य फल उत्पादन एवं आच्छादन क्षेत्रफल हेतु फलवार एवं विकासखण्ड आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि चकराता विकासखण्ड में सबसे अधिक फलों के द्वारा क्षेत्रफल आच्छाादित किया गया है यही कारण है कि इस विकासखण्ड से फल उत्पादन भी अधिक होता है। विकासखण्ड को फल पट्टी के रूप में विकसित किये जाने की कार्ययोजना तैयार कर शासन को उपलब्ध करवाया जाना क्षेत्र को उद्यानीकरण के क्षेत्र में बढ़ावा किये जाने की पहल होगी, जिससे उद्यमियों का उद्यानीकरण के क्षेत्र में रूचि बढ़ेगी और उनका जीवन स्तर में भी परिवर्तन होगा, साथ ही अन्य विकासखण्डों के उद्यमियों के लिए प्रेरणा स्रोत भी बनेगा, जिसका भविष्य में अच्छेपरिणाम देखने को मिलेगे।

जनपद में फल उत्पादन हेतु सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है।

विकासखण्ड	जनपद में वर्ष 2019–20 के दौरान उत्पादित किये जा रहे फल पौध द्वारा आच्छादित क्षेत्रफल (% में)										
	फल पौध का नाम										
	सेब	नाशपाती	आडू	पुलम	खुमानी	अखरोट	नींबू प्रजाती	आम	लीची	अन्य फल	योग
चकराता	88.9%	80.2%	78.0%	88.4%	88.2%	87.8%	7.6%	0.6%	0.3%	10.5%	39.6%
विकासनगर	0.1%	2.3%	3.3%	0.4%	0.2%	0.1%	33.3%	21.8%	27.8%	22.8%	14.7%
सहसपुर	1.6%	3.8%	3.3%	0.8%	1.3%	0.8%	27.9%	26.7%	17.8%	15.4%	13.7%
कालसी	8.6%	10.1%	12.6%	8.0%	7.8%	11.0%	17.0%	14.1%	14.0%	19.2%	12.8%
रायपुर	0.8%	3.6%	2.8%	1.9%	2.5%	0.3%	7.7%	13.8%	33.6%	17.7%	11.0%
डोईवाला	0.0%	0.0%	0.0%	0.4%	0.0%	0.1%	6.5%	23.0%	6.6%	14.5%	8.3%
जनपद	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**

विकास खण्ड	जनपद में उत्पादित किये जा रहे फल पौध का कुल उत्पादन मी0टन (%) में										
	फल पौध का नाम										
	सेब	नाशपाती	आडू	पुलम	खुमानी	अखरोट	नींबू प्रजाती	आम	लीची	अन्य फल	योग
चकराता	88.9%	80.4%	78.4%	88.5%	87.4%	87.9%	7.1%	0.6%	0.2%	10.4%	38.7%
विकासनगर	0.1%	2.3%	3.4%	0.5%	2.5%	0.1%	33.5%	21.9%	27.8%	22.7%	15.0%
सहसपुर	1.6%	3.8%	3.3%	0.8%	1.0%	0.8%	28.1%	26.7%	17.9%	15.4%	13.8%
कालसी	8.6%	9.8%	12.0%	8.0%	6.7%	11.0%	17.0%	14.0%	13.8%	19.5%	12.7%
रायपुर	0.8%	3.7%	2.9%	1.9%	2.4%	0.3%	7.7%	13.9%	33.6%	17.7%	11.4%
डोईवाला	0.0%	0.0%	0.0%	0.2%	0.0%	0.0%	6.6%	23.0%	6.7%	14.3%	8.4%
जनपद	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**

फल उत्पादन के क्षेत्र में देहरादून जनपदान्तर्गत सांख्यिकी विभाग से प्राप्त विगत चार वर्षों के आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सेब और आम के लिए जहाँ क्षेत्रफल में 50%की दर से वृद्धि होती है वहीं उत्पादन में 50% की कमी आती है, जबकि अन्य फलों के लिए आच्छादित क्षेत्रफल एवं उत्पादन में वृद्धि हुई अर्थात सेब और आम के पौध वितरण में उन्नत किस्म का ध्यान नहीं दिया गया अथवा दोनों फलों का सर्वाविल दर बहुत कम रहा होगा, जिसका कारण पौध रोपण, सुरक्षा एवं खाद पानी की तकनीकी जानकारी उद्यमियों को उपलब्ध नहीं करवाई गयी होगी। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में उल्लेखित हैं।

विकास खण्ड	जनपद में वर्षवार उत्पादित किये जा रहे फल पौध द्वारा आच्छादित क्षेत्रफल (% में)										
	फल पौध का नाम										
	सेब	नाशपाती	आड़ू	पुलम	खुमानी	अखरोट	नींबू प्रजाती	आम	लीची	अन्य फल	योग
2016-17	14.3%	6.1%	4.7%	0.8%	1.8%	2.0%	1.3%	14.2%	3.3%	3.9%	7.9%
2017-18	28.5%	31.2%	31.5%	32.9%	32.4%	32.5%	32.8%	28.5%	32.2%	31.1%	30.5%
2018-19	28.6%	31.4%	31.9%	33.1%	32.6%	32.7%	32.9%	28.6%	32.2%	32.1%	30.7%
2019-20	28.6%	31.4%	32.0%	33.2%	33.2%	32.7%	33.1%	28.6%	32.3%	32.9%	30.8%
;ksx	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**

विकास खण्ड	जनपद में वर्षवार उत्पादित किये जा रहे फल पौध का कुल उत्पादन मी0टन (%) में										
	फल पौध का नाम										
	सेब	नाशपाती	आड़ू	पुलम	खुमानी	अखरोट	नींबू प्रजाती	आम	लीची	अन्य फल	योग
2016-17	40.8%	13.0%	9.4%	1.1%	5.3%	2.3%	1.2%	43.1%	8.9%	11.9%	26.1%
2017-18	19.8%	28.9%	29.8%	32.9%	31.4%	32.5%	32.9%	18.9%	30.3%	30.6%	24.7%
2018-19	19.7%	29.1%	30.6%	33.0%	31.8%	32.6%	33.0%	19.0%	30.4%	26.4%	24.5%
2019-20	19.8%	29.0%	30.2%	33.0%	31.5%	32.6%	33.0%	19.0%	30.4%	31.0%	24.8%
योग	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**

जनपद देहरादून द्वारा राज्यान्तर्गत उद्यानीकरण के क्षेत्र में 2.93% की दर से तीसरे नम्बर पर रहते हुए योगदान दिया जाता है। जनपद में विकासखण्ड चकराता, कालसी तथा विकासनगर को सेब, नाशपाती,

आड़ू, पुलम, खुमानी, अखरोट तथा नीबू प्रजाति जैसे फलों की फल पट्टी के रूप विकसित किये जाने की कार्ययोजना तैयार करना अपेक्षित होगा।

जनपदान्तर्गत विगत चार वर्षों के दौरान जहाँ एक ओर उद्यान की संख्या में वर्ष 2016–17 में मामूली वृद्धि हुई है, जबकि वर्ष 2015–16 के सापेक्ष वर्ष 2016–17 के मध्य लगभग 33% ऋणात्मक कमी हुई थी, वहीं दूसरी ओर इन उद्यानों के द्वारा आच्छादित क्षेत्रफल में विचलन देखा जा सकता है। अर्थात जनपद में उद्यानों की संख्या में धीमी गति से वृद्धि होना जनपदान्तर्गत उद्यान रक्षा सचल केन्द्रो, फल संरक्षण केन्द्रों तथा नर्सरियों की संख्या में कोई वृद्धि का न होना है। विभाग को इन केन्द्रों को समेकित करते हुए नई तकनीकी से युक्त (Horticulture Integrated Development Centre)उद्यान एकीकृत विकास केन्द्र विकसित किये जाने की कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए।सम्बन्धित आंकड़ों काविवरण वर्षवार एवं विकासखण्डवार निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किये गये है।

जनपद में वर्षवार उद्यान से सम्बन्धित सूचनाओं का विवरण							
वर्ष	कुल उद्यानों की संख्या	वर्षवार उद्यानों में बदलाव प्रतिशत	उद्यानों के अन्तर्गत (है0)	वर्षवार उद्यान क्षेत्र0 में बदलाव प्रतिशत	उद्यान रक्षा सचल केन्द्रों की संख्या	फल संरक्षण केन्द्रों की संख्या	कुल नर्सरियों की संख्या
2015-16	28747	–	26408	–	16	5	7
2016-17	19208	-33.18%	7052	-73.30%	16	5	7
2017-18	19320	0.58%	26986	282.67%	16	5	7
2018-19	19368	0.25%	27273	1.06%	16	5	7
2019-20	19395	0.14%	27386	0.41%	16	5	8

वर्ष 2019–20 में विकासखण्डवार उद्यान सम्बन्धी सूचनाओं का विवरण					
विकासखण्ड	कुल उद्यानों की संख्या	उद्यानों के अन्तर्गत (है0)	उद्यान रक्षा सचल केन्द्रों की संख्या	फल संरक्षण केन्द्रों की संख्या	कुल नर्सरियों की संख्या
चकराता	9905	10836	5	1	2
विकासनगर	2670	4026	2	1	1
सहसपुर	2385	3756	2	1	1
कालसी	2025	3468	3	0	1
रायपुर	1580	3014	2	2	1
डोईवाला	830	2285	2	0	2
जनपद	**19395**	**27386**	**16**	**5**	**8**

आलू उत्पादन हेतु सांख्यिकी विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद के विकासखण्ड चकराता में विगत वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य आच्छादन क्षेत्रफल में जहाँ 37.21% हे0 की गिरावट हुई वहीं उत्पादन में भी 37.32% मै0 टन की कमी आई।विकासखण्ड कालसी एवं डोईवाला

में इस अवधि के दौरान आलू द्वारा आच्छादन क्षेत्रफल एवं उत्पादन में 7.47% से वृद्धि होती है। अन्य विकासखण्ड़ों में भी वर्ष 2017–18 के बाद आलू के उत्पादन एवं क्षेत्रफल में लगातार कमी देखी जा सकती है।आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

वर्ष / विकासखण्ड	आलू उत्पादन हेतु विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण (क्षेत्रफल हे0 तथा उत्पादन मी0टन की तुलना % में)							
	क्षेत्रफल				उत्पादन			
	वर्ष 2016–17	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	वर्ष 2016–17	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20
कालसी	11.42%	18.91%	18.89%	18.89%	11.42%	18.97%	18.92%	18.89%
डोईवाला	13.25%	18.61%	18.75%	18.63%	13.25%	18.34%	18.53%	18.63%
चकराता	54.53%	17.06%	17.06%	17.21%	54.53%	17.11%	17.08%	17.21%
सहसपुर	5.82%	16.23%	16.21%	16.21%	5.82%	16.28%	16.25%	16.21%
रायपुर	10.78%	15.71%	15.65%	15.63%	10.78%	15.76%	15.70%	15.61%
विकासनगर	4.20%	13.48%	13.44%	13.43%	4.20%	13.53%	13.52%	13.45%
योग	100%	100%	100%	100%	100%	100%	100%	100%

सब्जी उत्पादन हेतु विगत चार वर्षों के आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि विकासखण्ड चकराता, सहसपुर व कालसी में विगत वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य आच्छादन क्षेत्रफल में जहाँ क्रमशः 11.80%, 7.79%, 3.54% हे0 की गिरावट हुई वहीं उत्पादन में भी क्रमशः 17.56%, 3.96%,5.27% मै0 टन की कमी हुई। विकासखण्ड विकासनगर, रायपुर एवं डोईवाला में इस अवधि के दौरान सब्जी उत्पादन के आच्छादन क्षेत्रफल एवं उत्पादन में वृद्धि देखी गई। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

वर्ष / विकासखण्ड	सब्जी उत्पादन हेतु विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण (क्षेत्रफल हे0 तथा उत्पादन मी0टन की तुलना %में)							
	क्षेत्रफल				उत्पादन			
	वर्ष 2016.17	वर्ष 2017.18	वर्ष 2018.19	वर्ष 2019.20	वर्ष 2016.17	वर्ष 2017.18	वर्ष 2018.19	वर्ष 2019.20
डोईवाला	11.92%	19.53%	19.49%	18.96%	12.41%	20.05%	20.03%	19.76%
सहसपुर	24.53%	16.83%	16.84%	16.74%	21.50%	17.65%	17.65%	17.54%
रायपुर	10.92%	15.27%	15.15%	15.57%	9.37%	17.05%	17.05%	17.14%
चकराता	30.29%	18.76%	18.84%	18.49%	33.94%	16.14%	16.14%	16.38%
विकासनगर	4.12%	15.36%	15.40%	15.56%	4.01%	15.58%	15.58%	15.69%
कालसी	18.22%	14.25%	14.28%	14.68%	18.76%	13.55%	13.55%	13.49%
योग	100%	100%	100%	100%	100%	100%	100%	100%

जनपद के अन्तर्गत उद्यान विभाग द्वारा विगत चार वर्षों के मध्य कुल वितरण किये गये सब्जी बीज के आंकड़ों से स्पष्ट होता है, कि वर्ष 2016–17 से वर्ष 2018–19 के तक बीज वितरण में 25% से गिरावट आती है, जबकि वर्ष 2019–20 में 46% की वृद्धि दर्ज होती है। जनपद में विगत चार सालों में सबसे अधिक मटर, फ्रेंचबीन तथा भिण्डी का बीज वितरण हुए। बीज वितरण में वर्ष 2019–20 हेतु विकासखण्डवार आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि विकासखण्ड कालसी में सबसे अधिक 93.7% बीज वितरण किया गया जबकि अन्य विकासखण्डों में बहुत कम मात्रा में बीज वितरण हुआ फिर भी इन विकासखण्डों में सब्जी उत्पादन कालसी विकासखण्ड के अपेक्षा अधिक हुआ। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

जनपद में वर्षवार सब्जी बीज वितरण (कुन्तल में) का विवरण													
विकासखण्ड का नाम	मटर	मूली	फ्रेंचबीन	बन्दगोभी	फूल गोभी	सगिया मिर्च	भिण्डी	प्याज	टमाटर	बैंगन	अन्य	कुल बीज वितरण	बीज वितरण का प्रतिशत
2016-17	350.00	0.00	0.00	0.30	0.26	0.65	4.50	0	0.13	0.25	369.47	725.56	**28%**
2017-18	**148.00**	0.00	**16.00**	**1.29**	**0.51**	0.65	4.50	0	0.13	0.25	369.47	540.80	**21%**
2018-19	80.00	1.00	0.00	0.12	0.09	0.01	2.75	0	0.09	0.04	3.26	87.36	**3%**
2019-20	1272.60	0.00	1.00	0.05	0.07	2.70	3.25	0	0.14	2.70	0.00	1282.51	**49%**
योग	**1850.60**	**1.00**	**17.00**	**1.76**	**0.92**	**4.01**	**15.00**	**0.00**	**0.49**	**3.24**	**742.20**	**2636.23**	**100%**

जनपद में वर्ष 2019–20 के दौरान विकासखण्डवार सब्जी बीज वितरण (कुन्तल में) का विवरण												
विकासखण्ड का नाम	मटर	मूली	फ्रेंचबीन	बन्दगोभी	फूल गोभी	सगिया मिर्च	भिण्डी	प्याज	टमाटर	बैंगन	अन्य	योग
कालसी	94.3%	0.0%	0.0%	18.3%	17.6%	16.7%	3.1%	0.0%	22.2%	18.7%	0.0%	93.7%
विकासनगर	1.9%	0.0%	0.0%	12.2%	17.7%	22.2%	0.0%	0.0%	13.9%	12.4%	0.0%	2.0%
रायपुर	1.7%	0.0%	0.0%	12.2%	14.8%	5.6%	35.4%	0.0%	19.4%	12.4%	0.0%	1.8%
चकराता	1.5%	0.0%	25.0%	33.0%	17.6%	16.7%	0.0%	0.0%	8.3%	31.6%	0.0%	1.7%
डोईवाला	0.4%	0.0%	25.0%	12.2%	14.9%	16.7%	30.8%	0.0%	16.7%	12.4%	0.0%	0.5%
सहसपुर	0.1%	0.0%	50.0%	12.2%	17.4%	22.2%	30.8%	0.0%	19.4%	12.4%	0.0%	0.2%
योग जनपद	**100%**	**0%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**0%**	**100%**	**100%**	**0%**	**100%**

आलू एवं सब्जी उत्पादन को जनपद में बढ़ावा दिये जाने की अधिक आयाम मौजूद हैं, जिसके लिए विभाग को न्याय पंचायत स्तर पर कृषकों को नई तकनीकी के साथ समय–समय पर प्रशिक्षित करते हुए आलू भाजी टीम का गठन कर अनुश्रवण का कार्य करवाये जाने की कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए, जिससे कृषकों को स्थानीय स्तर पर ही जानकारी के साथ सुविधायें भी प्राप्त हो सकेगी।

पर्यटन

जनपद देहरादून में विगत चार वर्षों के मध्य पर्यटन सुविधाओं एवं पर्यटकों हेतु प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जनपदान्तर्गत इन मदों में गिरावट का आना पर्यटन क्षेत्र के सुदृढ़ विकास हेतु उचित संकेत नहीं है अर्थात जनपद के अन्तर्गत ईको पर्यटन को बढ़ावा दिये जाने की और अधिक आवश्यकता है जिसके लिए पर्यटन विभाग को पौराणिक धार्मिक स्थलों के साथ–साथ इको पर्यटन के स्थलों को सुव्यवस्थित विकास

करने की कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

जनपद में पर्यटन सम्बन्धी सुविधाओं का वर्षवार विवरण							
क्र0 स0	मद	इकाई	वर्ष 2016–17	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	वर्ष 2016–17 से 2019–20 के मध्य बदलाव प्रतिशत
(क)	पर्यटन सुविधायें						
1	मुख्य पर्यटन स्थल	संख्या	74	**74**	74	30	**-59.46%**
2	पर्यटन आवास गृह	संख्या	7	**7**	7	6	**-14.29%**
3	रैन बसेरा	संख्या	1	**1**	1	1	**0.00%**
4	पर्यटन आवास गृहों में उपलब्ध शैय्यायें	संख्या	620	**620**	620	620	**0.00%**
5	रैन बसेरों में उपलब्ध शैय्यायें	संख्या	100	**100**	100	100	**0.00%**
6	होटलों तथा पेईगैस्ट हाउसों की संख्या	संख्या	871	**1122**	1218	781	**-10.33%**
7	धर्मशालाओं की संख्या (31 मार्च तक)	संख्या	82	**82**	82	54	**-34.15%**
(ख)	पर्यटकों के आँकड़े						
1	पर्यटकों की कुल संख्या (तीर्थ यात्री सहित)	संख्या	6084314	**2157599**	2484289	2905303	**-52.25%**
(i)	भारतीय पर्यटक	संख्या	6053381	**2129109**	2453998	2875467	**-52.50%**
(ii)	विदेशी पर्यटक	संख्या	30933	**28490**	30291	29836	**-3.55%**
2	महत्वपूर्ण राष्ट्रीय उद्यानों में कुल पर्यटक	संख्या	657490	**743051**	68018	379123	**-42.34%**
(i)	भारतीय पर्यटक	संख्या	645346	**728530**	62033	371693	**-42.40%**
(ii)	विदेशी पर्यटक	संख्या	12144	**14521**	5985	7430	**-38.82%**

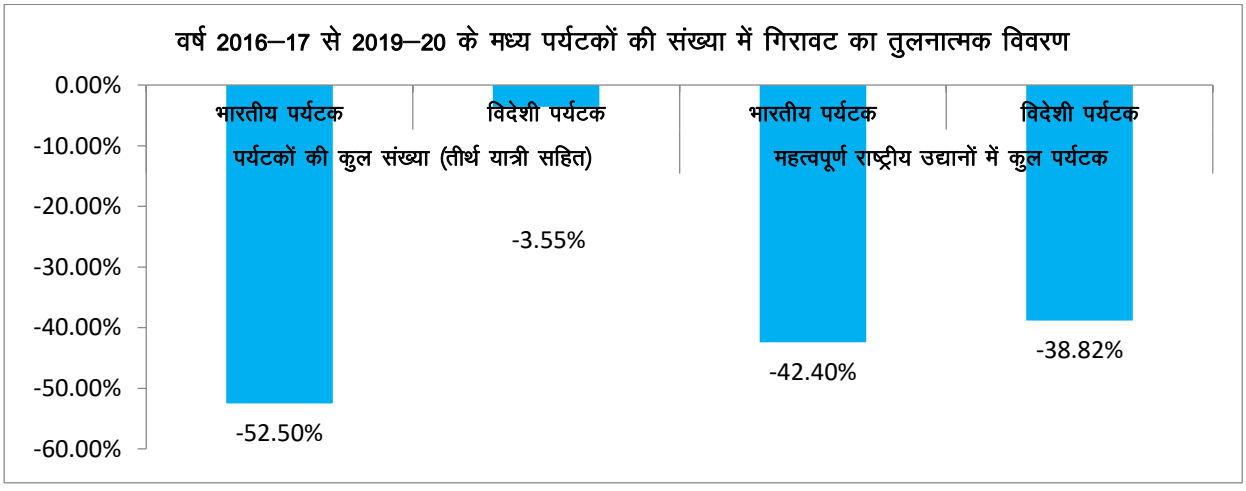

जनपद देहरादून के अन्तर्गत मूसरी, टपकेश्वर, डाटकाली मन्दिर, संतला देवी मंदिर, चन्द्रबनी, गुच्चुपानी, लच्छीवाला तपोवन, त्यूणी, सहस्रधारा, डाकपत्थर, फनवैली, कालसी, वाडिया संस्थान, फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीयूट, लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी, तेल और प्राकृतिक गैस निगम लिमिटेड धार्मिक, पर्यटक तथा शिक्षण संस्थाएं आदि मौजूद हैं, जिनका उल्लेख निम्नवत है :–

❖ ऋषिकेश

ऋषिकेश गंगा के तट पर बसा एक प्राचीन शहर है जो उत्तर भारत के प्रमुख पर्यटन और तीर्थस्थलों में से एक है, जहाँ दुनियाभर से लोग शांति की तलाश में वर्षभर आते हैं। ऋषिकेश को पूरे विश्व में 'योग राजधानी' के रूप में जाना जाता है। ऋषिकेश में आगंतुकों की बारह माह चहल–पहल रहती है, जो यहाँ योग और ध्यान सीखने आते हैं। ऋषिकेश में अनेकों आश्रम हैं, जिनमें से अधिकांश को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दार्शनिक अध्ययन, योग, ध्यान और कल्याण की अन्य प्राचीन भारतीय परम्पराओं के केंद्र के रूप में मान्यता प्राप्त है। उत्तराखण्ड पर्यटन विकास बोर्ड द्वारा यहाँ वार्षिक अन्तराष्ट्रीय योग महोत्सव (IYF) का आयोजन किया जाता है, जो हजारों योग ध्यान उत्साही लोगों को आकर्षित करता है।

ऋषिकेश से जुड़ी रोचक बातें :– ऋषिकेश का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थ स्कन्दपुराण और महाकाव्य रामायण में भी मिलता है। माना जाता है कि रावण का वध करने के बाद भगवान श्री राम अपने भाइयों के साथ तपस्या करने के लिए ऋषिकेश आए थे।

ऋषिकेश में जो स्थान आज बीटल्स आश्रम के रूप में जाना जाता है वो कभी महर्षि महेश योगी का आश्रम हुआ करता था, जहाँ वर्ष 1968 के फरवरी माह में बीटल्स अपने रॉकबैण्ड के सदस्यों के साथ यहाँ आया था। बैंड द्वारा इस दौरान महर्षि के आश्रम में लगभग 48 गीतों की रचना की गई जिनमें से अधिकतर के साक्ष्य आज भी व्हाइट एल्बम में मौजूद हैं। जॉनलेनन द्वारा भी ऋषिकेश के अपने तत्कालीन भ्रमण के दौरान 'द हैप्पी ऋषिकेश सॉन्ग' शीर्षक से एक गाना रिकॉर्ड किया था। माइकल व ऑफ द बीच बॉयज, पॉलहॉर्न, डोनोवन और जिपमिल्स सहित कई अन्य अन्तराष्ट्रीय कलाकारों ने चिंतन और ध्यान करने के लिए ऋषिकेश का दौरा किया।

कैफे का हब ऋषिकेश :– ऋषिकेश को आज विचित्र कैफे हब के रूप में जाने–जाना लगा है क्योंकि यहाँ पर्यटकों को स्थानीय राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्वादृष्टि व्यंजन उपलब्ध कराये जा रहें हैं जिसकी तारीफ करते पर्यटक थमते नहीं हैं। दिलचस्प बात यह है कि पिछले कुछ वर्षो से ऋषिकेश अपने जीवंत होली समारोहों के लिए बहुत लोकप्रिय हो गया है, जो अधिकतर निजी होटलों और रिसॉर्ट्स के माध्यम से आयोजित किये जाते हैं।

ऋषिकेश हेतु पहुँच :– ऋषिकेश पहुँचने के लिए हवाई, रेलवे और सड़क मार्गों का उपयोग किया जा सकता है। ऋषिकेश से निकटतम हवाई सेवा जॉलीग्रांट में उपलब्ध है जो ऋषिकेश से 21 किमी की दूरी पर स्थित है। जॉलीग्रांट एयरपोर्ट से ऋषिकेश के लिए टैक्सी–मैक्सी सेवा आसानी से उपलब्ध हो जाती है। जॉलीग्रांट हवाई अड्डा दैनिक उड़ानों के साथ दिल्ली से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। ऋषिकेश जॉलीग्रांट हवाईअड्डे के साथ अच्छी सड़क सुविधा से जुड़ा हुआ है।

ऋषिकेश रेलवे स्टेशन के लिए ट्रेनें अक्सर आती रहती हैं क्योंकि ऋषिकेश को रेलवे नेटवर्क द्वारा भी अच्छी तरह से जोड़ा गया है। ऋषिकेश मुनि–की–रेती और स्वर्गाश्रम के लिए टैक्सी और बसें आसानी

से उपलब्ध हो जाती है, साथ ही मोटर योग्य सड़कों से अच्छी तरह से जोडा गया है। दिल्ली आईएसबीटी कश्मीरी गेट और मेरठ से ऋषिकेश के लिए लग्जरी और सामान्य बसें आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

उत्तराखण्ड के प्रमुख स्थल जैसे देहरादून, हरिद्वार, श्रीनगर, टिहरी, उत्तरकाशी आदि से ऋषिकेश के लिए बसें और टैक्सी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। ऋषिकेश राष्ट्रीय राजमार्ग 58 पर स्थित है जो केदारनाथ–बद्रीनाथ को जोड़ता है।

❖ मसूरी

मसूरी उत्तराखण्ड राज्य का एक पहाड़ी नगर है। देहरादून से 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित, मसूरी उन स्थानों में से एक है जहाँ लोग बार–बार आते जाते हैं। मसूरी घूमने–फिरने के लिए पहचानी जानी वाली प्रमुख जगहों में से एक है क्योंकि यह स्थान समुद्रतल से 2005 मी0 (6600 फीट) की औसत ऊँचाई पर स्थित है, यह पर्वतीय पर्यटन स्थल हिमालय पर्वतमाला में मध्य हिमालय श्रेणी में पड़ता है, जिसे पहाड़ों की रानी के नाम से भी जाना जाता है। लंढौर कस्बा, बार्लोगंज और झड़ीपानी सहित कई सुन्दर स्थान ग्रेटर मसूरी में आता है। मसूरी के हरित क्षेत्र में विभिन्न प्रजाति के पादप–प्राणियों समेत बसते हैं। जहाँ से उत्तर–पूर्व में हिम मंडित शिखर सिर उठाये दृष्टिगोचर होते हैं, दक्षिण में दून घाटी और शिवालिक श्रेणी दिखती है। इसी कारण यह शहर पर्यटकों के लिये परी महल जैसा प्रतीत होता है। मसूरी गंगोत्री का प्रवेश द्वार भी है। देहरादून में पायी जाने वाली विभिन्न प्रजाति के वनस्पति और जीव–जन्तु इसके आकर्षण को ओर भी बढ़ा देते हैं। दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश के निवासियों के लिए यह लोकप्रिय ग्रीष्मकालीन पर्यटन स्थल है। बहुत ही सुंदर नगर है।

मसूरी का इतिहास :– मसूरी का इतिहास सन् 1825 में एक साहसिक ब्रिटिश मिलिट्री अधिकारी कैप्टन यंग तथा देहरादून के निवासी और अधीक्षक श्री शोर द्वारा वर्तमान मसूरी स्थल की खोज से आरम्भ होता है। वर्ष 1827 के दौरान लंढ़ौर में एक सैनिटोरियम बनवाया गया, जो आज कैन्टोन मैन्ट बन चुका है। वर्ष 1832 में कर्नल एवरेस्ट ने यहीं अपना घर बनाया था। वर्ष 1901 तक यहां की जनसंख्या 6461 थी, जो कि ग्रीष्म ऋतु में 15000 तक पहुँच जाती थी। इसके नाम के बारे में प्रायः लोगों का मानना है कि यहाँ बहुतायत मात्रा में **''मसूर''** का पौध उगता है जिसके नाम को ही मसूरी का पर्याय माना जाता है। अधिनियम पन्द्रह के अन्तर्गत मसूरी नगर पालिका का गठन वर्ष 1873 में किया गया था। इससे पूर्व 1842–43 में प्रयोग के तौर पर नगरपालिका बनायी गयी थी किन्तु यह प्रयास तत्कालीन समय में असफल रहा था।

शहरीय रूपरेखा का विवरण :– मसूरी का मुख्य स्थल अंग्रेजो द्वारा बसाये गये अन्य स्थलों की भांति ही **''माल''** कहलाता है। मसूरी का मालरोड पूर्व में पिक्चर पैलेस से लेकर पश्चिम में पब्लिक लाइब्रेरी तक जाता है। ब्रिटिशकाल में मसूरी के माल मार्ग पर लिखा होता था **''भारतीयों और कुत्तों को अनुमति नहीं''**। इस प्रकार के जातीय चिन्ह अंग्रेजों की मानसिकता का परिचय देते हुए उस काल के बसाये नगरों व स्थानों में मिल जाते थे। जिन्हें बाद में पैरो तले रौंद दिया गया था। मोतीलाल नेहरू, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के पिता द्वारा उनके मसूरी निवास काल मे प्रतिदिन यह नियम तोड़ा जाता था। नेहरू परिवार की श्रीमती इन्दिरा गाँधी सहित मसूरी के नियमित दर्शक थे सन् 1920–40 के दौरान वे निकटवर्ति देहरादून में भी अपना समय देते थे, जहाँ पंड़ित जी की बहन विजयलक्ष्मी पंड़ित रहती थी। अप्रैल 1959 में दलाई लामा चीन अधिकृत तिब्बत से निर्वासित होने पर यहीं आये और तिब्बत निर्वासित सरकार बनाई। बाद में यह सरकार हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में स्थानांतरित हो गयी। यहाँ प्रथम तिब्बती स्कूल सन् 1960 में खुला था। अभी भी लगभग

5000 तिब्बती लोग मसूरी में मुख्यतः हैप्पीवैली में बसे हुए हैं। वर्तमान में मसूरी में इतने होटल और जनसंख्या हो गयी है, दिल्ली इत्यादि से निकटता के कारण यह नगर ढेरों कूडा, जल संकट, पार्किंग की कमी इत्यादि से विशेष कर ग्रीष्म ऋतु में सामना करता है। इसके अन्य अनुभागों में अपेक्षाकृत कम संकट हैं।

भौगोलिक स्थिति :– मसूरी की भौगोलिक स्थिति 30.45 डिग्री उत्तरी अक्षांश तथा 78.08 डिग्री पूर्वी देशांतर पर है। इसका औसत ऊँचाई 1,826 मीटर (5,991 फीट) है।

जनसख्या :– मसूरी की जनसंख्या 30118 थी। जिसमें 55.19 प्रतिशत पुरूष और 44.81 प्रतिशत स्त्रियाँ सम्मिलित थी। मसूरी का औसत साक्षरता 89.69 प्रतिशत थी। यह राष्ट्रीय दर 78.82 प्रतिशत से कहीं ऊँची थी। यहाँ की 8.88 प्रतिशत जनसंख्या छः वर्ष के अंदर थी।

प्रवेश द्वार :– मसूरी दिल्ली और अन्य मुख्य नगरों से सड़क द्वारा पहुँचना अति सुगम है। इसे गंगोत्री, यमुनोत्री आदि उत्तर भारतीय तीर्थस्थलों का प्रवेशद्वार कहा जाता है। समीपतम रेलवे स्टेशन देहरादून है। यहां टैक्सियां व बसें नियमित उपलब्ध रहती हैं।

संस्थान

लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी – मसूरी में ही लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी भी स्थित है, जो कि युवकों के लिये भारतीय प्रशासनिक सेवाओं हेतु एक मात्र प्रशिक्षण केन्द्र है। यह संस्थान गांधी चौक से 3 किमी दूर है। लाइब्रेरी क्षेत्र में भारत तिब्बत सीमा पुलिस का उत्तर क्षेत्रीय मुख्यालय भी स्थित है। यह आई.टी.बी.पी का एक आदरणीय पूर्ण प्रशिक्षण केन्द्र है। यहां सीमा पुलिस में नवनियुक्त जवानों को प्रशिक्षण दिया जाता है।

सेंट जॉर्ज विद्यालय :– सेंट जॉर्ज विद्यालय मसूरी (1853 में स्थापित) यहां के पुराने और प्रसिद्व विद्यालय में से एक है। यह पैट्रीशियन बंधुओं द्वारा सन् 1893 से चलाया जा रहा है। 400 एकड़ में फैला इसका कैम्प समैनर हाऊस के नाम से प्रचलित है। सेंटजॉर्ज स्कूल अपने स्थापत्य के लिये मसूरी भर में अद्वितीय है। अन्य विद्यालय में वायन बर्ग ऐलन, गुरू नानक पंचम सेंटिनरी, मसूरी इंटरनैशनल, टिबेटन होम्स और बुड स्टॉक स्कूल हैं।

गुरू नानक फिफ्थ सेंटेनरी स्कूल, मसूरी :– (GNFCS) मसूरी का प्रसिद्व विद्यालय है। इसकी स्थापना श्री गुरू नानक जी की स्मृति में उनकी 500वीं जन्म शती के अवसर पर नवम्बर 1969 में की गयी थी।

मुख्य आकर्षण केन्द्र :–

गन हिल – मसूरी की दूसरी सबसे ऊँची चोटी पर रोप–वे द्वारा जाने का आनंद लें। यहां पैदल रास्ते से भी पहुंचा जा सकता है, यह रास्ता मालरोड पर कचहरी के निकट से जाता है और यहां पहुंचने में लगभग 20 मिनट का समय लगता है। रोप–वे की लंबाई 400 मीटर है। सबसे ज्यादा इसकी सैर में जो रोमांच है, वह अविस्मरणीय है।

आजादी पूर्व के वर्षो में इस पहाड़ी के ऊपर रखी तोप प्रतिदिन दोपहर को चलाई जाती थी ताकि लोग अपनी घड़ियां सैट कर लें, इसी कारण इस स्थान का नाम गन हिल पड़ा।

ज्वाला देवी मंदिर :– यह एक प्राचीन मंदिर है जो देवी दुर्गा को समर्पित है । यह मंदिर लगभग 2104 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। सुदर हरियाली से घिरा यह मंदिर बेनोग हिल पर स्थित है और मसूरी में घूमने के लिए सबसे आकर्षक और महत्वपूर्ण जगहों में से एक माना जाता है।

म्युनिसिपल गार्डन :– मसूरी का वर्तमान कम्पनी गार्डन या म्युनिसिपल गार्डन आजादी से पहले तक बोटे निकल गार्डन भी कहलाता था। कम्पनी गार्डन के निर्माता विश्वविख्यात भूवैज्ञानिक डॉ0 एच.फाकनार लोगी थे। सन् 1842 के आस–पास उन्होंने इस क्षेत्र को सुदर उद्यान में बदल दिया था। बाद में इसकी देखभाल कंपनी प्रशासन के देखरेख में होने लगा था। इसलिए इसे कंपनी गार्डन या म्युनिसिपल गार्डन कहा जाने लगा।

तिब्बती मंदिर :– बौद्ध सभ्यता की गाथा कहता यह मंदिर निश्चय ही पर्यटकों का मनमोह लेता है। इस मंदिर के पीछे की तरफ कुछ ड्रम लगे हुए हैं। जिनके बारे में मान्यता है कि इन्हें घुमाने से मनोकामना पूरी होती है।

झड़ीपानी फाल :– यह फाल मसूरी झड़ीपानी रोड़ पर मसूरी से 8.5 किमी दूर स्थित है। पर्यटक झड़ी–पानी तक 7 किमी की दूरी बस या कार द्वारा तय करके यहां से पैदल 1.5 किमी दूरी पर झरने तक पहुंच सकते हैं।

कैम्पटी फॉल :– यमुनोत्री रोड़ पर मसूरी से 15 किमी दूर 4500 फुट की ऊँचाई पर यह इस सुंदर घाटी में स्थित सबसे बड़ा और सबसे खुबसूरत झरना है, जो चारों और से ऊँचे पहाड़ों से घिरा है। झरने की तलहटी में स्नान तरो–ताजा कर देता है और बच्चों के साथ–साथ बड़े भी इसका आनंद उठाते हैं। मसूरी–यमुनोत्री मार्ग पर नगर से लगभग 15 किलोमीटर दूर स्थित यह झरना पांच अलग–अलग धाराओं में बहता है, जो पर्यटकों के लिए खासा आकर्षण का केंद्र बना रहता है। यह समुद्रतल से लगभग 4500 फुट की ऊंचाई पर है। इसके चारों और पर्वत श्रृंखलाएं दिखाई देती हैं।

यहां की शीतलता में नहाकर पर्यटकों का मन तरो–ताजा हो जाता है। खासतौर से गर्मी के मौसम में कैम्प्टी जल प्रपात में स्नान करने का अनुभव आप जिन्दगी भर नहीं भुला पाएंगे। कैम्प्टी जलप्रपात के निकट कैम्प्टी झील है। लोग यहां पर अपने परिवार एवं मित्रों के साथ समय बिताने के लिए आते हैं। यहां उपलब्ध नौकायन और टॉय ट्रेन की सुविधा बच्चों को खासा लुभाती है। यही नहीं यह स्थल पिकनिक मनाने के इच्छुक लोगों में बहुत ही लोकप्रिय है।

मसूरी झील :– मसूरी देहरादून रोड़ पर यह नया विकसित किया गया पिकनिक स्पॉट है, जो मसूरी से लगभग 6 किमी दूर है। यह एक आकर्षक स्थान है। यहां पैडल–बोट उपलब्ध रहती हैं। यहां से दून–घाटी और आसपास के गांवों का सुंदर दृश्य दिखाई देता है।

वाम चेतना केन्द्र :– टिहरी बाई–पास रोड़ पर लगभग 2 किमी की दूरी पर यह एक विकसित किया गया पिकनिक स्पॉट है, इसके आस–पास पार्क है जो देवदार के जंगलों और फूलों की झाड़ियों से घिरा है। यहां तक पैदल या टैक्सी/कार से पहुंचा जा सकता है। पार्क में वन्य प्राणी जैसे घुरार, कण्णंकर, हिमालयी मोर, मोनल आदि आकर्षण के मुख्य केन्द्र हैं।

सर जॉर्ज एवरेस्ट हाउस :– 6 किमी की दूरी पर भारत के प्रथम सर्वेयर जनरल सर जॉर्ज एवरेस्ट की दि पार्क एस्टेट है, उनका आवास और कार्यालय यहीं था, यहां सड़क मार्ग से पहुंचा जा सकता है। विश्व की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट का नाम इन्हीं के नाम पर रखा गया है।

ज्वालाजी मंदिर (बेनोग हिल) :– मसूरी से 9 किमी पश्चिम में 2014 मी की ऊंचाई पर ज्वालाजी मंदिर स्थित है। यह बेनोगहिल की चोटी पर बना है, जहां माता दुर्गा की पूजा होती है। मंदिर के चारों और घना जंगल है, जहां से हिमालय की चोटियों दून घाटी और यमुना के सुंदर दृश्य दिखाई देते हैं।

क्लाउड्स एंड :– यह बंगला 1838 में एक ब्रिटिश मेजर ने बनवाया था, जो मसूरी में बने पहले चार भवनों में से एक है। अब इस बंगले को होटल में बदला जा चुका है, क्लाउड्स एंड कहे जाने वाला यह होटल मसूरी हिल के एकदम पश्चिम में, लाइब्रेरी से 8 किमी दूर स्थित है। यह रिजॉर्ट घने जंगलों से घिरा है, जहां पेड़–पौधों की विविध किस्में हैं साथ ही यहां से हिमालय की हिमाच्छादित चोटियां और यमुना नदी को देखा जा सकता है। विदेशी पर्यटकों के लिए यह सबसे उपयुक्त रिजॉर्ट है।

❖ टपकेश्वर

टपकेश्वर पर विश्लेषण के लिए निम्नलिखित चरणों में मन्थन किया जाना उचित होगा, क्योंकि उक्त स्थान का जनपद देहरादून के सामाजिक आर्थिक विकास में अपना अलग ही महत्व रहा है।भगवान टपकेश्वर का पौराणिक मन्दिर देहरादून शहर से लगभग 5.5 किमी की दूरी पर स्थित गढ़ी कैंट क्षेत्र में विराजमान है, जो कि इस क्षेत्र में प्रवाहित छोटी सी नदी के पूर्वी तट पर अवस्थित हुआ है। सड़क मार्ग के माध्यम से आप सरलता पूर्व भगवान टपकेश्वर मन्दिर पहुँच सकते हैं।यहां एक गुफा में स्थित शिवलिंग पर एक चट्टान से पानी की बूंदे टपकती रहती हैं। इसी कारण इसका नाम टपकेश्वर पड़ा है। शिवरात्रि के पर्व आयोजित मेले में लोग बड़ी संख्या में यहां एकत्र होते हैं। टपकेश्वर तमसा नदी के तट पर स्थित है। जहाँ स्कंदपुराण में इस स्थान को देवेश्वर के रूप में जाना जाता है, वहीं द्वापर युग की मान्यता है कि इस स्थान पर गुरू द्रोणाचार्य अपने परिवार के साथ रहते थे, तब से यह स्थान द्रोणगुफा के नाम से जानी जाती है। महाभारत के प्रसिद्व नायकों में से एक ओर गुरू द्रोणा के पुत्र अश्वत्थामा का जन्म यहां हुआ था। जब अश्वत्थामा बहुत छोटा था, तो गरीब पिता को उनके लिए कहीं दूध नहीं मिला। एक गाय को खरीदने के लिए वे बहुत गरीब थे। यह एक चिंता का मामला था एक दिन जब युवा अश्वत्थामा दूध के लिए रो रहे थे, असहाय गुरू ने उन्हें भगवान शिव से प्रार्थना करने और पूजा करने की सलाह दी। अश्वत्थामा ने ऐसा ही किया एवं कठिन तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें आशीर्वाद दिया और कहा कि दूध यहां उत्पन्न होगा। अश्वत्थामा ने शिवलिंग पर गिरने वाला दूध पाया, अश्वत्थामा ने टपकेश्वर के नाम से भगवान से प्रार्थना की थी और इसलिए इस स्थान को इसी नाम से जाना जाता है। यहाँ शिवरात्रि के दिन एक बड़ा मेला लगता है। प्रार्थना करने के लिए हजारों भक्त इस दिनयहाँ इकट्ठा होते हैं।

❖ तपोवन

मंदिर :–जनपद देहरादून से 45 कि.मी. दूर ऋषिकेश शहर में रेलवे स्टेशन से 7 कि.मी. दूर तपोवन, गंगा नदी के तट पर स्थित एक पवित्र स्थान है। यह अपने खूबसूरत परिवेश और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर का नाम संस्कृत के दो शब्दों तपस (अर्थ तपस्या) और वाना (अर्थ वन) से बना है। तपोवन का एक महत्वपूर्ण धार्मिक महत्व है। अनुष्ठानों और वेदों में जप और शांत स्थान होने की पवित्रता से जोड़ता है। इस

मंदिर में बड़ी संख्या में भक्त आते हैं, जो यहां अनुष्ठानों और अन्य धार्मिक समारोहों को करवाने एवं देखने के लिए आते हैं। लोकप्रिय मान्यता यह है कि यह वह स्थान है जहां द्रोणाचार्य ने तपस्या की थी। महाभारत में द्रोणाचार्य कौरवों और पांडवों के गुरू थे।

तपोवन ध्यान और अन्य आध्यात्मिक गतिविधियों के लिए एक प्रसिद्ध स्थल है। आश्रम में समय–समय पर योग पाठ्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। आसपास की हरियाली और नदी से निकलने वाली आवाज वातावरण को बहुत मनोहर बना देती है।

❖ त्यूणी

देहरादून और त्यूणी के बीच की दूरी 71.8 किमी0 है। त्यूणी में विभिन्न धार्मिक स्थल मिलते हैं। यहाँ पर अधिकतर जौनसारी लोग रहते हैं। जो लोग ट्रेकिंग और केम्पिंग के त्यूणी आते हैं तो उनको आराम और रात्रि विश्राम करने के लिए होटलों और रेस्टोरेन्टों की सुविधा उपलब्ध हो जाती है। यहाँ के अधिकांश लोगों द्वारा अपने अन्य व्यवसाय के साथ इस व्यवसाय को भी किया जा रहा है।

❖ डाटकाली मन्दिर

मन्दिर :–''माँ डाटकाली मंदिर'' सहारनपुर रोड में मुख्य देहरादून शहर से 14 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, यह एक धार्मिक भावनाओं के लिए प्रसिद्व केन्द्रों में से एक है। लोकप्रिय रूप से ''माँ डाटकाली मंदिर'' के रूप में जाना जाता है। ''माँ डाटकाली मंदिर'' में सालभर सैकड़ों देवी काली भक्त आते हैं। यह हिन्दुओं का एक प्रसिद्व मंदिर है, और यह मन्दिर माँ काली को समर्पित है, इसलिए मंदिर को काली मंदिर भी कहा जाता है एवं काली माता को भगवान शिव की पत्नी ''देवी सती'' का अंश माना जाता है। ''माँ डाटकाली मंदिर'' को मनोकामना सिद्धपीठ व कालीमंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर के बारे में यह माना जाता है कि माता डाटकाली मंदिर देहरादून में स्थित सिद्धपीठों में से एक है। डाटकाली मंदिर में एक बडा सा हॉल भी स्थित है, जिसमें मंदिर मे आये श्रद्वालु व भक्त आदि लोग आराम कर सकते हैं।

इस मंदिर का निर्माण 13 वीं शताब्दी में 13 जून 1804 में किया गया था। जब मंदिर का निर्माण कार्य किया जा रहा था तो ऐसा माना जाता है कि माँ काली एक इंजीनियर के सपने में आयी थी और जिन्होंने मंदिर की स्थापना के लिए महन्त सुखबीर गुसैन को देवी काली की मूर्ति दी थी, जो कि वर्तमान में घाटी के मंदिर में स्थापित है। इसलिए इस मंदिर को ''माँ डाटकाली मंदिर'' कहा जाता है।

विशेषता :– मां डाटकाली मंदिर की मुख्य विशेषता यह है कि इस मंदिर के अन्दर एक दिव्य ज्योति जली रहती है, जो कि 1921 से लगातार जल रही है। इस मंदिर के प्रति इस क्षेत्र में रहने वालो लोगों की अत्यन्त श्रद्वा है, क्योंकि इस क्षेत्र के आसपास के लोग जब भी कोई नया वाहन खरीदते हैं तो क्षेत्र के लोग इस मंदिर में पूजा करने के लिए मां डाटकाली मंदिर में जरूर लाते हैं। यह मंदिर देहरादून सहारनपुर रोड के किनारे पर स्थित होने के कारण जो भी व्यक्ति यहां से जाता है वो मां काली का आर्शीवाद जरूर लेता है और मंदिर मे तेल, गुड, घी, आटा व अन्य वस्तु देवी के समक्ष प्रस्तुत करता है।

इस मंदिर के दर्शन के लिए भक्तो की भीड़ लगी रहती है, परन्तु नवरात्रि के पर्व के अवसर पर मंदिर में बहुत बड़ी संख्या में लोग आते है, कभी–कभी तो राजमार्ग को भी बंद करना पड़ता। नवरात्रि के अवसर

पर यहां भंडारा भी किया जाता है, जहां लोग प्रसाद को माँ काली का आशीर्वाद मान कर प्राप्त करते है। इस भंडारे में न केवल देहरादून, रूड़की, हरिद्वार, बल्कि यूपी के विभिन्न हिस्सों से भी श्रद्वालु पहुंचते हैं।

व्यवसाय :–यहां के कई लोगो का मूल व्यवसाय छोटी बड़ी दुकानें लगाकर अपनी आय अर्जित करना होता है क्योंकि इस मंदिर में हमेशा काफी अधिक मात्रा में श्रद्वालुओं भक्तों का आना–जाना लगा रहता है, मन्दिर के आसपास स्थानीय लोगों द्वारा फल, फूल, पूजा की सामग्री वाली दुकानों लगाई हुई हैं।

आय :–स्थानीय कई परिवारों द्वारामन्दिर के आसपास छोटी–छोटी दुकानें लगाकर अपनी आजीविका सुचारू रूप से चलाई जाती है।

❖ सहस्त्रधारा

बाल्दी नदी पर सहस्त्रधारा देहरादून शहर से 14 किमी की दूरी पर स्थित है। सहस्त्रधारा जिसका शाब्दिक अर्थ है ''हजार गुना बसन्त'' देहरादून में एक प्रसिद्व पर्यटन स्थल है। झरने और गुफाओं की सुंदरता देखने के लिए पर्यटक बड़ी संख्या में सहस्त्रधारा आते हैं। यह एक लोकप्रिय आकर्षण का केन्द्र है, जो अपने औषधीय और चिकित्सीय महत्व के लिए प्रसिद्ध है क्योंकि इसके पानी में सल्फर होता है। सहस्त्रधारा उत्तराखण्ड के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है । सहस्रधारा को सल्फर स्प्रिंग्स के रूप में भी जाना जाता हैं। सहस्त्रधारा में द्रोणाचार्य ने तपस्या भी की थी और उनके गुफा द्रोणागुफा के नाम से जानी जाती है। सामने शिव का मन्दिर भी है।

यह जल प्रपात चूनापत्थर के स्टैलेक्टाइटा के माध्यम से बहता है, जिससे पानी सल्फर से भरपूर हो जाता है। यहां के सल्फर युक्त पानी में डुबकी लगाने से ठंडक और ताजगी का एहसास होता है, लेकिन माना जाता है कि इसके अनेकों औषधीय लाभ भी हैं। यहां के पानी का तापमान इसके आसपास के तापमान से थोड़ा कम है। यह भी मान्यताएं हैं कि सल्फर बसन्त के पानी में स्नान करने से शरीर का दर्द और भी कई बीमारियां ठीक हो जाती हैं, इसकी सुरम्य सुंदरता दूर–दूर से यात्रियों को अपनी ओर खूब आकर्षित करती है। मजेदार रोपवे की सवारी कर आप यहाँ पहाड़ों के शानदार दृश्य का आनन्द भी ले सकते हैं।

हिमालयी वनस्पतियों के साथ इस क्षेत्र में व्यापक शांति है। चूंकि इस क्षेत्र में चूना और सल्फर की तलछटी का संचय है, इसलिए आसपास की गुफाओं में भूरे–नांरगी तत्वों का ढेर देखा जा सकता है। यहां गुफाएं और महादेव मंदिर हैं, सौतेली खेती में किसानों द्वारा खेती की जाती है।

❖ डाकपत्थर

डाकपत्थर देहरादून में यमुना नदी के किनारे बसा एक चांदी के खिलौना जैसा शहर है। इसका विशाल आकार और आयाम आपको विस्मित कर लेगा। यह डाकपत्थर बैराज के लिए प्रसिद्व है जो टिनसेल शहर के पास एक जलाशय बनाता है। यह जगह प्राकृतिक सुंदरता से संपन्न है। इसमें घने जंगल और विशाल उद्यान भी मौजूद हैं। यमुना हाइडल योजना से इसकी निकटता होने के कारण इसे विभिन्न प्रजाति की पक्षियों को देखने के लिए आदर्श बनाती है। इस स्थान पर विभिन्न प्रकार की पक्षी प्रजातियां अक्सर झुंड में देखी जा सकती हैं। डाकपत्थर अपनी अछूती प्राकृतिक सुंदरता के लिए लोकप्रिय है। यह प्रकृति प्रेमियों और एकांत चाहने वालों के लिए एक लोकप्रिय मनोरंजन स्थल के रूप में उभरा है। पहले यह स्थान कम ज्ञात आकर्षण था। लेकिन अब इसे गढ़वाल मंड़ल विकास निगम द्वारा एक पर्यटक आकर्षण के रूप में

विकसित किया गया है। शांति, अकेलापन और प्रकृति की गोद में शांति हेतु अगर आप यहां जाते हैं तो हाइडल पावर स्टेटी को ऑन देखना न भूलें।

डाकपत्थर शहर से 45 किमी उत्तर पश्चिम में है। डाकपत्थर शिवालिक श्रेणी की तलहटी में समुद्रतल से लगभग 790 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। डाकपत्थर को डाकपाथेरा भी कहा जाता है, उत्तराखण्ड में स्थित एक छोटा सा शहर है। यह प्रचुर प्राकृतिक सुंदरता और इसके चारों ओर हरी–भरी हरियाली का स्थान है। यह स्थान अब एक आलीशान पर्यटन स्थल है।

यमुना नदी पर स्थित पास का जल विद्युत संयंत्र इस जगह को और भी आकर्षक बनाता है। आसन बैराज वाटर स्पोर्ट् सरिसॉर्ट विभिन्न जल गतिविधियों एवं अपनी सुविधाओं के लिए सबसे अच्छा माना जाता है। लाखामंडल गुरू पंत साहिब गुरूद्वारा के अतिरिक्त अन्य देखने लायक जगह भी है।यह स्थान निचली शिवालिक रेंज पर है और इसे डाकपाथेर बैराज के नाम से भी जाना जाता है। यह बैराज ढकरानी और ढालीपुर बिजली संयंत्रों में उपयोग के लिए नदी से पूर्व–यमुना नहर में जल परिवर्तन का स्रोत है। पहला पत्थर यहां भारत के पहले प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा रखा गया था। यह परियोजना आसन बैराज से जुड़ने तक फैली हुई है।

❖ कालसी

कालसी यमुना नदी के तट पर डाकपत्थर के पास चकराता और देहरादून के बीच स्थित एक छोट सा शहर है। कालसी शहर अपने विरासत महत्व के लिए जाना जाता है। प्रसिद्व मौर्य सम्राट, अशोक के शिलालेख कालसी में मौजूद हैं। इसका महत्व बढ़ जाता है क्योंकि यह उत्तर भारत में स्थित अशोक का एकमात्र शिलालेख है। इन अभिलेखों में प्रयुक्त भाषा पाली है। टोंस और यमुना नदियों के संगम पर स्थित कालसी पांवटा साहिब के पास प्रसिद्ध गांव है। कालसी कभी उत्तराखण्ड के जौनसार बावर क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण बस्ती के रूप में कार्य करता था। हालांकि पिछले कुछ वर्षो में यह एक शांत छोटे से गांव में बदल गया है।

कालसी आकर्षक और आसान पैदल मार्ग प्रदान करता है। स्नो लायन एस्टेट की सीमा से लेकर कट्टा पत्थर गांव तक आश्रम रोड के साथ सबसे अच्छा है, जहां यमुना नदी सबसे पहले पहाड़ियों से निकलती है।

अशोक के शिलालेख कालसी बाजार से पथरीले रास्ते से आसानी से पहुँचा जा सकता है, अशोक शिलालेख नदी के किनारे स्थित हैं। यहां एक ईंट की संरचना में सम्राट अशोक का 2,200 साल पुराना शिलालेख है, जिसे एक अंग्रेज मिस्टर फॉरेस्ट ने 1860 में खोजा था। 10 फुट ऊंचे क्वार्ट्ज बोल्डर ने एक बार अपनी प्रजा–ब्राहमी लिपि में अपने सुधारों के बारे में सूचित किया था और उन्हें उदार, दयालु और नैतिक होने के लिए प्रोत्साहित किया। पांच ग्रीक राजाओं, एंटिओकस, टॉलेमी, एंटिगोनस, मैगस और अलेक्जेंडर के नाम रॉक हेल्पडेट पर खुदा हुआ है, जिस पर लेखन तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में किया गया था, विशेष रूप से 235 ईसा पूर्व के आस–पास पांवटा साहिब गुरूद्वारा उस स्थान के रूप में प्रसिद्व है जहां सिक्खों के दसवें गुरू, गुरू गोबिंद सिंह, कई वर्षो तक रहे।

❖ संतला देवी मंदिर

माता संतला देवी मंदिर में हर शनिवार चमत्कार होता है। कहा जाता है कि शनिवार को मां की मूर्ति पत्थर में बदल जाती है। देहरादून जिले में स्थित मां संतला देवी के मंदिर में आस्था का मेला लग जाता है। कहा जाता है कि सच्चे मन से मुराद मांगने वाले की हर मुराद मां संतौला देवी पूरी करती है। संतौला देवी मंदिर देहरादून से लगभग 15 किमी0 की दूरी पर स्थित है। जैंतनवाला तक जाने वाली बस सेवा का लाभ उठाकर यात्री मंदिर तक पहुँचने के लिये करीब दो किमी0 पैदल चढ़ाई चढ़नी पड़ती है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार जब संतला देवी और उनके भाई को एहसास हुआ कि वे मुगलों से लड़ने में सक्षम नहीं हैं तो उन्होने हथियार फेंक दिये और प्रार्थना शुरू कर दी। अचानक एक प्रकाश उन दोनों पर चमका और वे पत्थर की मूर्तियों में बदल गये। मंदिर में शनिवार को भक्तों का जमावडा लगता है माना जाता है कि शनिवार को मां संतला देवी एक पत्थर की मूर्ति में परिवर्तित हो जाती है।

चन्द्रबनी

चंद्रबनी मंदिर उत्तराखण्ड राज्य की राजधानी देहरादून में स्थित एक प्रसिद्व मंदिर है जो देवी चंद्रबनी को समर्पित है। सुन्दर हरियाली व शिवालिक पहाड़ियों के बीच स्थित मंदिर को स्थानीय रूप से गौतम कुंड के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि ऋषि गौतम आसपास के इलाके में रहते थे। मंदिर देहरादून रेलवे स्टेशन से केवल 8 किमी0 दूर स्थित है और देहरादून में भक्तों और पयर्टकों के लिए एक लोकप्रिय तीर्थस्थल है।

गौतम कुंड के कारण चंद्रबानी मंदिर धार्मिक एवं पवित्र स्थल माना जाता है। प्रत्येक वर्ष यहां भक्तों का तांता लगा रहता है और यहां आकार भक्त इस पवित्र कुंड में स्नान करते हैं।

हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार चंद्रबानी के पास का क्षेत्र महर्षि गौतम और उनकी बेटी अंजनी का पवित्र निवास स्थान था। स्थानीय लोगों द्वारा उनकी पूजा की जाती थी। बहुत से लोग यह भी मानते हैं कि चंद्रबानी वह जगह है जहां स्वर्ग की बेटी गंगा सबसे पहले यहाँ आयी थी, जिसे अब गौतम कुंड के नाम से जाना जाता है।

चन्द्रबनी मंदिर में 13 अप्रैल को महाऋषि गौतम द्वारा मां गंगा का अवतरण किया गया था। इसी उपलक्ष्य में यहां प्रतिवर्ष भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। गौतम ऋषि द्वारा इस स्थान पर घोर तपस्या की गयी। अंजना माता का निवास स्थान भी इसी स्थान को माना जाता है। उन्होंने बताया कि हनुमान जी की जन्मभूमि भी इस स्थान को माना जाता है। शिव के द्वारा ब्रहमा विष्णु इन्द्रबाल खिल्ली ऋषि आदि के साथ इस स्थान पर यज्ञ के द्वारा गरूड की उत्पत्ति भी इसी स्थान पर मानी जाती है तथा भगवान शिव द्वारा अमृत कलश को यज्ञ के द्वारा इसी स्थान पर प्रकट किया गया था। भगवान शिव के आदेश शिव अमृत कलश लेकर हिमालय गये थे। यह स्थान धर्मग्रन्थों में वर्णित अति उत्तम मन वांछित फल देने वाला है। कहा जाता है कि गौतम गंगा के जल को लेकर जो व्यक्ति सवा महीने तक लगातार शिव को चढ़ाता है। उसके सभी कष्ट दूर होकर मनोंकामनाएं पूर्ण होती है।

❖ गुच्चुपानी

लुटेरों की गुफा गुच्चुपानी देहरादून उत्तराखण्ड

यह एक प्रसिद्व दर्शनीय स्थल और शहर के बाहर स्थित है। यह गुच्छुपानी के रूप में भी जाना जाता है, जो शहर के केन्द्र से आठ कि0मी0 की दूरी पर स्थित है। रॉबर की गुफा एक खुबसूरत पिकनिक स्पॉट है। यहां प्रदर्शन पर प्रकृति की अजीबो गरीब घटनाओं में से एक है, पानी की एक धारा यहां भूमिगत हो जाती है और कुछ मीटर दूर फिर से दिखायी देतीहै। ये गुफा पहाड़ियों से घिरी हुई है और पहाड़ियों की शांति और शांति की तलाश करने वालों के लिए एक पलायन है। यहां नदियां गुफा के अंदर बहती हैं। यह स्थान एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है और अब इसका रखरखाव उत्तराखण्ड राज्य द्वारा किया जा रहा है। स्थानीय बस सेवाएं अनारवाला गांव तक उपलब्ध हैं, जहां से यह एक किलोमीटर की दूरी पर है, गुफा लगभग 600 मीटर लंबी है, जो दो मुख्य भागों में विभाजित है। गुफा में लगभग 10 मीटर की उच्चतम गिरावट है। मध्य भाग में किले की दीवार की संरचना है जो अब टूट चुकी है। यह दून घाटी के देहरा पठार पर एक समूह चूना पत्थर क्षेत्र में गठित एक अत्यंत संकीर्ण कण्ठ से बना है। रॉबर की गुफा गुच्छुपानी देहरादून उत्तराखण्ड एक प्राकृतिक गुफा है।

लच्छीवाला

साल के पेड़ों के बीच घिरा, लच्छीवाला आगंतुकों के लिए एक शांत और मजेदार प्रेमपूर्ण वातावरण उपलब्ध कराता है। प्रकृति के नजारों के अलावा सैलानी यहां के मानव निर्मित वाटर पूल में फन बाथ का मजा लेना पसंद करते हैं। सुसवा नदी से एक धारा कई तालों में होकर गुजरती है। लच्छीवाला जिसे अब नेचरपार्क के नाम से जाना जाता है, देहरादून के लोकप्रिय पिकनिक स्थलों में से एक है। इसके जंगल के बीच मानव निर्मित पानी के कुंड हैं, जिसमें से एक नदी बहती है। ग्रीष्मकाल के दौरान सैलानी पूल के ठंडे पानी में तैरने के लिए इस जगह पर जा सकते हैं। यह कुंड सुसवा नदी की एक धारा से भरा है।

यह इलाका अपनी हरी–भरी हरियाली के लिए भी जाना जाता है। कई प्रकृति प्रेमी इस जगह पर तैरने, ट्रेकिंग और बर्डवॉचिंग जैसी कई मजेदार गतिविधियों के लिए आते हैं। वास्तव में लच्छीवाला की वनस्पति पर्णपाती और साल के पेड़ों का मिश्रण है। साथ ही कई प्रकृति प्रेमी और एकांत साधक यहां शांति और खुशी की तलाश में आते हैं। यात्री यहां प्रकृति की महिमा का आनंद लेने आते हैं। इसी तरह कई लोग गर्मी में भीषण गर्मी से राहत पाने के लिए यहां आते हैं।

शांत पानी में मस्ती और मस्ती करने के लिए परिवार बच्चे और युवा भी यहां आते हैं। यहां कई मनोरंजक गतिविधियों का आनंद लिया जा सकता है जैसे तैराकी, जंगल के आसपास ट्रेकिग और बर्डवॉचिंग आदि। इसके पास ही लक्ष्मणसिद्व मंदिर भी स्थित है। इस स्थान से कोई भी इस मंदिर के दर्शन करने जा सकता है।

यह जगह शहर की हलचल से बहुत दूर है। तो आप भी आराम कर सकते हैं और ताजी हवा में सांस ले सकते हैं। कई शटर बग्स भी यहां प्रकृति की अद्वितीय सुंदरता को कैद करने के लिए आते हैं। लच्छीवाला एक लोकप्रिया पक्षी स्थल भी है। विभिन्न प्रजाति के पक्षी लच्छीवाला रेंज और सोंग नदी के किनारे भी मिलते हैं। यहां आप कई प्रवासी पक्षियों को भी देख सकते हैं।

यहाँ का दृश्य और यहां की जानकारी पाने के लिये आप यही से स्थानीय गाइड भी रख सकते हैं। गाइड आपको विशिष्ट प्रजातियों के पक्षियों को देखने का सही स्थान और वहां के बारे में सही जानकारी भी देगा।

आपको आपके वाहन की सुरक्षा हेतु पार्किंग भी बनायी गयी हैं जिसका शुल्क टूव्हीलर 10/रू0 और कार शुल्क 30/रू0, टैक्सी/ऑटो/विक्रम शुल्क 30 रू0, बस, ट्रैक्टर 60/रू0 शुल्क देना होगा।

❖ फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीयूट

वन अनुसंधान संस्थान (एफ.आर.आई.) देहरादून की जड़ें देश में वानिकी अनुसंधान को व्यवस्थित और नेतृत्व करने के लिए 1906 में स्थापित तत्कालीन शाही वन अनुसंधान संस्थान में हैं। इसका इतिहास न केवल भारत मे बल्कि पूरे भारतीय उपमहाद्वीपो में वैज्ञानिकवानिकी के विकास और विकास का पर्याय है। संस्थान ने देश में वन अधिकारियों और वन रेंजरों को भी प्रशिक्षण दिया और स्वतंत्रता के बाद इसे उपयुक्त रूप से वन अनुसंधान और कॉलेज के रूप में नामित किया गया। 1988 में एफआरआई और इसके अनुसंधान केंद्रों को पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार के तहत भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद के प्रशासनिक छात्र के तहत लाया गया था। शिक्षा का एक साझा कार्यक्रम प्रदान करके रक्षा और अर्ध–सैन्य कर्मियों सहित केंद्र सरकार के हस्तांतरणीय कर्मचारियों के बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करना है।

वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के क्षेत्र में एक प्रमुख संस्थान है। वन अनुसंधान संस्थान देहरादून को यूजीसी, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार की सिफारिश पर वर्ष 1991 में विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया था।

मिशनः–वन अनुसंधान संस्थान का मिशन विभिन्न विषयों में वानिकी और पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा देना है। वन अनुसांधन संस्थान विश्वविद्यायलय में उत्कृष्ट क्षेत्र अनुभव वाले उत्कृष्ट संकाय से सीखने का अवसर मिलता है। अकादमी को भारतीय वन्य जीव संस्थान, वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान, भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान आदि एमएससी और वन अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय में पीएचडी कार्यक्रमों को वानिकी, पर्यावरण और लकड़ी विज्ञान के हमेशा गतिशील क्षेत्र से निपटने के लिए अच्छी तरह से डिजाइन किया गया है।

जनपदान्तर्गत नई सोच, नये जोश के सफल उदाहरण :–

कृषि विभाग :– कृषि विभाग द्वारा कृषक उत्पादक समूहोंके माध्यम से कृषि में उद्यम शीलता, जैविक खेती को प्रोत्साहन, सेलर व्यय मीट कार्यक्रम, धान की नई प्रजाति का फसल प्रदर्शन, धानसह मछली पालन, तालाबों में एयरेटर्स की स्थापना, स्ट्राबेरी का उत्पादन, मनरेगा योजना से सिंचाई हेतु पाइप लाइनों का उपयोग, फल क्षेत्र विस्तार, संरक्षित खेती, किसान क्रेडिट कार्ड, किसाना क्लब कार्यक्रम, किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) का गठन, सरकार प्रायोजित कार्यक्रम (डीईडीएस, एनएलएम–ईडीईजी, एनपीओएफ,एसीएबीसी)आदि क्षेत्रों में सफल प्रयोग के रूप में कार्य करवाये गये हैं।

शिक्षा विभागः– शिक्षा विभाग द्वारा **PRAGATI PORTAL (Andriod Based Dropout Tracking Survillance Portal),** कैरियर मार्ग दर्शिका का प्रकाशन एवं वितरण, शिक्षा संचेतना अभियान, प्रोजेक्टर एवं

ई–लर्निंग सामग्री का वितरण, विद्यालयों को गोद लेना, विज्ञान पार्क की स्थापना आदि सफल प्रयोग किये जा रहे हैं।

चिकित्सा विभागः– चिकित्सा विभाग द्वारा टेली मेडिसिन की सुविधा, **samman Health Initiative,** निजी स्त्री रोग विशेषज्ञों द्वारा निशुल्क **ANC** सेवायें, टीकाकरण हेतु बुलावा पर्ची, **Tracking Device in Ultrasound Center,** बाल विकास विभाग द्वारा मोबाइल एन0आर0सी0 सैनेट्री नैपकिंग बैन्डिंग मशीनों की स्थापना, प्रोजेक्टर ई–आंगनबाड़ी रजिस्टर आदि क्षेत्रों में सफल प्रयोग करके सेवायें दी जा रही हैं।

अध्याय III

पलायन की स्थिति

इस अध्याय में, राज्य के विभिन्न ग्राम पंचायतों में किए गए सर्वेक्षण के आधार पर एकत्र किये गये आंकड़ों का विश्लेषण राज्य में पलायन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने के लिए प्रस्तुत किया गया है।

❖ मुख्य व्यवसाय

आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि राज्य के विभिन्न गांवों में रहने वाले लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है, तद्पोरान्त मजदूरी और सरकारी सेवा है। ग्राम पंचायत स्तर से प्राप्त आंकड़े, जनपद और राज्य औसत नीचे दी गई सारणी में प्रस्तुत किये गए है।

ग्राम पंचायत स्तर का मुख्य व्यवसाय (जनपद औसत)							
ग्राम पंचायतों का मुख्य व्यवसाय (लगभग प्रतिशत में)							
जनपद का नाम	मजदूरी	कृषि	उद्यान	डेरी	सरकारी सेवा	अन्य कार्य	योग
Dehradun	28.14	45.48	2.93	2.22	9.56	11.68	100.00

ग्राम पंचायत स्तर का मुख्य व्यवसाय (राज्य औसत)							
ग्राम पंचायतों का मुख्य व्यवसाय (लगभग प्रतिशत में)							
राज्य का नाम	मजदूरी	कृषि	उद्यान	डेरी	सरकारी सेवा	अन्य कार्य	योग
Uttarakhand	32.22	43.59	2.11	2.64	10.82	8.63	100.00

जनपद देहरादून द्वारा ग्राम पंचायतों में मुख्य व्यवसाय हेतु प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि **जनपद का राज्यान्तर्गत कृषि व्यवसाय में 04वाँ, मजदूरी में 10वाँ, सरकारी सेवा में 7वाँ, उद्यान में तीसरा तथा डेरी व्यवसाय में 7वाँ स्थान पर योगदान दिया जा रहा है।** आंकड़ों का विवरण निम्नवत ग्राफों में दर्शाया गया है।

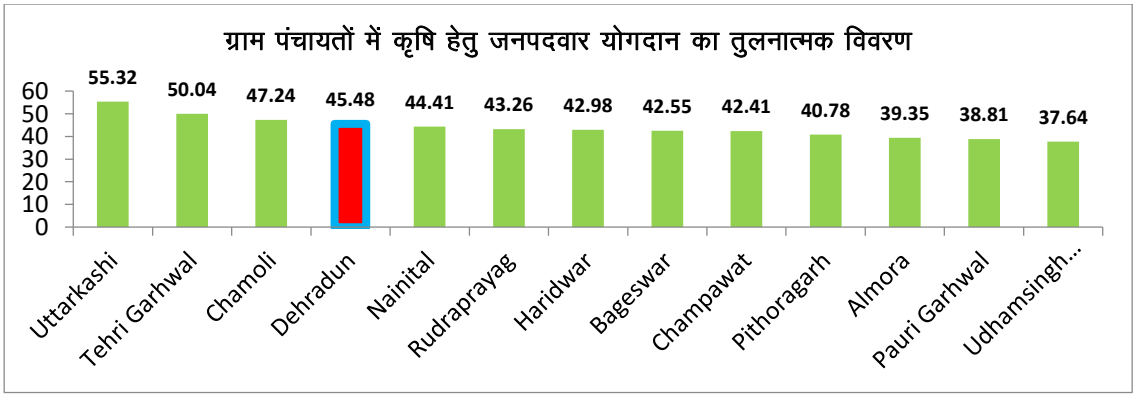

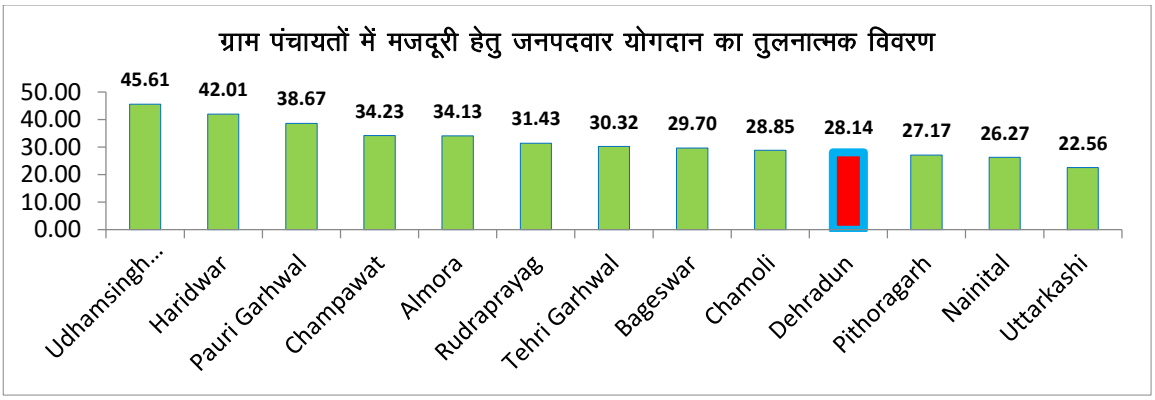
ग्राम पंचायतों में मजदूरी हेतु जनपदवार योगदान का तुलनात्मक विवरण
50.00
40.00
30.00
20.00
10.00
0.00
45.61
42.01
38.67
34.23
34.13
31.43
30.32
29.70
28.85
28.14
27.17
26.27
22.56
Udhamsingh...
Haridwar
Pauri Garhwal
Champawat
Almora
Rudraprayag
Tehri Garhwal
Bageswar
Chamoli
Dehradun
Pithoragarh
Nainital
Uttarkashi

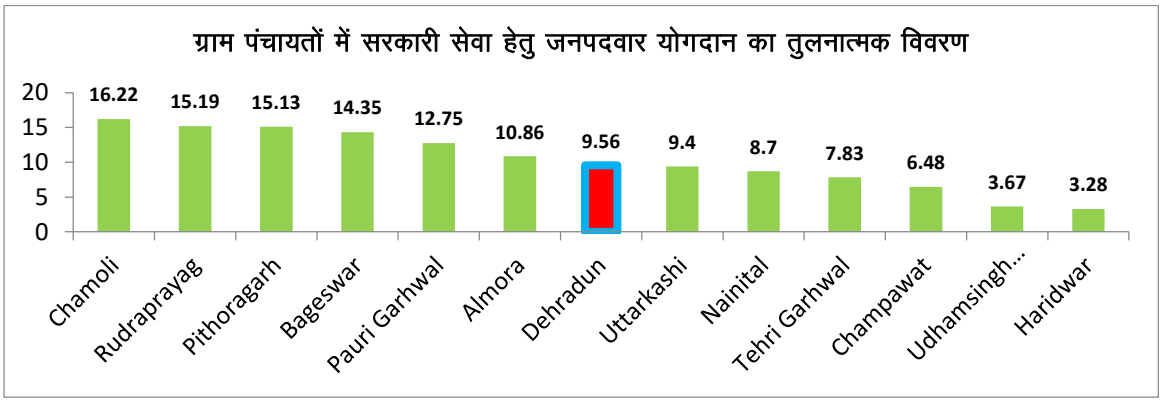
ग्राम पंचायतों में सरकारी सेवा हेतु जनपदवार योगदान का तुलनात्मक विवरण
20
15
10
5
0
16.22
15.19
15.13
14.35
12.75
10.86
9.56
9.4
8.7
7.83
6.48
3.67
3.28
Chamoli
Rudraprayag
Pithoragarh
Bageswar
Pauri Garhwal
Almora
Dehradun
Uttarkashi
Nainital
Tehri Garhwal
Champawat
Udhamsingh...
Haridwar

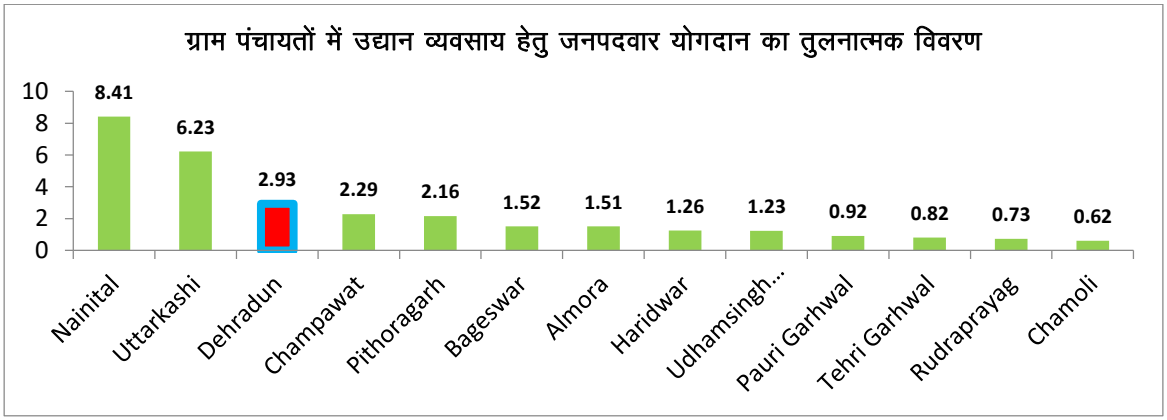
ग्राम पंचायतों में उद्यान व्यवसाय हेतु जनपदवार योगदान का तुलनात्मक विवरण
10
8
6
4
2
0
8.41
6.23
2.93
2.29
2.16
1.52
1.51
1.26
1.23
0.92
0.82
0.73
0.62
Nainital
Uttarkashi
Dehradun
Champawat
Pithoragarh
Bageswar
Almora
Haridwar
Udhamsingh...
Pauri Garhwal
Tehri Garhwal
Rudraprayag
Chamoli

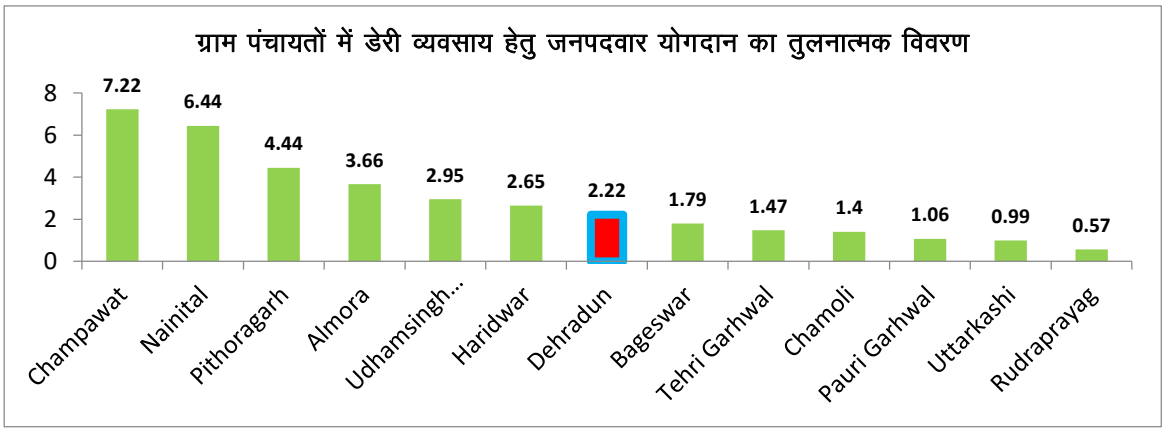
ग्राम पंचायतों में डेरी व्यवसाय हेतु जनपदवार योगदान का तुलनात्मक विवरण
8
6
4
2
0
7.22
6.44
4.44
3.66
2.95
2.65
2.22
1.79
1.47
1.4
1.06
0.99
0.57
Champawat
Nainital
Pithoragarh
Almora
Udhamsingh...
Haridwar
Dehradun
Bageswar
Tehri Garhwal
Chamoli
Pauri Garhwal
Uttarkashi
Rudraprayag

❖ स्थायी और अस्थायी पलायन

जनपद देहरादून के कुल 231 ग्राम पंचायतों में 25781 व्यक्तियों द्वारा विगत दस सालों में अस्थायी पलायन किया गया है, जिसमें सबसे अधिक विकासखण्ड कालसी के 107 ग्राम पंचायतों में 11399 व्यक्तियों द्वारा तथा सबसे कम सहसपुर विकासखण्ड के मात्र 04 ग्राम पंचायतों में 144 व्यक्तियों द्वारा अस्थायी पलायन किया गया, जबकि विकासखण्ड विकासनगर के कुल 26 ग्राम पंचायतों में 7397 व्यक्तियों द्वारा अस्थायी पलायन किया गया है जो कि नजदीकी कस्बों/शहरों की ओर रोजगार हेतु अस्थायी पलायन का द्योतक है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

पिछले 10 वर्षों में ग्राम पंचायतों से हुए अस्थायी पलायन का विकासखण्ड़वार विवरण

जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	ग्राम पंचायतों की कुल संख्या (जिन्होने पूर्ण रूपेण पलायन न किया हो/ घर में आना–जाना लगा रहता हो/अस्थाई रूप से रोजगार के लिए बाहर रहता हो)	पिछले 10 वर्षो में पलायन करने वाले कुल व्यक्तियों की संख्या (जिन्होने पूर्ण रूपेण पलायन न किया हो/ घर में आना–जाना लगा रहता हो/अस्थाई रूप से रोजगार के लिए बाहर रहता हो)
Dehradun	Kalsi	107	11399
Dehradun	Chakrata	59	3172
Dehradun	Raipur	26	3176
Dehradun	Vikasnagar	26	7397
Dehradun	Doiwala	9	493
Dehradun	Shaspur	4	144
Total IN District		**231**	**25781**
Total IN State		**6338**	**383726**

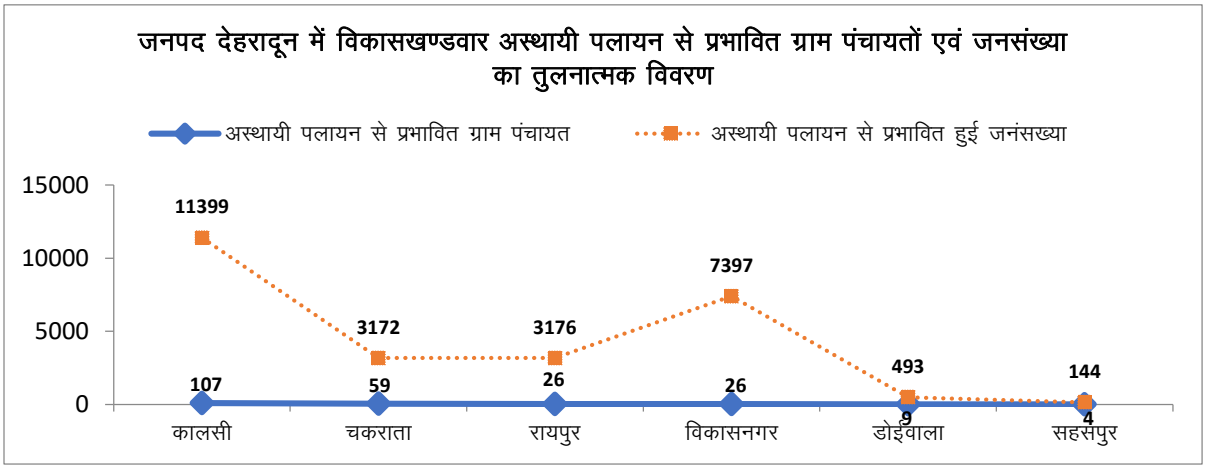

देहरादून जनपद में कुल 53 ग्राम पंचायतों में 2802 व्यक्तियों द्वारा पिछले दस सालों में स्थायी पलायन किया गया, जिसमें सबसे अधिक विकासखण्ड चकराता के 16 ग्राम पंचायतों में 611 व्यक्तियों द्वारा तथा सबसे कम विकासखण्ड डोईवाला के मात्र 04 ग्राम पंचायतों में 26 व्यक्तियों द्वारा स्थायी पलायन किया गया, जबकि विकासखण्ड रायपुर के कुल 08 ग्राम पंचायतों में ही 1657 व्यक्तियों द्वारा स्थायी पलायन किया जाना नजदीकी कस्बों/शहरों में शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी सुविधाओं की समुचित व्यवस्था में अभाव के कारण स्थायी पलायन की ओर इशारा करता है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

पिछले 10 वर्षों में ग्राम पंचायतों से हुए स्थायी पलायन का विकासखण्ड़वार विवरण			
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	ग्राम पंचायतों की कुल संख्या (जो पूर्ण रूप से पलायन कर चुके हो या अपनी जमीन बेच चुके हो/अथवा भूमि बंजर पड़ी हो/घरों पर ताले लगे हो/तथा बहुत कम गॉव आना होता हो)	पिछले 10 वर्षो में पूर्ण पलायन करने वाले कुल व्यक्तियों की संख्या (जो पूर्ण रूप से पलायन कर चुके हो या अपनी जमीन बेच चुके हो/अथवा भूमि बंजर पड़ी हो/घरों पर ताले लगे हो/तथा बहुत कम गॉव आना होता हो)
Dehradun	Chakrata	16	611
Dehradun	Vikasnagar	11	354
Dehradun	Raipur	8	1657
Dehradun	Kalsi	7	34
Dehradun	Shaspur	7	120
Dehradun	Doiwala	4	26
Total IN District		**53**	**2802**
Total IN State		**3946**	**118981**

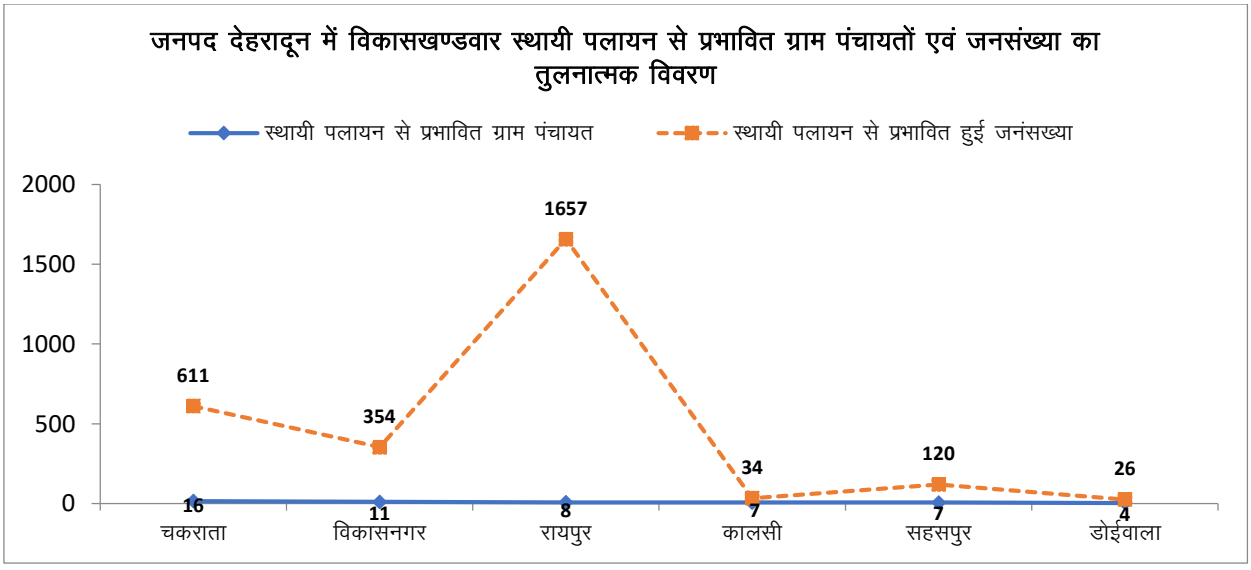

❖ पलायन के मुख्य कारण

पलायन का मुख्य कारण आजीविका/रोजगार, की समस्या के साथ–साथ शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी सुविधाओ की कमी है। जनपद देहरादून में आजीविका/रोजगार के अभाव के कारण 56.13% सबसे अधिक पलायन तथा 01.20% सबसे कम आधारभूत सुविधाओं की कमी के कारण हो रहा है, जिसमें रोजगार जैसी समस्या के कारण सबसे अधिक पलायन विकासखण्ड डोईवाला में 92.50%, चिकित्सा सुविधाओं में अभाव के कारण विकासखण्ड सहसपुर में 14.06% सबसे अधिक, शिक्षा व्यवस्था के कारण सबसे अधिक 19.02% विकासखण्ड चकराता में तथा कृषि भूमि में पैदावार की कमी के कारण सबसे अधिक 06.76% कालसी विकासखण्ड में पलायन हो रहा है। विस्तृत आंकड़े नीचे दी गई तालिका में प्रस्तुत हैं।

ग्राम पंचायतों से पलायन के मुख्य कारण का जनपद और विकासखण्ड में विवरण

ग्राम पंचायत से पलायन के कारण (लगभग प्रतिशत में)

जनपद	विकासखण्ड का नाम	आजीविका/ रोजगार की समस्या (प्रतिशत)	चिकित्सा सुविधा का आभाव (प्रतिशत)	शिक्षा सुवधिा का आभाव (प्रतिशत)	इन्फ्राटक्चर (सड़क, बिजली, पानी व अन्य का आभाव) (प्रतिशत)	कृषि भूमि में उत्पादकता/पैदावार की कमी (प्रतिशत)	परिवार/सगे संम्बन्धियों की देखा–देखी पलायन करना (प्रतिशत)	जंगली जानवरों के द्वारा कृषि को हानि पहुंचाने करने के कारण (प्रतिशत)	अन्य कोई विशेष कारण (प्रतिशत)	योग
Dehradun	Chakrata	59.69	6.85	19.02	0.83	0.47	0.19	0.08	12.86	100
Dehradun	Doiwala	92.50	2.50	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.00	100
Dehradun	Kalsi	42.76	4.36	11.48	0.06	6.76	1.09	1.48	32.00	100
Dehradun	Raipur	87.22	1.50	5.22	1.11	0.00	1.06	1.11	2.78	100
Dehradun	Shaspur	34.62	14.06	3.75	6.25	0.00	0.31	3.12	37.88	100
Dehradun	Vikasnagar	52.00	6.71	8.57	0.00	3.21	9.14	7.86	12.50	100

ग्राम पंचायतों से पलायन के मुख्य कारण का जनपद विवरण									
ग्राम पंचायत से पलायन के कारण (लगभग प्रतिशत में)									
जनपद	आजीविका / रोजगार की समस्या (प्रतिशत)	चिकित्सा सुविधा का आभाव (प्रतिशत)	शिक्षा सुविधा का आभाव (प्रतिशत)	इन्फ्राटक्चर (सड़क, बिजली, पानी व अन्य का आभाव) (प्रतिशत)	कृषि भूमि में उत्पादकता / पैदावार की कमी (प्रतिशत)	परिवार / सगे संम्बन्धियों की देखा–देखी पलायन करना (प्रतिशत)	जंगली जानवरों के द्वारा कृषि को हानि पहुंचाने करने के कारण (प्रतिशत)	अन्य कोई विशेष कारण (प्रतिशत)	योग
Dehradun	56.13	6.33	12.50	1.20	2.08	1.40	1.65	18.70	100
Uttarakhand	50.16	8.83	15.21	3.74	5.44	2.52	5.61	8.48	100

❖ **आयु वर्गवार पलायन :–** इस खण्ड में ग्राम पंचायतों से पलायन करने वालों की आयु का विश्लेषण किया गया है। आंकड़ों से स्पष्ट हुआ हैं कि लगभग 42 प्रतिशत पलायन 26 से 35 आयु वर्ग द्वारा किया गया है। जनपद देहरादून में आयु वर्ग हेतु प्राप्त पलायन के आंकड़ों से स्पष्ट होता है, कि जहाँ एक ओर जनपद में 25 साल से कम आयु वर्ग का लगभग 38.41% सबसे अधिक पलायन होता है, जिसमें विकासखण्ड कालसी द्वारा 52.87% के माध्यम से योगदान दिया गया है, वहीं दूसरी ओर 26 से 35 आयु वर्ग द्वारा जनपद में लगभग 34.47% की दर से पलायन में योगदान दिया जा रहा है, जिसमें विकासखण्ड डोईवाला का सबसे अधिक योगदान है अर्थात जनपद के इन विकासखण्ड़ो में रोजगार, शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसी ज्वलन्त समस्या के कारण जनपद के नजदीकी शहरों / कस्बों में पलायन की पुष्टि करती है। जनपद की आयु वर्गवार विस्तृत जानकारी नीचे तालिकाओं एवं ग्राफों में प्रदर्शित की गई है।

ग्राम पंचायतों से आयु वर्गवार पलायन का जनपद और विकासखण्ड़वार विवरण					
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	ग्राम पंचायत से पलायन करने वालों की आयु (लगभग प्रतिशत में)			
		25 साल से कम आयु वर्ग (वर्तमान में)	26 से 35 आयु वर्ग (वर्तमान में)	35 साल से अधिक आयु वर्ग (वर्तमान में)	योग
Dehradun	Chakrata	48.95	31.74	19.32	100
Dehradun	Doiwala	0.00	60.00	40.00	100
Dehradun	Kalsi	52.87	28.80	18.33	100
Dehradun	Raipur	29.33	53.00	17.67	100
Dehradun	Shaspur	31.00	13.31	55.69	100
Dehradun	Vikasnagar	25.09	44.36	30.55	100

ग्राम पंचायतों से आयु वर्गवार पलायन का जनपद विवरण				
जनपद का नाम	ग्राम पंचायत से पलायन करने वालों की आयु (लगभग प्रतिशत में)			
	25 साल से कम आयु वर्ग (वर्तमान में)	26 से 35 आयु वर्ग (वर्तमान में)	35 साल से अधिक आयु वर्ग (वर्तमान में)	योग
Dehradun	38.41	34.47	27.12	100
Uttarakhand	28.66	42.25	29.09	100

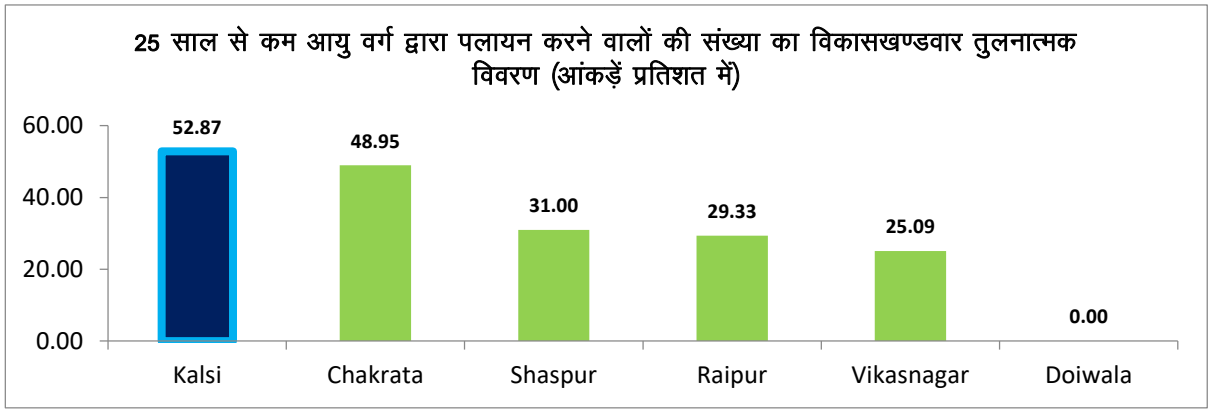

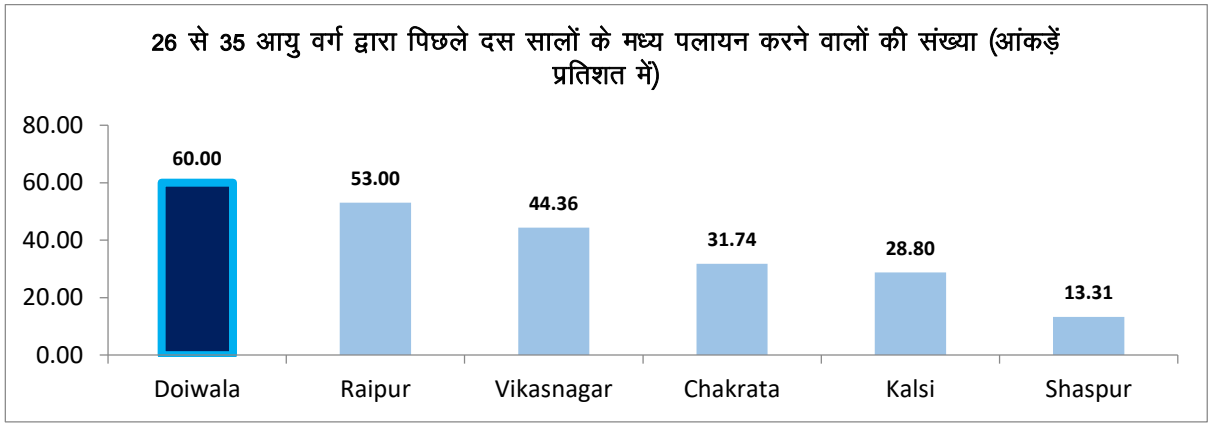

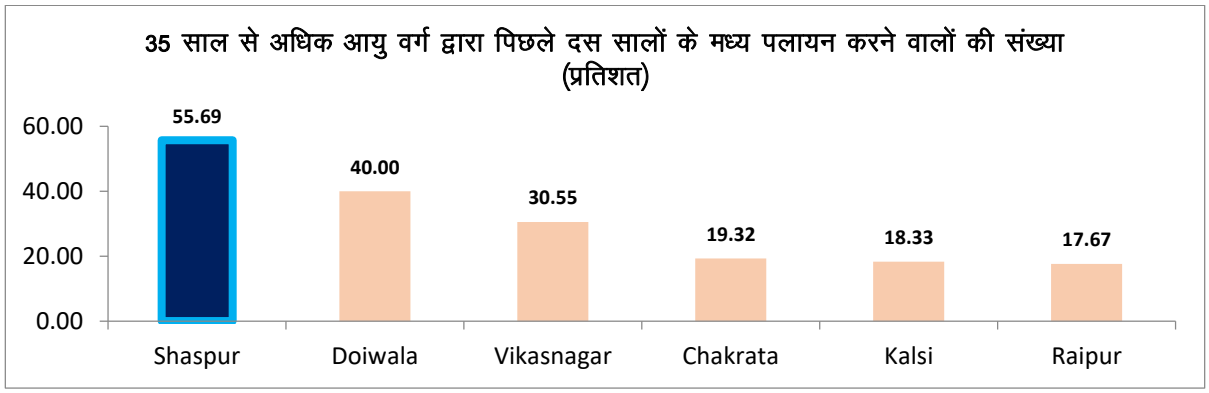

❖ पलायन के गंतव्य

ग्राम पंचायतों से हो रहे पलायन के गंतव्य के विश्लेषण कर सामने आये आंकड़ों को इस खण्ड़ में प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसमें स्पष्ट हुआ है कि जनपद के ग्राम पंचायतों से लगभग 35 प्रतिशत पलायन राज्य के अन्य जनपदों में है जबकि 28 प्रतिशत पलायन राज्य के बाहर हुआ है।

देहरादून जिले में पलायन के गन्तव्यों हेतु आंकड़ों से ज्ञात होता है कि नजदीकी कस्बों में सबसे अधिक पलायन विकासखण्ड डोईवाला में 90.00%, जनपद मुख्यालय में पलायन के आंकड़ों हेतु सबसे अधिक पलायन विकासखण्ड सहसपुर में 57.62% तथा राज्य के अन्य जनपदों, राज्य से बाहर एवं देष के बाहर जैसे गन्तव्यों में सबसे अधिक पलायन विकासखण्ड रायपुर में क्रमशः 29.40%, 46.40% व 04.20% की दर से हुआ है, अर्थात जनपद देहरादून के अन्तर्गत सबसे अधिक पलायन नजदीकी कस्बों में होने की पुष्टि होती है। आंकडों का विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

ग्राम पंचायत से हुए पलायन के गन्तव्यों का जनपद और विकासखण्ड़वार विवरण

जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	ग्राम पंचायत से पलायन कहाँ किया गया (लगभग प्रतिशत में)					
		नजदीकी कस्बों में	जनपद मुख्यालय	राज्य के अन्य जनपदों में	राज्य से बाहर	देश से बाहर	योग
Dehradun	Chakrata	75.22	22.48	1.46	0.85	0.00	100
Dehradun	Doiwala	90.00	0.00	5.00	5.00	0.00	100
Dehradun	Kalsi	66.53	26.71	2.88	3.88	0.00	100
Dehradun	Raipur	4.80	15.20	29.40	46.40	4.20	100
Dehradun	Shaspur	41.12	57.62	1.25	0.00	0.00	100
Dehradun	Vikasnagar	48.46	14.62	18.15	18.46	0.31	100

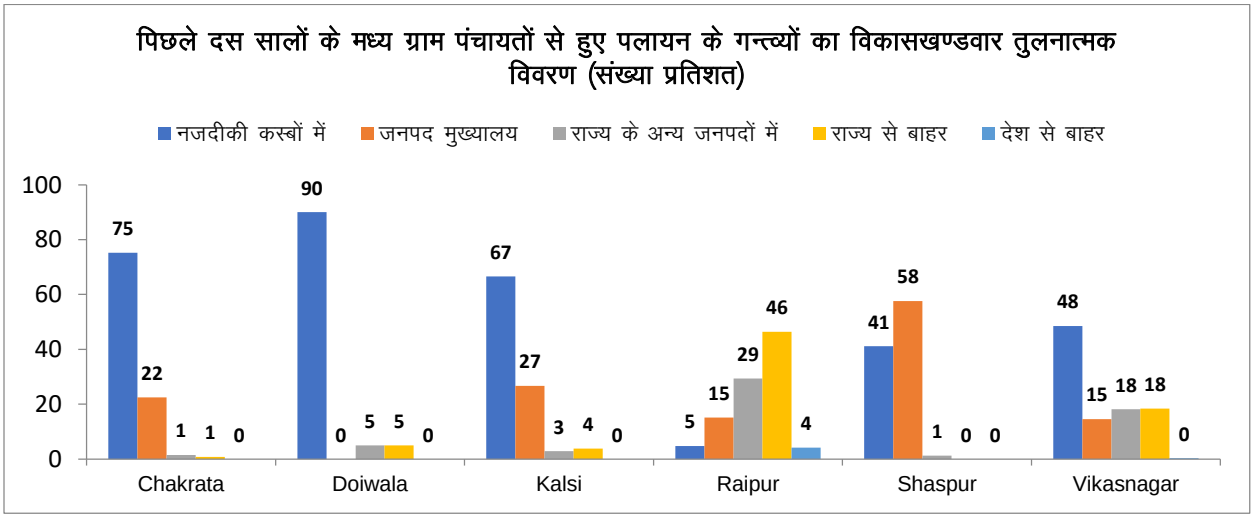

ग्राम पंचायत से हुए पलायन के गन्तव्यों का जनपद में विवरण						
जनपद का नाम	ग्राम पंचायत से पलायन कहॉ किया गया (लगभग प्रतिशत में)					
	नजदीकी कस्बों में	जनपद मुख्यालय	राज्य के अन्य जनपदों में	राज्य से बाहर	देश से बाहर	योग
Dehradun	57.12	23.67	8.08	10.46	0.67	100
Uttarakhand	19.46	15.18	35.69	28.72	0.96	100

❖ **वर्ष 2011 के बाद निर्जन ग्रामों की संख्या**

इस खण्ड में वर्ष 2011 के बाद निर्जन हुए राजस्व ग्रामों/तोकों/मजरों का विकासखण्ड वार विवरण प्रस्तुत किया गया है तथा जिनमें सड़क सुविधा का अभाव, बिजली अभाव, पेयजल का अभाव, सार्वजनिक स्वास्थ्य केंद्र (पीएचसी) उपलब्धता 1 किमी के अन्दर नहीं है, वाले ग्रामों का विवरण निम्न तालिकाओं के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

ग्राम पंचायत पर 2011 के बाद राज्य, जनपद व विकासखण्ड वार निर्जन हुए ग्रामों/तोकों की संख्या		
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	कुल राजस्व ग्राम /तोक (वर्तमान में)
Dehradun	Doiwala	1
Dehradun	Kalsi	1
Dehradun	Raipur	2
Dehradun	Shaspur	2
Dehradun	Vikasnagar	1
Total (Dehradun)		7
Total (state)		**734**

ग्राम पंचायत पर 2011 के बाद राज्य, जनपद और विकासखण्ड़ वार सड़क अभाव वाले ग्रामों/तोकों की संख्या		
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	कुल राजस्व ग्राम /तोक (वर्तमान में)
Dehradun	Shaspur	2
Dehradun	Vikasnagar	1
Total (Dehradun)		3
Total (state)		**482**

ग्राम पंचायत पर 2011 के बाद राज्य, जनपद और विकासखण्ड़ वार पेयजल का अभाव वाले ग्रामों/तोकों की संख्या		
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	कुल राजस्व ग्राम /तोक (वर्तमान में)
Dehradun	Raipur	2
Dehradun	Shaspur	2
Dehradun	Vikasnagar	1
Total (Dehradun)		5
Total (State)		**399**

ग्राम पंचायत पर 2011 के बाद राज्य, जनपद और विकासखण्ड़ वार सामुदायिक स्वास्थ्य केंन्द्र का अभाव वाले ग्रामों/तोकों की संख्या		
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	कुल राजस्व ग्राम /तोक (वर्तमान में)
Dehradun	Doiwala	1
Dehradun	Kalsi	1
Dehradun	Raipur	2
Dehradun	Shaspur	2
Dehradun	Vikasnagar	1
Total (Dehradun)		7
Total (state)		**660**

- **ऐसे ग्राम जहाँ अन्य दूसरे ग्रामों/कस्बों/तोकों से पिछले 10 वर्षों में लोग पलायन कर निवास कर रहें हैं :–**

यह खण्ड, जनपद और विकासखण्ड वार उन ग्रामों की संख्या का विवरण प्रस्तुत करता है, जहाँ पिछले 10 वर्षों में अन्य ग्रामों/शहर/कस्बों से पलायन कर इन ग्रामों में बस गये हैं।

ग्रामों की संख्या जिन ग्रामों में पिछलें 10 वर्षों में दूसरे ग्रामों/तोकों के लोग पलायन कर बसे हैं का राज्य, जनपद और विकासखण्ड वार विवरण		
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	कुल ऐसे गॉव जहॉ पिछले 10 वर्षो में अन्य गॉव/शहर/कस्बों से पलायन कर उस गॉव में आकर बसे हों
Dehradun	Chakrata	NA
Dehradun	Doiwala	52
Dehradun	Kalsi	6
Dehradun	Raipur	22
Dehradun	Shaspur	23
Dehradun	Vikasnagar	11
Total (Dehradun)		114
Total (State)		**850**

- **राजस्व ग्राम/तोक जहाँ वर्ष 2011 की जनगणना के बाद के बाद 50 प्रतिशत तक पलायन हुआ है :–**

यह भाग जनपद और विकासखण्ड वार राजस्व ग्रामों/तोकों की संख्या का विवरण प्रस्तुत करता है जिनमें वर्ष 2011 की जनगणना के बाद जनसंख्या 50 प्रतिशत कम हुई है। जिनमें सड़क सुविधा का अभाव, पेयजल का अभाव, सार्वजनिक स्वास्थ्य केंद्र (पीएचसी) उपलब्धता नहीं है।

2011 की जनगणना के बाद जनसंख्या 50 प्रतिशत कम हुई वाले राजस्व ग्रामों/तोकों की संख्या का राज्य, जनपद और विकासखण्ड वार विवरण		
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	कुल राजस्व ग्राम /तोक (वर्तमान में)
Dehradun	Kalsi	35
Dehradun	Shaspur	6
Dehradun	Vikasnagar	1
Total (Dehradun)		42
Total (state)		**565**

2011 की जनगणना के बाद जनसंख्या 50 प्रतिशत कम हुई वाले राजस्व ग्रामों/तोकों की संख्या जहाँ सड़क का अभाव है का राज्य, जनपद और विकासखण्ड वार विवरण		
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	कुल राजस्व ग्राम /तोक (वर्तमान में)
Dehradun	Kalsi	26
Dehradun	Shaspur	6
Total (Dehradun)		32
Total (State)		**367**

2011 की जनगणना के बाद जनसंख्या 50 प्रतिशत कम हुई वाले राजस्व ग्रामों/तोकों की संख्या जहाँ पेयजल का अभाव है का राज्य, जनपद और विकासखण्ड वार विवरण		
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	कुल राजस्व ग्राम /तोक (वर्तमान में)
Dehradun	Shaspur	4
Total (Dehradun)		4
Total (State)		**203**

2011 की जनगणना के बाद जनसंख्या 50 प्रतिशत कम हुई वाले राजस्व ग्रामों/तोकों की संख्या जहाँ सामुदायिक स्वास्थ्य केंन्द्र का अभाव है का राज्य, जनपद और विकासखण्ड वार विवरण		
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	कुल राजस्व ग्राम /तोक (वर्तमान में)
Dehradun	Kalsi	34
Dehradun	Shaspur	5
Dehradun	Vikasnagar	1
Total (Dehradun)		40
Total (State)		**510**

कोविड–19 के प्रकोप के दौरान राजय में लौटे प्रवासी–आंकड़े एवं विष्लेषण
(मार्च 2020 तक)

जनपद पौड़ी में विकासखण्डवार वापस आये प्रवासियों की संख्या

क्र.सं.	जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	प्रवासियों की संख्या
1	पौड़ी	दुगड्डा	2236
2		कोट	3395
3		पौड़ी	2930
4		द्वारीखाल	3611
5		एकेश्वर	4272
6		यमकेश्वर	3588
7		पावों	3841
8		पोखड़ा	2573
9		जयहरीखाल	3310
10		रिखणीखाल	4408
11		खिर्सू	1815
12		बीरोंखाल	7759
13		कल्जीखाल	3563
14		नैनीडाण्डा	5523
15		थलीसैंण	7616
योग		**पौड़ी**	**60440**

जनपद पौड़ी में वापस आये प्रवासियों के वापसी का विकासखण्डवार विवरण

क्र.सं.	जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	जनपद से जनपद में	उत्तराखण्ड के अन्य जनपदों से	भारत के अन्य राज्यों से	विदेशों से	योग
1	पौड़ी	दुगड्डा	6	794	1433	3	2236
2		कोट	5	870	2510	0	3395
3		पौड़ी	63	914	1942	11	2930
4		द्वारीखाल	134	1143	2312	22	3611
5		एकेश्वर	176	119	3969	8	4272

6		यमकेश्वर	79	1312	2177	20	3588
7		पावों	65	827	2948	1	3841
8		पोखड़ा	74	1256	1243	0	2573
9		जयहरीखाल	232	550	2528	0	3310
10		रिखणीखाल	44	615	3742	7	4408
11		खिर्सू	51	623	1138	3	1815
12		बीरोंखाल	192	1421	6145	1	7759
13		कल्जीखाल	2	655	2906	0	3563
14		नैनीडाण्डा	25	1090	4403	5	5523
15		थलीसैंण	123	1811	5677	5	7616
योग		**पौड़ी**	**1271**	**14000**	**45073**	**86**	**60440**

जनपद पौड़ी में वापस आये प्रवासियों के वापसी का जनपदवार विवरण

क्र0स0	जनपद का नाम	जनपद से जनपद में	उत्तराखण्ड़ के अन्य जनपदों से	भारत के अन्य राज्यों से	विदेशों से	योग
1	पौड़ी	1271	14000	45073	86	60440

उत्तराखण्ड़ के जनपदों में आये प्रवासियों का जनपद़वार एवं पेशेवर विवरण

क्र0स0	जनपद का नाम	सरकारी क्षेत्र	प्राइवेट नौकरी एवं आतिथ्य क्षेत्र	पण्डिताई	तकनीकी	गृहणी	विद्यार्थी	मजदूर	बेरोजगार	स्वरोजगार	अन्य	योग
1	अल्मोड़ा	724	33002	2	47	2052	1920	176	26	278	5557	43784
2	नैनीताल	657	4102	15	106	925	945	720	104	144	1932	9650
3	पिथौरागढ़	85	2957	0	10	214	249	1464	3	55	414	5451
4	चम्पावत	203	8749	31	100	825	969	599	2286	654	681	15097
5	बागेश्वर	68	953	0	81	215	230	8	1	361	8	1925
6	पौड़ी	983	27772	70	102	6822	7301	515	107	375	16393	60440
7	चमोली	47	4077	1	84	310	352	48	0	53	905	5877
8	देहरादून	52	1258	14	10	186	219	209	0	87	219	2254

9	हरिद्वार	7	833	0	84	33	16	1767	78	103	215	3136
10	उत्तरकाशी	3	13866	2	242	0	1341	0	167	287	3497	19405
11	टिहरी	694	10412	213	237	1738	2799	388	5	395	2361	19242
12	रूद्रप्रयाग	120	4813	0	0	707	665	71	143	52	1085	7656
13	ऊधमसिह नगर	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	NA	21958
योग	**उत्तराखण्ड़**	**3643**	**112794**	**348**	**1103**	**14027**	**17006**	**5965**	**2920**	**2844**	**33267**	**215875**
प्रतिशत	**उत्तराखण्ड़**	**1.90%**	**58.17%**	**0.20%**	**0.60%**	**7.20%**	**8.80%**	**3.10%**	**1.50%**	**1.50%**	**17.00%**	**100%**

कोविड–19 महामारी के कारण राज्य में लौटे प्रवासियों की आजीविका के मुख्य स्रोत का विश्लेषण एवं सिफारिशें (आंकड़े एवं विश्लेषण, सितम्बर 2020 तक)

जनपद पौड़ी में विकासखण्डवार वापस आये प्रवासियों की संख्या एवं पुनः पलायन कर गए प्रवासियों की संख्या का विवरण

क्र.सं	जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	कोविड–19 महामारी के कारण विकासखण्ड में लौटे प्रवासियों की संख्या	विकास खण्ड में लौटे प्रवासियों में से माह सितम्बर 2020 अन्त तक पुनः पलायन कर गए प्रवासियों की संख्या
1	पौड़ी	दुगड्डा	3444	301
2		कोट	5127	511
3		पौड़ी	4853	276
4		द्वारीखाल	7107	2165
5		एकेश्वर	5360	265
6		यमकेश्वर	4250	138
7		पावों	5571	2512
8		पोखड़ा	6007	2225
9		जयहरीखाल	4833	354
10		रिखणीखाल	6996	674
11		खिर्सू	3028	237
12		बीरोंखाल	12443	850
13		कल्जीखाल	7109	363
14		नैनीडाण्डा	9288	1309
15		थलीसैंण	9663	2921
योग		**पौड़ी**	95079	15101

जनपद पौड़ी में रूके शेष लौटे प्रवासियों की वर्तमान आय का मुख्य स्रोत (लगभग प्रतिशत में)					
क्र0स0	जनपद का नाम	जनपद पौड़ी में रूके शेष लौटे प्रवासियों की वर्तमान आय का मुख्य स्रोत (लगभग प्रतिशत में)			
		कृषि	मनरेगा	स्वरोजगार	अन्य
7	पौड़ी	22%	53%	7%	18%
उत्तराखण्ड		**33%**	**38%**	**12%**	**17%**

जनपद पौड़ी के विकासखण्डों में रूके शेष लौटे प्रवासियों की वर्तमान आय का मुख्य स्रोत (लगभग प्रतिशत में)

क्र.सं	जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	विकासखण्ड में रूके शेष लौटे प्रवासियों की वर्तमान आय का मुख्य स्रोत (लगभग प्रतिशत में)			
			कृषि	मनरेगा	स्वरोजगार	अन्य
1	पौड़ी	दुगड्डा	12%	70%	3%	15%
2		कोट	25%	60%	5%	10%
3		पौड़ी	20%	65%	5%	10%
4		द्वारीखाल	16%	59%	5%	20%
5		एकेश्वर	22%	43%	15%	20%
6		यमकेश्वर	45%	50%	3%	2%
7		पाबो	12%	32%	20%	36%
8		पोखड़ा	32%	45%	9%	14%
9		जयहरीखाल	15%	60%	5%	20%
10		रिखणीखाल	20%	60%	5%	15%
11		खिर्सू	18%	67%	8%	7%
12		बीरोंखाल	10%	20%	10%	60%
13		कल्जीखाल	20%	65%	5%	10%
14		नैनीडाण्डा	25%	50%	5%	20%
15		थलीसैंण	33%	52%	7%	8%
योग		**पौड़ी**	22%	53%	7%	18%

अध्याय IV

ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु जनपद देहरादून में विभागों द्वारा संचालित कार्यक्रमों का विश्लेषण

ग्राम्य विकास

जनपद देहरादून में कुल 401 ग्राम पंचायतें हैं, जिनमें ग्राम विकास विभाग द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक–आर्थिक विकास को सुदृढ़ करने के लिए महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), मेरा गांव मेरी सड़क योजना, दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना, पी0एम0जी0एस0वाई0, सांसद निधि तथा विधायक निधि जैसी कई योजनाओं का सम्पादन किया जाता है, जिनके आंकड़ों का विश्लेषण निम्नवत प्रस्तुत किये जा रहे हैं :–

➢ महात्मा गांधी नरेगा

महात्मा गाँधी नरेगा योजना के आंकड़ों का अध्ययन से पूर्व जनपद के 06 विकासखण्डों में सम्मिलित ग्राम पंचायत की संख्या को देखे तो ज्ञात होता है कि रायपुर और डोईवाला विकासखण्ड सबसे छोटे तथा चकराता एवं कालसी सबसे बडे विकासखण्ड हैं, किन्तु वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या में विकासखण्ड डोईवाला और सहसपुर सबसे बडे हैं अर्थात जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन नजदीकी शहरी क्षेत्रों में होने की पुष्टि होती हैं जिसका विवरण निम्नवत ग्राफों के माध्यम से भी समझा जा सकता है।

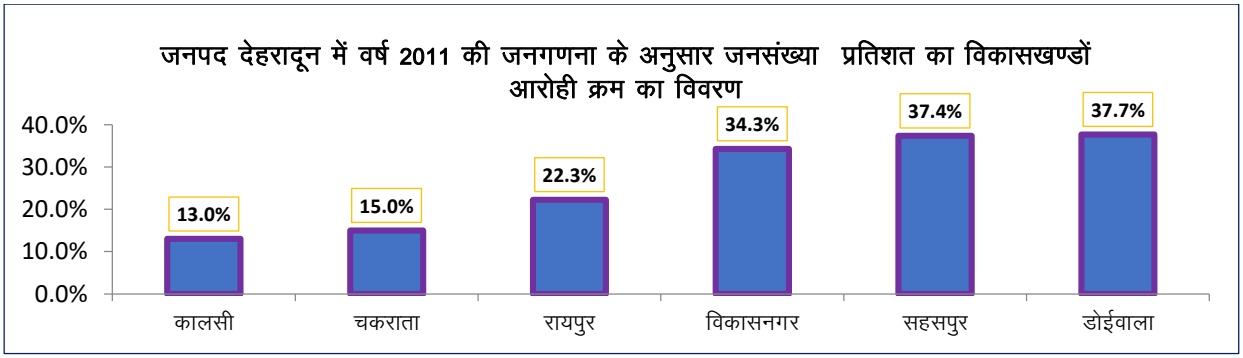

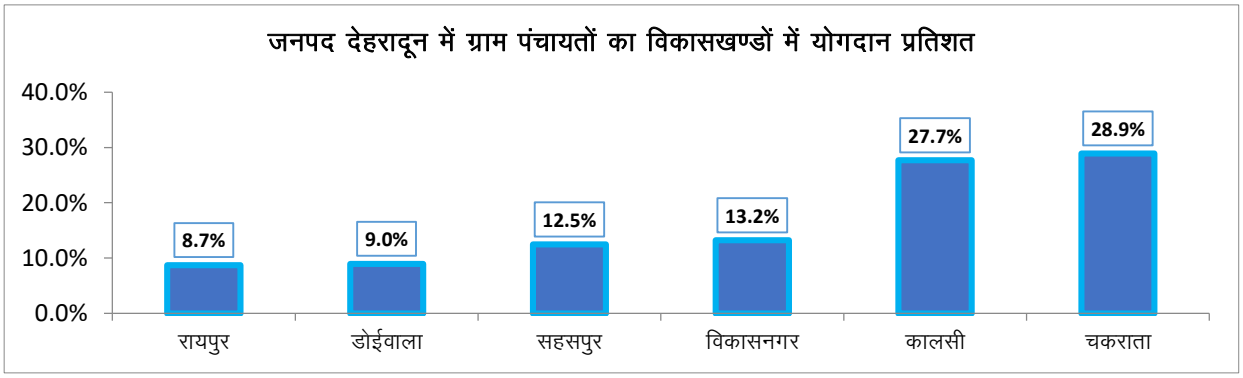

❖ **जॉबकार्ड :–** महात्मा गाँधी नरेगा योजना का देहरादून जनपद के लिए विश्लेषण विकासखण्डवार निष्क्रीय जॉबकार्डों के अध्ययन के बिना अधूरा है, जहाँ एक ओर जनपद में कुल 73774 जारी किये गये जॉबकार्डों में से अभी लगभग लगभग 36% जॉबकार्ड निष्क्रीय हैं, वहीं दूसरी ओर निष्क्रीय जॉबकार्डों के अध्ययन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि पर्वतीय विकासखण्डों की अपेक्षा मैदानी विकासखण्डों में निष्क्रीय जॉबकार्डों का प्रतिशत अधिक है अर्थात जनपद में 36% जॉबकार्ड काम करने के लिए मांग ही नहीं कर रहें हैं या 36% जॉबकार्ड धारकों को महात्मा गाँधी नरेगा योजना में काम के लिए डिमाण्ड करने की प्रक्रिया की जानकारी नहीं है। जिसमें विकासनगर तथा सहसपुर विकासखण्डों की स्थिति में सुधार की आवश्यकता है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

जॉबकार्डों का विकासखण्डवार विवरण				
विकासखण्ड	**जारी की गई जॉबकार्ड की कुल संख्या**	**सक्रिय जॉबकार्ड की कुल संख्या**	**कुल निष्क्रीय जॉबकार्ड**	**निष्क्रीय जॉबकार्ड का प्रतिशत**
विकासनगर	13245	6059	-7186	-54.25%
सहसपुर	11187	5309	-5878	-52.54%
डोईवाला	15048	8468	-6580	-43.73%
रायपुर	4068	3118	-950	-23.35%
चकराता	16251	12756	-3495	-21.51%
कालसी	13975	11710	-2265	-16.21%
जनपद	**73774**	**47420**	**-26354**	**-35.72%**

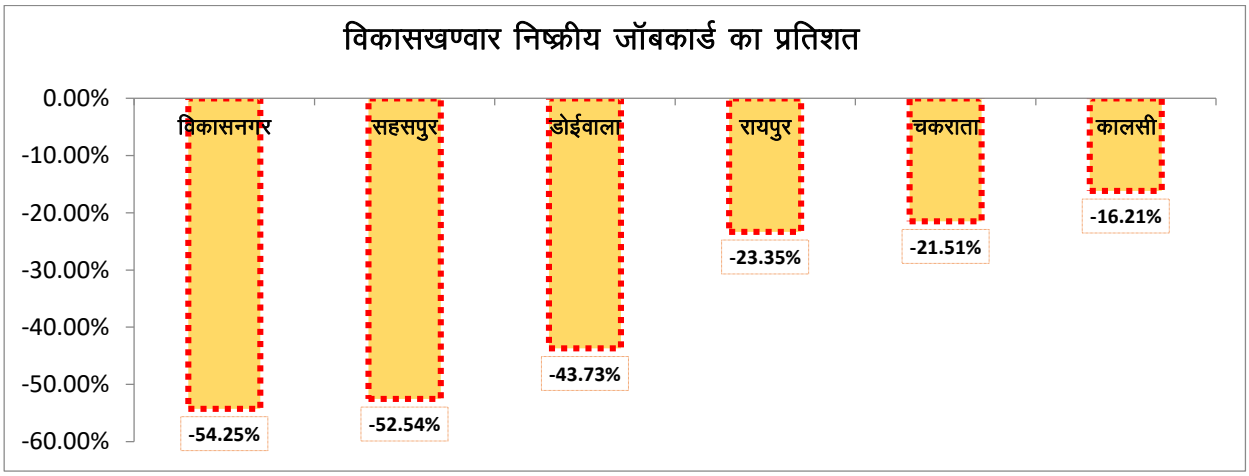

मनरेगा में पंजीकृत श्रमिक :– देहरादून जनपद के लिए महात्मा गाँधी नरेगा योजना अन्तर्गत कुल 118795 श्रमिक पंजीकृत हुए हैं, जिसमें से अभी लगभग 47% श्रमिक काम की मांग ही नहीं करते। जिसमें सबसे अधिक विकासखण्ड सहसपुर तथा सबसे कम विकासखण्ड कालसी द्वारा योगदान दिया जा रहा है। विभाग को निष्क्रीय जॉबकार्ड एवं काम की मांग न करने वाले श्रमिकों के लिए सघन सर्वेक्षण करते हुए इन

आंकड़ों को सन्तुलित करना चाहिए, ताकि वास्तविक जॉबकार्ड धारकों एवं श्रमिकों को चिह्नित करते हुए सूचीवद्व किया जा सके। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

जॉबकार्डों में पंजीकृत श्रमिकों के सापेक्ष निष्क्रीय श्रमिकों का विकासखण्डवार प्रतिशत विवरण				
विकासखण्ड	श्रमिकों की कुल संख्या	सक्रिय श्रमिकों की कुल संख्या	निष्क्रीय श्रमिकों की कुल संख्या	निष्क्रीय श्रमिकों का प्रतिशत
सहसपुर	19672	7840	-11832	-60.15%
विकासनगर	20944	8398	-12546	-59.90%
डोईवाला	21580	10416	-11164	-51.73%
रायपुर	8272	4889	-3383	-40.90%
चकराता	30025	18056	-11969	-39.86%
कालसी	18302	13817	-4485	-24.51%
जनपद	**118795**	**63416**	**-55379**	**-46.62%**

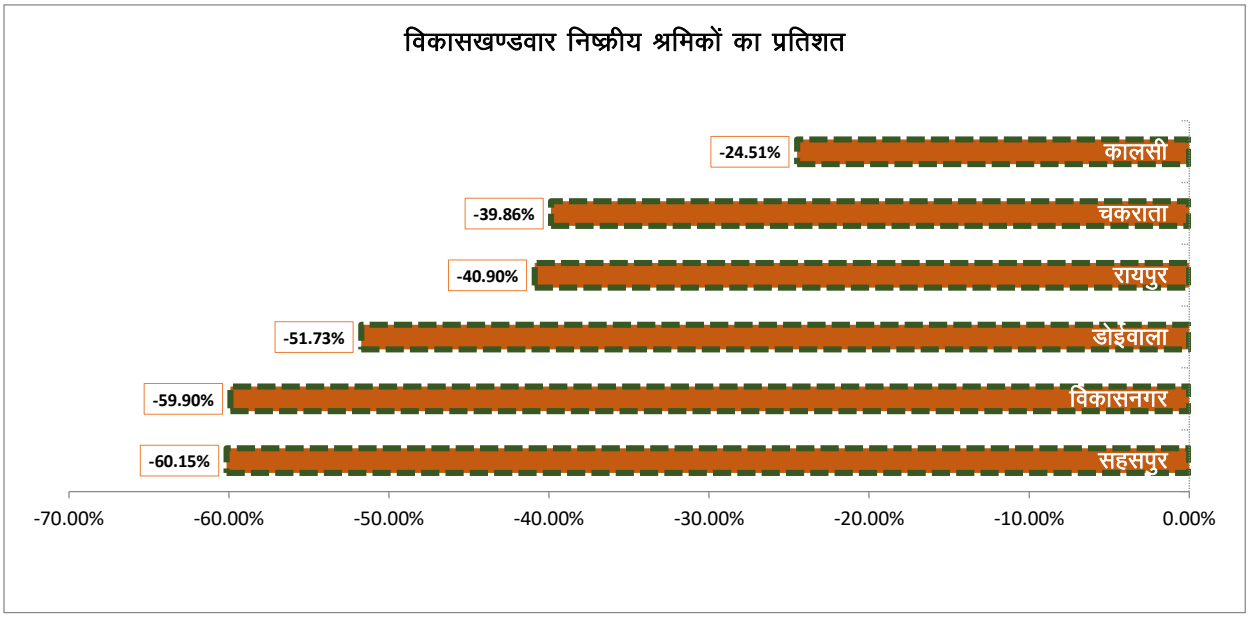

➢ **सृजित मानव दिवस :–** विकास विभाग द्वारा विगत वर्ष 2017–18 से वर्ष 2019–20 के मध्य महात्मा गाँधी नरेगा के अन्तर्गत सृजित मानव दिवस हेतु आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि पर्वतीय विकासखण्डों की अपेक्षा मैदानी विकासखण्डों में विगत चार वर्शों के दौरान सृजित मानव दिवस के आंकडें कम प्राप्त हुए अर्थात इन विकासखण्डों में महात्मा गांधी नरेगा के अन्तर्गत पंजीकृत जॉबकार्डों में पंजीकृत श्रमिकों की रूचि है ही नहीं, क्योंकि शहरी क्षेत्रों में स्थानीय रूप में देय हो रही मजदूरी दर मनरेगा मजदूरी दर से कई अधिक है। राज्य सरकार को पर्वतीय एवं शहरी क्षेत्रों के लिए अलग–अलग मजदूरी देय किये जाने हेतु प्रस्ताव भारत सरकार को प्रेशित करना चाहिए। जिससे आगामी समय में पर्वतीय क्षेत्रों से हो रहे पलायन पर काफी हद तक अंकुश लगेगा। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

सृजित मानव दिवस का विकासखण्डवार एवं वर्षवार तुलनात्मक विवरण						
वर्ष / विकासखण्ड	2020–21	2019–20	2018–19	2017–18	विगत चार में सृजित कुल मानव दिवस	कुल सृजित मानव दिवस (प्रतिशत में)
रायपुर	143771	74040	73747	100710	392268	6.65%
सहसपुर	183370	82810	114561	112213	492954	8.36%
विकासनगर	219196	77072	117777	141681	555726	9.43%
डोईवाला	290375	194427	291150	185023	960975	16.30%
चकराता	451525	255215	451529	464572	1622841	27.53%
कालसी	647118	276524	404254	542065	1869961	31.72%
जनपद	**1935355**	**960088**	**1453018**	**1546264**	**5894725**	**100%**

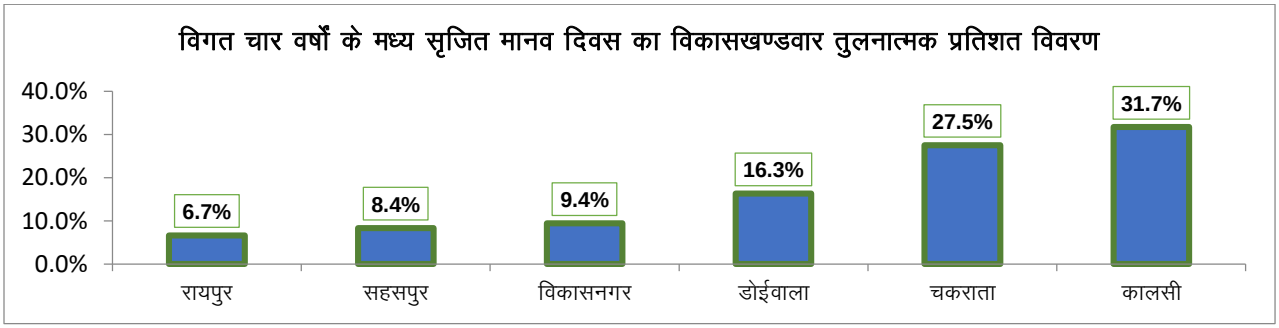

❖ **महिला सृजित मानव दिवस :–** विकासखण्ड कालसी एवं चकराता में सक्रीय जॉबकार्ड, सक्रीय श्रमिक तथा कुल सृजित मानव दिवस हेतु आंकड़ों का अन्य विकासखण्डों की अपेक्षा बहुत अधिक रहना, तथा महिलाओं की भागीदारी में कम हो जाना इस बात की ओर संकेत करता है कि पर्वतीय क्षेत्रों में महिलाओं को रोजगार उपलब्ध होने में कमी है या महिलाओं को कार्य के लिए मांग करने हेतु जानकारी का अभाव प्रकट होता है। विभाग को उक्त अभाव को दूर करने के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर रोजगार दिवस मनाने के प्राविधान को दृढ़ता से लागू करने की कार्ययोजना तैयार की जाती है तो जनपद के विकासखण्डों में महात्मा गांधी नरेगा के अन्तर्गत महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि होगी जिससे ग्रामीण क्षेत्रों से हो रहे पलायन पर भी अंकुश लग पायेगा अर्थात मैदानी क्षेत्रों के विपरीत पर्वतीय क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी में कमी आई। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

महिलाओं द्वारा सृजित मानव दिवस का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण (प्रतिशत में)					
वर्ष / विकासखण्ड	2020–21	2019–20	2018–19	2017–18	विगत तीन वर्षों के मध्य महिलाओं द्वारा औसत सृजित मानव दिवस
कालसी	22.46	24.13	21.45	22.64	**22.67**
चकराता	52.54	25.47	24.74	25.84	**32.15**
विकासनगर	34.85	36.85	39.25	45.98	**39.23**

रायपुर	42.23	39.61	40.21	38.62	**40.17**
डोईवाला	53.1	49.65	45.14	46.51	**48.60**
सहसपुर	48.14	47.21	48.85	50.73	**48.73**
जनपद	**42.22**	**37.15**	**36.61**	**38.39**	**38.59**

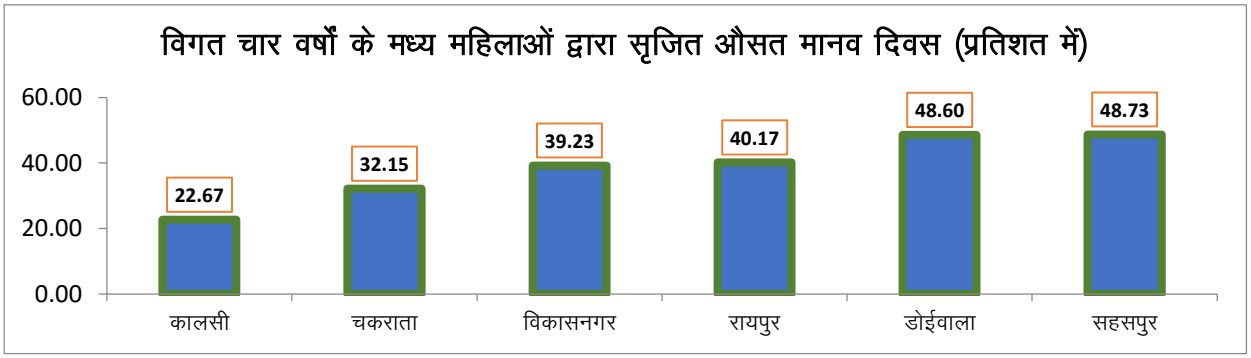

➢ **प्रति परिवार रोजगार उलब्धता के औसत दिन :–** उल्लिखित मद में विभाग द्वारा जनपद के अन्तर्गत विगत चार वर्षों के मध्य प्रति परिवार लगभग 52% दिनों का ही औसत रोजगार ही उपलब्ध करवाया गया जिसमें विकासखण्ड चकराता द्वारा सबसे कम 46.09% दिनों का ही औसत रोजगार प्रति परिवार को दिया गया जबकि जनपद के उक्त विकासखण्ड के अन्तर्गत सबसे अधिक 22% जाबकार्ड पंजीकृत है। विभाग को औसत रोजगार दिवस बढ़ाने के लिए जॉबकार्ड धारकों को अधिक से अधिक मांग करने के लिए जागरूक करने की रणनीति तैयार करनी चाहिए जिसके पश्चात ग्रामीणों की आय में भी वृद्धि होगी। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफों में दर्शाया गया है।

प्रति परिवार को उपलब्ध करवाये गये औसत रोजगार के दिनों का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण (प्रतिशत में)

वर्ष / विकासखण्ड	2020–21	2019–20	2018–19	2017–18	विगत चार वर्षों के मध्य प्रति परिवार को उपलब्ध करवाये गये औसत दिन
चकराता	48.98	34.96	51.66	48.76	46.09
रायपुर	56.51	41.43	46.68	46.99	47.90
विकासनगर	57.14	36.98	50.31	55.65	50.02
सहसपुर	59.5	50.04	57.42	52.81	54.94
कालसी	64.22	42.64	54.04	61.65	55.64
डोईवाला	51.38	55.77	64.46	55.70	56.83
योग जनपद	**56.29**	**43.64**	**54.10**	**53.59**	**51.90**

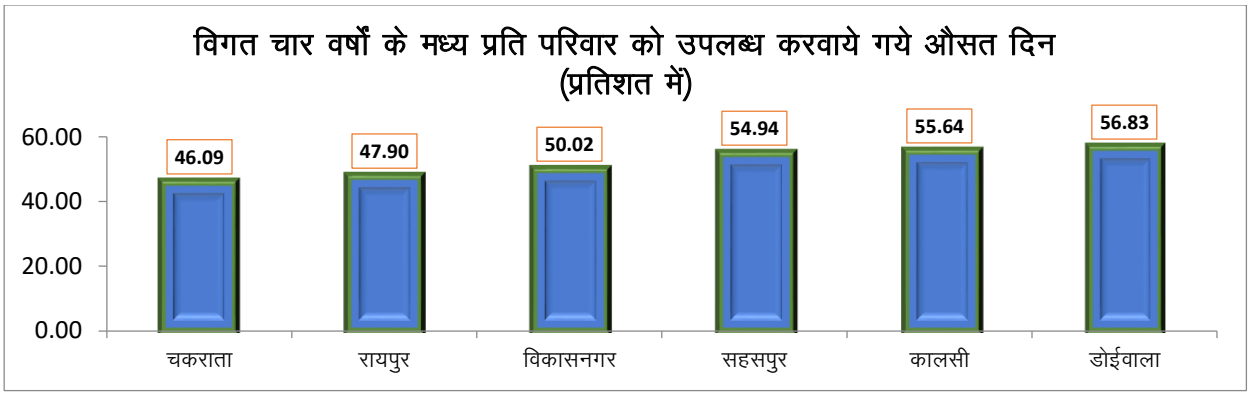

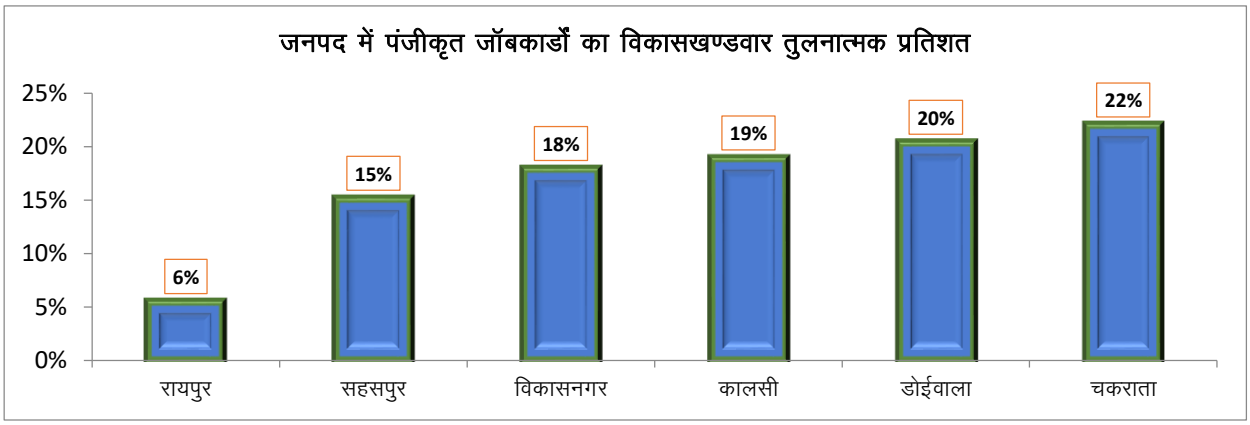

➢ **100 दिन का रोजगार प्राप्त करने वाले परिवार :–** विभाग द्वारा विगत चार वर्षों के दौरान औसत 497 परिवारों को ही 100 दिन का रोजगार उपलब्ध करवाया गया, जो कि बहुत न्यूनतम है, जिसमें पर्वतीय विकासखण्डों के सापेक्ष मैदानी विकासखण्ड सबसे पीछे रहे अर्थात मैदानी क्षेत्रों में महात्मा गांधी नरेगा पर निर्भरता की कमी तो है ही, किन्तु पर्वतीय विकासखण्डों में भी अपेक्षाकृत बहुत कम है। विभाग को 100 दिन के आंकड़ें को पूरा करने के लिए सक्रीय जॉबकार्डों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए मस्ट्रोल निकालने की प्रक्रिया में सुधार करना चाहिए। आंकड़ों को निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

100 दिन का रोजगार प्राप्त करने वाले परिवारों का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण					
वर्ष / विकासखण्ड	2020–21	2019–20	2018–19	2017–18	विगत चार वर्षों के मध्य 100 दिन का रोजगार प्राप्त करने वाले परिवारों की संख्या
विकासनगर	518	51	168	61	200
रायपुर	475	87	139	173	219
सहसपुर	633	134	342	173	321
डोईवाला	948	403	855	579	696
चकराता	881	252	882	773	697
कालसी	1590	198	588	1018	849
योग जनपद	**841**	**188**	**496**	**463**	**497**

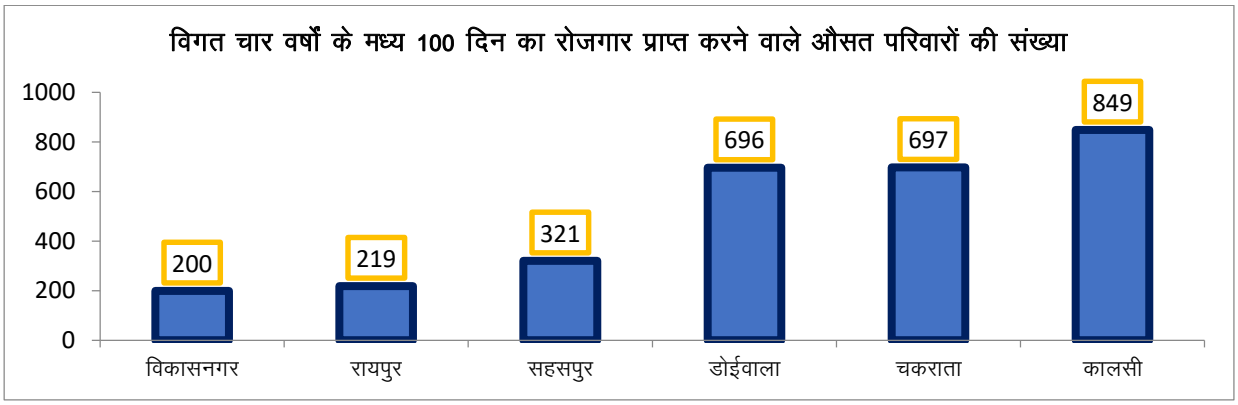

❖ **काम करने वाले परिवार :–** मनरेगा में काम करने वाले कुल परिवार हेतु विगत चार वर्षों के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जनपद के सभी विकासखण्ड में पंजीकृत कुल जॉबकार्डों के सापेक्ष काम की डिमाण्ड/काम करने वाले परिवारों की संख्या लगभग 40% है, जिसमें निचले पायदान में विकासखण्ड सहसपुर और विकासनगर द्वारा योगदान दिया गया अर्थात जॉबकार्ड धारकों द्वारा काम की मांग ही नहीं की जा रही है, अर्थात महात्मा गांधी नरेगा, रोजगार उपलब्ध कराने एवं आजीविका में सुधार लाने के लिए कोई स्थिर उपाय नहीं है। योजना में 14 दिनों के मस्ट्रोल निर्गत करने के स्थान पर जॉबकार्ड धारक द्वारा मांग किये गये दिनों के अनुसार मस्ट्रोल निर्गत किये जाने का प्राविधान किया जाना चाहिए। आंकड़ें निम्नवत तालिकाओं में प्रदर्शित किये गये हैं।

काम करने वाले कुल परिवारों का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण							
वर्ष/ विकासखण्ड	**2020–21**	**2019–20**	**2018–19**	**2017–18**	**विगत चार वर्षों के मध्य काम करने वाले कुल परिवारों की औसत संख्या**	**पंजीकृत कुल जॉबकार्ड**	**विगत चार वर्षों के मध्य काम करने वाले कुल औसत परिवारों का कुल पंजीकृत जॉबकार्ड की अपेक्षा प्रतिशत**
सहसपुर	3082	1655	1995	2125	2214	11187	19.79%
विकासनगर	3836	2084	2341	2546	2702	13245	20.40%
डोईवाला	6525	4164	5911	4762	5341	15048	35.49%
रायपुर	2544	1787	1580	2143	2014	4068	49.50%
चकराता	9218	7300	8741	9528	8697	16251	53.52%
कालसी	10077	6485	7481	8792	8209	13975	58.74%
योग जनपद	**35282**	**23475**	**28049**	**29896**	**29176**	**73774**	**39.55%**

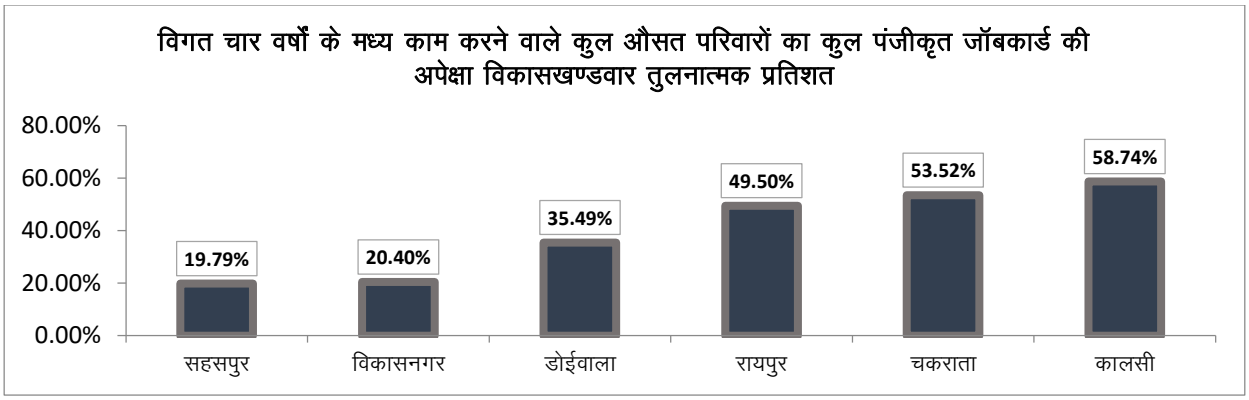

➢ **काम करने वाले श्रमिक :–**

जनपद में महात्मा गाधी नरेगा में कुल पंजीकृत श्रमिकों को दिये गये राजेगार के आंकड़ों को देखे तो ज्ञात होता है कि जनपद द्वारा मात्र 28 श्रमिकों को ही रोजगार उपलब्ध करवाया गया जो कि बहुत न्यूनतम है। विकासखण्ड सहसपुर, विकासनगर, डोईवाला तथा चकराता में पंजीकृत श्रमिकों की संख्या अधिक है किन्तु रोजगार उपलब्धता की स्थिति अपेक्षाकृत बहुत न्यूनतम है, जबकि इन विकासखण्डों में रोजगार की अधिक मांग होनी चाहिए। विभाग को इन विकासखण्ड में जॉबकार्ड एवं श्रमिकों के सत्यापन हेतु कार्ययोजना तैयार कर जॉबकार्ड सूची को सुव्यवस्थित करना चाहिए ताकि भविष्य में वास्तविक जॉबकार्ड एवं श्रमिक महात्मा गांधी नरेगा में पंजीकृत रहें। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

काम करने वाले कुल श्रमिकों की संख्या का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण							
वर्ष / विकासखण्ड	**2020–21**	**2019–20**	**2018–19**	**2017–18**	**विगत चार वर्षों के मध्य काम करने वाले कुल श्रमिकों की औसत संख्या**	**पंजीकृत कुल श्रमिक**	**विगत चार वर्षों के मध्य काम करने वाले कुल श्रमिकों की औसत संख्या का कुल पंजीकृत श्रमिकों के सोपक्ष प्रतिशत**
सहसपुर	4577	2425	2729	2774	3126	19672	15.89%
विकासनगर	5135	2853	3078	3137	3551	20944	16.95%
डोईवाला	6525	4164	5911	4762	5341	21580	24.75%
चकराता	12009	9444	11242	2528	8806	30025	29.33%
रायपुर	3997	2789	2353	3350	3122	8272	37.74%
कालसी	11776	7058	8023	9421	9070	18302	49.55%
योग जनपद	**44019**	**28733**	**33336**	**25972**	33015	**118795**	**27.79%**

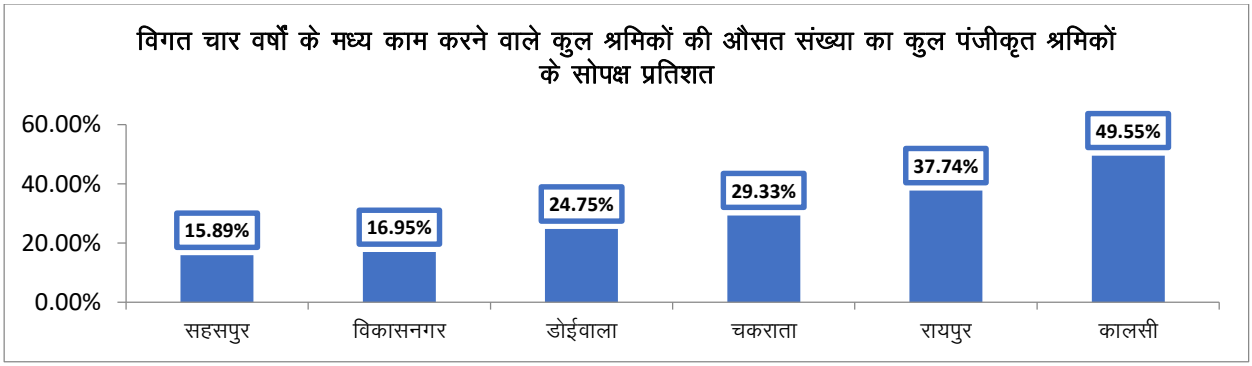

मनरेगा से वंचित ग्राम पंचायत :– जनपद देहरादून में विगत चार वर्षों के दौरान मनरेगा हर वर्ष कोई न कोई ग्राम पंचायत किसी न किसी विकासखण्ड में महात्मा गांधी नरेगा योजना से वंचित रहती है, जिसमें विकासखण्ड रायपुर का सबसे अधिक योगदान रहा, जो कि ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए उचित नहीं है। विभाग को मनरेगा से वंचित ग्राम पंचायतों पर विशेष ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

मनरेगा से वंचित ग्राम पंचायतों का विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण				
वर्ष / विकासखण्ड	2020–21	2019–20	2018–19	2017–18
चकराता	0	0	1	2
कालसी	0	3	4	2
विकासनगर	1	0	0	0
सहसपुर	0	2	7	6
रायपुर	2	2	21	13
डोईवाला	0	1	11	4
योग जनपद	**3**	**8**	**44**	**27**

➢ **कार्य :–** मनरेगा के अन्तर्गत प्रारम्भ और पूरे किये गये औसत कार्यों हेतु पिछले चार वर्षों के आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि विकासखण्ड रायपुर द्वारा उल्लिखित मद में 255 कार्य प्रारम्भ करते हुए छठवां तथा विकासखण्ड कालसी द्वारा 904 कार्य के साथ प्रथम स्थान से योगदान किया गया। विकासखण्डों की यही स्थिति कार्य पूर्ण करनें में भी हैं। विभाग को कार्यो की अधिकता को मध्यनजर रखते हुए ग्रामीणों की आवश्यकता एवं मांग के अनुसार कई योजनाओं को एकीकृत करते हुए कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए, ताकि एक ही परियोजना से कई परिवारों को रोजगार उपलब्धता के साथ–साथ आजीविका के स्रोतों में भी वृद्धि की जा सके। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

मनरेगा के तहत कार्यों का विकासखण्डवार एवं वर्षवार प्रारम्भ एवं पूर्ण किये गये कार्य का विवरण										
वर्ष/ विकासखण्ड	2020–21	2019–20	2018–19	2017–18	चार वर्षों के औसत कार्य	2020–21	2019–20	2018–19	2017–18	चार वर्षों के औसत कार्य
चकराता	716	989	718	1026	862	739	607	897	1118	840
कालसी	1299	220	789	1309	904	202	538	1315	1166	805
विकासनगर	417	503	433	707	515	428	593	945	977	736
सहसपुर	233	206	229	566	309	371	354	689	948	591
रायपुर	188	174	211	445	255	168	218	408	721	379
डोईवाला	212	207	264	471	289	248	288	722	1286	636
योग जनपद	3065	2299	2644	4524	3133	2156	2598	4976	6216	3987

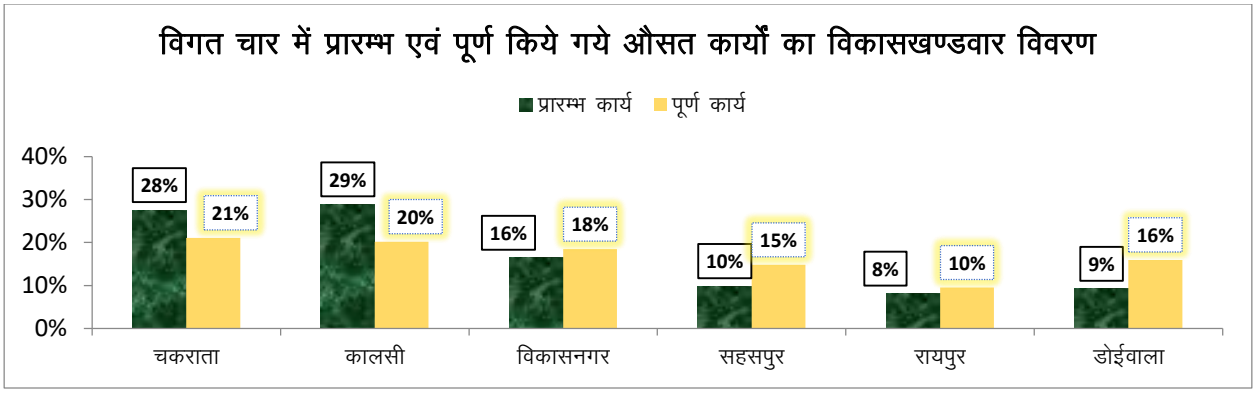

➢ आजीविका के अन्तर्गत समूह गठन

जनपद के अन्तर्गत विगत चार वर्षों के दौरान ग्राम्य विकास विभाग द्वारा आजीविका मिशन के तहत गठित स्वयं सहायता समूह हेतु उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि विकासखण्ड चकराता एवं कालसी में वर्ष 2019–20 में ही NRLM जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम को प्रारम्भ किया गया जिस कारण उक्त विकासखण्डों में निचले पायदान पर समूह गठित हुए हैं, जहाँ एक ओर जनपद की सबसे अधिक 57% ग्राम पंचायतें इन विकासखण्डों में ही सम्मिलित हैं वहीं दूसरी ओर पलायन के आंकड़ों में भी इन्हीं विकासखण्डों अधिक हैं। विभाग को मैदानी विकासखण्डों के साथ पहाड़ी विकासखण्डों में अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है, क्योंकि पर्वतीय विकासखण्डों में महिलाओं का अधिक निवास है। पात्र महिलाओं को उक्त योजना से जोड़ते हुए उनकी आजीविका के संसाधनों में वृद्धि करते हुए आगामी पलायन को रोका जा सकता है। सम्बन्धित आंकड़ों का वर्षवार विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में प्रदर्शित किया गया है।

डे0एन0आर0एल0एम0 के तहत गठित स्वयं सहायता समूह का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण							
वर्ष	विकासखण्ड / वर्ष	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	योग प्रतिशत
1	चकराता	0	0	0	50	50	02%
2	कालसी	0	0	0	86	86	04%

3	रायपुर	0	146	94	73	313	16%
4	विकासनगर	12	149	156	139	456	23%
5	सहसपुर	155	210	103	77	545	27%
6	डोईवाला	170	248	84	56	558	28%
योग		**337**	**753**	**437**	**481**	**2008**	**100%**

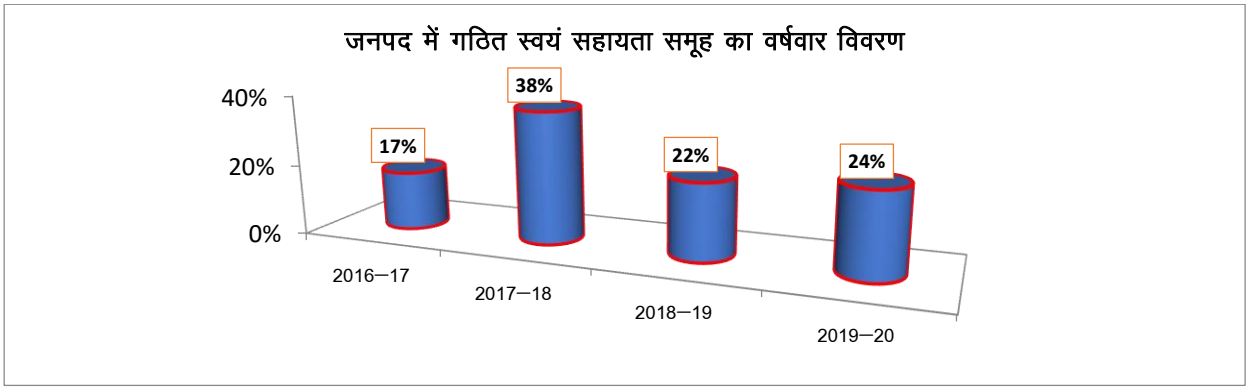

➢ आजीविका के अन्तर्गत आर0एफ0 वितरण

गठित स्वयं सहायता समूह को विगत चार वर्षो के दौरान आजीविका के अन्तर्गत रिवाल्विंग फण्ड उपलब्ध करवाये जाने के प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि आर0एफ0 वितरण में भी सभी विकासखण्डों का पायदान वही है जो समूह गठन में पाया गया क्योंकि समूहों को रिवॉल्विंग फण्ड वितरण हेतु समय निर्धारित होता है। जनपद में सभी विकासखण्डों द्वारा गठित 2008 स्वयं सहायता समूहों में से 86% समूहों को ही आर0एफ0 से लाभान्वित किया गया है। आंकडों का वर्षवार विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

डे0एन0आर0एल0एम0 के तहत आर0एफ0 प्राप्त स्वयं सहायता समूह का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण

क्र0 स0	विकासखण्ड /वर्ष	भौतिक प्रगति (संख्या)						वित्तीय प्रगति (लाख में)					
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	योग प्रतिशत	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	योग प्रतिशत
1	चकराता	0	0	0	19	19	**1%**	0	0	0	1.9	1.9	**1%**
2	कालसी	0	0	0	34	34	**2%**	0	0	0	3.4	3.4	**2%**
3	रायपुर	0	61	40	39	140	**8%**	0	7.4	4	3.9	15.3	**8%**
4	विकासनगर	0	82	137	149	368	**21%**	0	0	16.8	17.9	34.7	**18%**
5	सहसपुर	125	206	137	70	538	**31%**	12.5	24.5	18.8	7.55	63.4	**32%**
6	डोईवाला	138	311	119	63	631	**36%**	13.8	38.7	16.7	8.4	77.6	**40%**
योग		**263**	**660**	**433**	**374**	**1730**	**100%**	**26.3**	**70.6**	**56.3**	**43.1**	**196**	**100%**

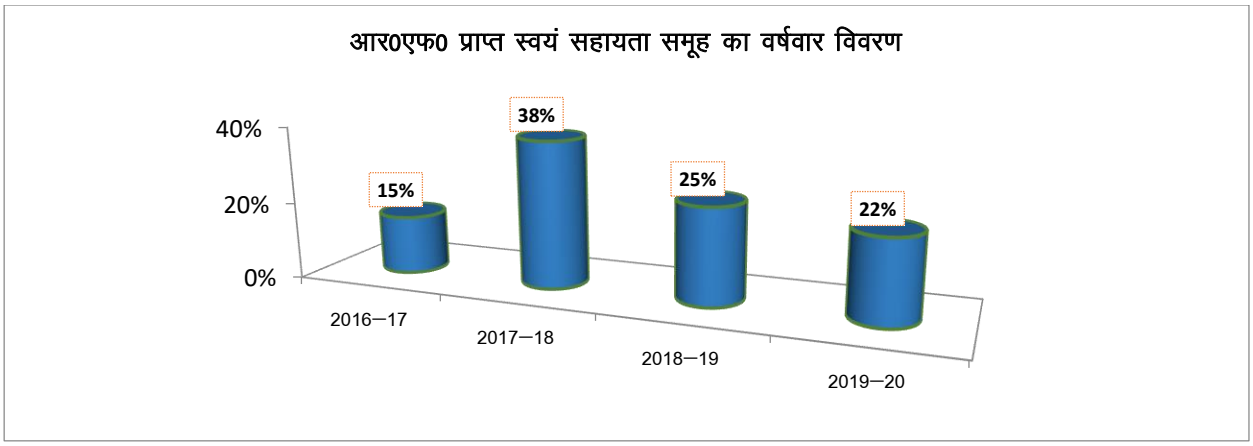

➢ आजीविका के अन्तर्गत सी0आई0एफ0 वितरण

सी0आई0एफ0 हेतु प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जनपद में विकासखण्ड डोईवाला द्वारा आर0एफ0 अन्य विकासखण्डों की अपेक्षा अधिक उपलब्ध करवाया गया है किन्तु सहसपुर विकासखण्ड द्वारा सी0आई0एफ0 में अधिक योगदान किया गया जबकि डोईवाला विकासखण्ड उक्त मद में पहले पायदान पर होना चाहिए था। आंकडों का वर्षवार विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

डे0एन0आर0एल0एम0 के तहत सी0आई0एफ0 प्राप्त स्वयं सहायता समूह का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण

क्र. स.	विकासखण्ड / वर्ष	भौतिक प्रगति (संख्या)						वित्तीय प्रगति (लाख में)					
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	योग प्रतिशत	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	योग प्रतिशत
1	कालसी	0	0	0	0	0	**0%**	0	0	0	0	0	**0%**
2	चकराता	0	0	0	15	15	**1%**	0	0	0	11	11	**1%**
3	रायपुर	0	8	0	48	56	**5%**	0	6.93	0	19.9	26.83	**3%**
4	विकासनगर	0	0	34	129	163	**16%**	0	0	32.3	147	179.3	**22%**
5	डोईवाला	78	126	73	48	325	**32%**	71	88.6	76.9	23.8	260.3	**32%**
6	सहसपुर	83	198	79	108	468	**46%**	77	132	22.2	99	330.2	**41%**
योग		**161**	**332**	**186**	**348**	**1027**	**100%**	**148**	**227.53**	**131.4**	**300.7**	**807.63**	**100%**

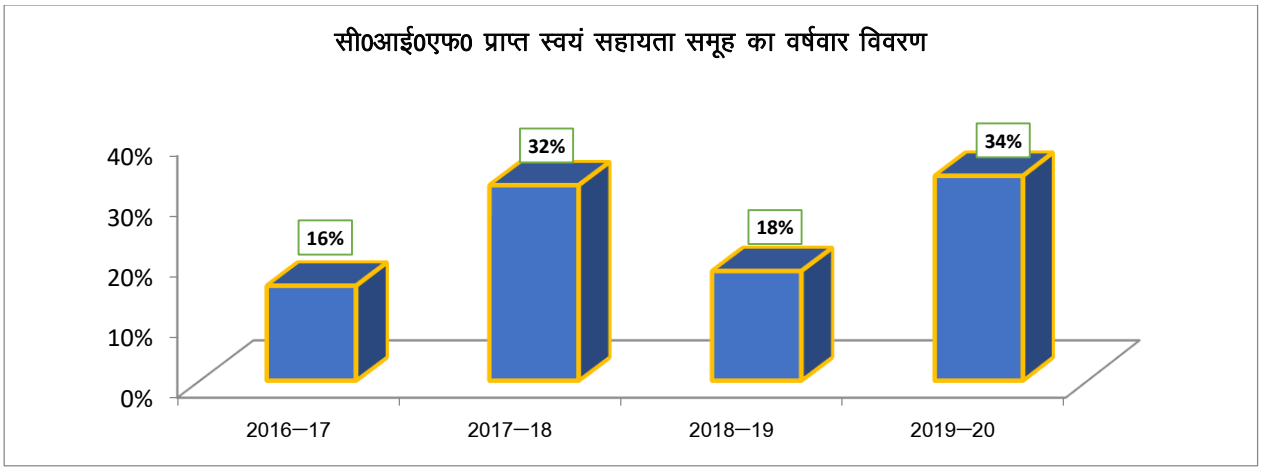

➢ आजीविका के अन्तर्गत सी0सी0एल0 वितरण

विकासखण्ड विकासनगर द्वारा 16% सबसे कम तथा विकासखण्ड डोईवाला द्वारा सबसे अधिक 31% सी0सी0एल0 वितरण किया गया। आंकडों का वर्षवार विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

डे0एन0आर0एल0एम0 के तहत सी0सी0एल0 प्राप्त स्वयं सहायता समूह का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण													
क्र0स0	विकासखण्ड / वर्ष	भौतिक प्रगति (संख्या)						वित्तीय प्रगति (लाख में)					
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	योग प्रतिशत	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	योग प्रतिशत
1	चकराता	0	0	0	0	0	**0%**	0	0	0	0	0	**0%**
2	कालसी	0	0	0	0	0	**0%**	0	0	0	0	0	**0%**
3	विकासनगर	0	0	131	145	276	**16%**	0	0	91	71	162	**10%**
4	रायपुर	0	64	149	205	418	**24%**	0	64	149	205	418	**25%**
5	सहसपुर	0	132	191	183	506	**29%**	0	132	191	199	522	**31%**
6	डोईवाला	65	142	178	151	536	**31%**	76	162	187	165	590	**35%**
योग		**65**	**338**	**649**	**684**	**1736**	**100%**	**76**	**358**	**618**	**640**	**1692**	**100%**

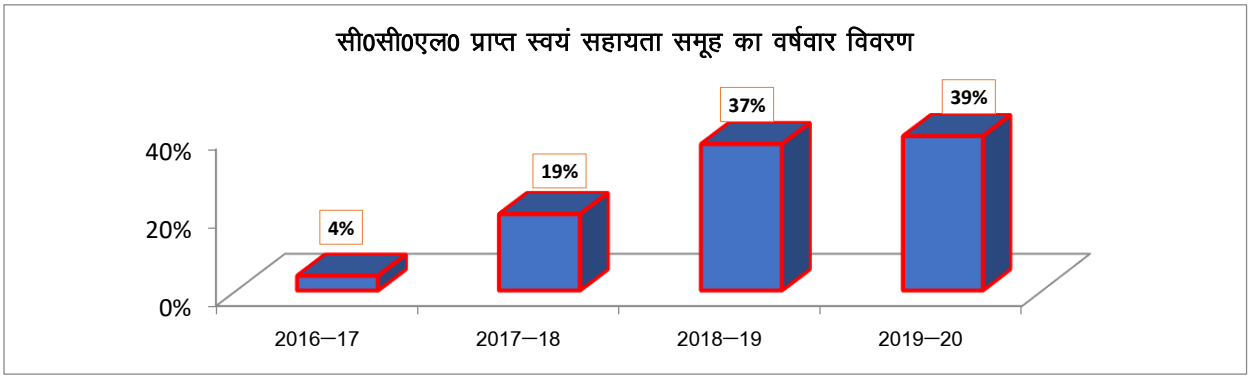

❖ **मुख्यमंत्री पलायन रोकथाम योजना का विष्लेषण :–**

जनपद देहरादून में मुख्यमंत्री पलायन रोकथाम योजना का वर्षवार एवं विकासखण्डवार भौतिक/वित्तीय विवरण

क्र0 सं0	वर्ष	विभाग का नाम	विकासखण्ड	योजनाओं की संख्या	लाभान्वित ग्रामों की संख्या	योजना की प्रस्तावित धनराशि (लाख रू0 में)			कुल व्यय (लाख रू0 में)			भौतिक स्थिति	लाभान्वित लाभार्थियों की संख्या
						मुख्यमंत्री पलायन रोकथाम योजना	कनवरजेन्स शेयर	कुल	मुख्यमंत्री पलायन रोकथाम योजना	कनवरजेन्स शेयर	कुल	पूर्ण/अपूर्ण	
1	2020–21	सिंचाई विभाग	कालसी	2	8	19.24	0.88	20.11	17.07	0.00	17.07	पूर्ण	222
2	2020–21	लघु सिंचाई	कालसी	7	7	28.50	9.50	38.00	25.28	0.00	25.28	पूर्ण	95
योग				**9**	**15**	**47.74**	**10.38**	**58.11**	**42.35**	**0.00**	**42.35**	पूर्ण	**317**
1	2020–21	पशुपालन	कालसी	1	4	50.00	0.00	50.00	0.00	0.00	0.00	अपूर्ण	350
2	2020–21	सिंचाई	कालसी	1	1	10.70	0.00	10.70	0.00	0.00	0.00	अपूर्ण	88
3	2020–21	उद्यान	कालसी	6	6	29.05	0.00	29.05	0.00	0.00	0.00	अपूर्ण	935
योग				**8**	**11**	**89.75**	**0**	**89.75**	**0**	**0**	**0**	अपूर्ण	**1373**
महायोग				**17**	**26**	**137.5**	**10.38**	**147.9**	**42.35**	**0**	**42.35**	**09 पूर्ण, 17 अपूर्ण**	**1690**

मुख्यमंत्री पलायन रोकथाम योजना हेतु विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद के विकासखण्ड कालसी में पलायन से अधिक प्रभावित ग्रामों के अन्तर्गत सामाजिक–आर्थिक विकास को सुदृढ़ करने एवं पलायन को कम करने के लिए वित्तीय वर्ष 2020–21 से वित्तीय वर्ष 2021–22 के मध्य सिंचाई, लघु सिंचाई, पशुपालन तथा उद्यान विभाग द्वारा ही 17 योजनाओं को निर्मित करते हुए 26 ग्रामों के 1690 लाभार्थियों को लाभान्वित करने का लक्ष्य रखा गया।

लक्ष्य पूर्ति हेतु उल्लेखित विभागों द्वारा उक्त वर्षों के दौरान M.P.R.Y. के अन्तर्गत रूपये 137.50 लाख की धनराशि तथा कन्वरजेन्स के तहत रूपये 10.38 लाख की धनराशि का प्राविधान किया गया था।

आंकड़ों से यह भी स्पष्ट होता है कि वित्तीय वर्ष 2020–21 में विभागों द्वारा मात्र M.P.R.Y. की ही धनराशि व्यय का व्यय किया गया। कन्वरजेन्स व विभागीय अंश की धनराशि का M.P.R.Y. में परिव्यय नहीं किया गया, जबकि वित्तीय वर्ष 2021–22 में किसी भी मद की धनराशि का उल्लिखित विभागों द्वारा परिव्यय ही नहीं किया गया अर्थात विभागों की पलायन प्रभावित ग्रामों में सामाजिक–आर्थिक विकास को सुदृढ़ करने एवं पलायन पर अंकुश लगाने की सरकार की मन्शा को कितनी गम्भीरता से लिया जा रहा है, आंकड़ों से पूर्ण रूप से स्पष्ट होता है जबकि कई विभागों द्वारा M.P.R.Y. में अपनी भूमिका ही नहीं रखी गयी है।

मुख्यमंत्री पलायन रोकथाम योजना का मूल उद्देश्य तभी सार्थक होगा जब सभी विभाग अपनी भूमिका को पूर्ण निष्ठा के साथ सम्पादित करेगें। आंकड़ों का विवरण उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

❖ उद्योग

➢ सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम स्थापना

विभाग द्वारा विगत चार वर्षों के मध्य स्थापित करवाये गये सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाईयों हेतु उपलब्ध किये गये आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद में वर्ष 2018–19 के सापेक्ष वर्ष 2019–20 में मात्र 10% की वृद्धि दर से ही सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम स्थापित किये गये हैं। वर्ष 2018–19 हेतु उक्त आंकड़ा ऋणात्मक रहता है, जबकि इसी वित्तीय वर्ष में अन्य वर्षों के मुकाबले अधिक रोजगार उपलब्ध कराया गया। रायपुर एवं डोईवाला विकासखण्डों की अपेक्षा अन्य विकासखण्डों में उक्त योजना की स्थिति अच्छी नहीं है अर्थात विभाग के पास ग्रामीण क्षेत्रों में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को विकसित एवं स्थापित करने हेतु कोई ठोस रणनीति एवं कार्ययोजना तैयार नहीं है। विभाग को जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों का सर्वेक्षण कर वर्तमान समयावधि में विकसित होने वाले उद्यमों को सूचीवद्ध करते हुए आगामी कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए, जिनसे ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक से अधिक रोजगार उपलब्ध करवाया जा सके। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं में दर्शाया गया है।

वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य स्थापित सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाइयों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण							
क्र. सं.	विकासखण्ड	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य कुल स्थापित इकाईयों का प्रतिशत
1	चकराता	7	4	9	20	40	2.3%
2	कालसी	6	3	11	25	45	2.6%
3	विकासनगर	15	19	46	75	155	8.9%
4	सहसपुर	38	48	28	45	159	9.2%
5	डोईवाला	64	123	77	65	329	19.0%
6	रायपुर	240	262	260	245	1007	58.0%
योग		**370**	**459**	**431**	**475**	**1735**	**100%**
वर्षवार बदलाव प्रतिशत		**NA**	**24%**	**-6%**	**10%**	**NA**	

वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य स्थापित सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाइयों द्वारा रोजगार उपलब्धता का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण							
क्र. सं.	विकासखण्ड	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य कुल स्थापित इकाईयों का रोजगार प्रतिशत
1	चकराता	33	13	30	55	131	1.0%
2	कालसी	32	3	40	95	170	1.3%
3	सहसपुर	200	160	550	300	1210	8.9%
4	विकासनगर	70	60	600	1600	2330	17.2%
5	डोईवाला	310	450	1200	1050	3010	22.2%
6	रायपुर	1180	995	1800	2704	6679	49.4%
योग		**1825**	**1681**	**4220**	**5804**	**13530**	**100%**
वर्षवार बदलाव प्रतिषत		**NA**	**-8%**	**151%**	**38%**	**NA**	

➢ प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम

उद्योग विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 की समयावधि में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत स्थापित इकाईयों हेतु उपलब्ध किये गये आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद में वर्ष 2018–19 के सापेक्ष वर्ष 2019–20 में 28% ऋणात्मक कमी से उद्यम स्थापित किये गये, जिनमें 23% ऋणात्मक कमी की दर से रोजगार उपलब्ध करवाया गया। विकासखण्ड चकराता एवं कालसी में उक्त योजना के अन्तर्गत उद्यम स्थापना एवं रोजगार उपलब्धता हेतु योगदान बहुत ही कम मात्रा में दिया जा रहा

है, जो ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक–आर्थिक विकास को सुदृढ़ करने एवं पलायन पर अंकुश लगाने की ज्वलन्त समस्या के निदान हेतु उचित संकेत नहीं है। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं में दर्शाया गया है।

वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के माध्यम से स्थापित उद्यमों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण

क्र. सं.	विकासखण्ड	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य कुल स्थापित इकाईयों का प्रतिशत
1	चकराता	1	3	9	8	21	1.2%
2	कालसी	6	10	11	5	32	1.8%
3	सहसपुर	16	10	28	25	79	4.6%
4	डोईवाला	21	28	34	21	104	6.0%
5	विकासनगर	18	21	46	39	124	7.1%
6	रायपुर	34	30	85	56	205	11.8%
योग		**96**	**102**	**213**	**154**	**565**	**33%**
वर्षवार बदलाव प्रतिषत		**NA**	**6%**	**109%**	**-28%**	**NA**	

वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के माध्यम से स्थापित उद्यमों द्वारा रोजगार उपलब्धता का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण

क्र. सं.	विकासखण्ड	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य कुल स्थापित इकाईयों रोजगार प्रतिशत
1	चकराता	5	12	45	45	107	0.8%
2	कालसी	22	45	32	30	129	1.0%
3	सहसपुर	52	32	102	90	276	2.0%
4	डोईवाला	70	85	115	77	347	2.6%
5	विकासनगर	65	71	140	125	401	3.0%
6	रायपुर	110	92	280	180	662	4.9%
योग		**324**	**337**	**714**	**547**	**1922**	**14%**
वर्षवार बदलाव प्रतिषत		**NA**	**4%**	**112%**	**-23%**	**NA**	

वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य निम्न योजनाओं से लाभान्वित इकाईयों का विकासखण्डवार विवरण				
क्र.सं.	वर्ष / विकासखण्ड	एम0एस0एम0ई0 नीति 2015 के तहत ब्याज / विद्युत उपादान / निवेश प्रोत्साहन सहायता / वैट प्रतिपूर्ति सहायता प्राप्त इकाईयाँ	महिला उद्यमियों के लिए विशेष प्रोत्साहन नीति योजना के अन्तर्गत स्थापित उद्यमों को दिये गये ब्याज उपादान / निवेश सहायता प्राप्त इकाईयाँ	योग
1	डोईवाला	0	2	**2**
2	विकासनगर	0	5	**5**
3	सहसपुर	5	7	**12**
4	कालसी	20	0	**20**
5	चकराता	22	0	**22**
6	रायपुर	0	39	**39**
योग		**47**	**53**	**100**

मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना :–

योजना हेतु विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अध्ययनोपरांत यह स्पष्ट होता है कि जनपद में इस योजना के तहत वर्ष 2020–21 में मात्र 244 लाभार्थियों को रोजगार उपलब्ध करवाया गया, जिसमें व्यवसाय वाले क्षेत्र में 75%, सेवा क्षेत्र में 14% तथा उद्योग क्षेत्र में 11% उद्यम स्थापित करवाये गये।

1. जनपद में व्यवसाय क्षेत्र को आधार मानते हुए सेवा एवं उद्योग क्षेत्र को बढ़ावा मिल रहा है, जिसे भविष्य में और अधिक बढ़ावा दिया जा सकता है, जिसकी जनपद में पूर्ण सम्भावनायें हैं।

2. जनपद के नगरीय क्षेत्रों में ही अधिक उद्यम स्थापित करवाये गये हैं विभाग को ग्रामीण क्षेत्रों में भी उद्यम स्थापित करने की ओर अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों से हो रहे पलायन पर अंकुश लगाया जा सकता है।

3. आंकड़ों से यह भी ज्ञात होता है कि मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना की जानकारी से ग्रामीण क्षेत्र वंचित हैं जिस कारण ग्रामीण क्षेत्रों में योजना का असर कम दिखाई देता है, क्योंकि पिछड़ा घोषित क्षेत्र में योजना का प्रभाव बहुत कम है। विभाग को स्थलीय सर्वेक्षण कर आगामी कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए, ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक विकास को सुदृढ़ करते हुए पलायन को कम किया जा सके।

4. विभाग के सहयोग से स्थापित करवाये जा रहे उद्यमों में उपलब्ध करवाये जा रहे रोजगार पर कोई अनुश्रवण नहीं किया जा रहा है, जिससे जनपद में रूपये 1317.28 लाख का परिव्यय करने पर मात्र 244 को ही रोजगार दिये जाने की पुष्टि होती है। विभाग को इस पर ध्यान केन्द्रित करते हुए कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए। आंकडों का विवरण निम्नवत तालिकाओं में दर्शाया गया है।

मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के तहत वर्ष 2020–21 में स्थापित उद्यमों का विकासखण्डवार विवरण					
क्र0सं0	विकासखण्ड	उद्यमों का प्रकार			योग
		सेवा	व्यवसाय	उद्योग	
1	कालसी	3	4	1	8
2	चकराता	1	6	2	9
3	विकासनगर	2	18	1	21
4	सहसपुर	6	29	6	41
5	डोईवाला	7	48	9	64
6	रायपुर	15	79	7	101
योग		**34**	**184**	**26**	**244**
योग प्रतिशत		**14%**	**75%**	**11%**	**100%**

मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के तहत वर्ष 2020–21 में लाभान्वितों का विकासखण्डवार विवरण						
क्र0सं0	विकासखण्ड	लाभान्वित जाति				योग
		सामान्य	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	
1	कालसी	0	2	6	0	8
2	चकराता	1	3	5	0	9
3	विकासनगर	12	2	3	4	21
4	सहसपुर	25	4	1	11	41
5	डोईवाला	45	7	0	12	64
6	रायपुर	65	18	0	18	101
योग		**148**	**36**	**15**	**45**	**244**
योग प्रतिशत		**61%**	**15%**	**6%**	**18%**	**100%**

मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के तहत वर्ष 2020–21 में विकासखण्डवार वित्तीय विवरण				
क्र0सं0	विकासखण्ड	ऋण	ऋण अनुदान	पूंजी निवेश (लाख में)
1	कालसी	32.66	6.53	33.50
2	चकराता	32.49	7.05	42.45
3	विकासनगर	100.22	15.03	108.13
4	सहसपुर	225.26	33.79	262.80
5	डोईवाला	313.12	46.97	359.10

6	रायपुर	439.67	65.95	511.30
योग		**1143.41**	**175.32**	**1317.28**
योग प्रतिशत		**87%**	**13%**	**100%**

❖ सहकारिता

➢ अल्पकालीन ऋण

सहकारिता विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 की समयावधि में साधन सहकारी समितियों के माध्यम से किसानों को दिये गये अल्पकालीन ऋण हेतु उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद में खरीफ अभियान के तहत लाभान्वित होने वाले सदस्यों की संख्या में जहाँ एक ओर लगभग 53% की ऋणात्मक कमी आती है वहीं रबी अभियान के अन्तर्गत लगभग 40% की वृद्धि होती है, कमी और वृद्धि हर विकासखण्ड में देखी जा सकती है अर्थात लगभग 13% किसानों द्वारा विगत चार सालों में सहकारी समितियों से अल्पकालीन ऋण लेने में रूचि कम दिखाई, क्योंकि किसानों की आय में वृद्धि न होने के कारण कई किसानों को ऋण अदायगी में कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। उक्त आंकड़ें में विकासनगर विकासखण्ड का सबसे अधिक योगदान है। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है।

वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य खरीफ अभियान के तहत साधन समितियों द्वारा अल्पकालीन ऋण वितरण का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण

क्र. सं.	विकासखण्ड / वर्ष	लाभान्वित सदस्य संख्या					वितरित ऋण राशि			
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य सदस्यों की संख्या में बदलाव प्रतिशत	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20
1	डोईवाला	836	713	690	640	-30.6%	577.54	594.97	418.07	504.74
2	***रायपुर***	130	250	290	129	***-0.8%***	81.28	188.31	107.76	157.63
3	सहसपुर	1091	1063	692	595	-83.4%	418.20	651.82	335.16	377.37
4	***विकासनगर***	878	979	609	406	***-116.3%***	187.64	195.75	171.90	245.96
5	कालसी	57	121	100	144	60.4%	33.11	84.35	79.07	123.45
6	चकराता	146	65	100	134	-9.0%	72.00	54.26	74.29	128.79
योग		**3138**	**3191**	**2481**	**2048**	**-53.2%**	**1369.77**	**1769.46**	**1186.25**	**1537.94**

वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य रबी अभियान के तहत साधन समितियों द्वारा अल्पकालीन ऋण वितरण का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण										
क्र. सं.	विकासखण्ड /वर्ष	लाभान्वित सदस्य संख्या					वितरित ऋण राशि			
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य सदस्यों की संख्या में बदलाव प्रतिशत	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20
1	डोईवाला	707	872	617	1530	53.8%	418.88	690.59	423.59	828.04
2	रायपुर	330	614	223	795	58.5%	247.81	531.74	289.59	471.14
3	सहसपुर	1950	2322	1378	2015	3.2%	743.12	1573.90	606.99	1879.20
4	विकासनगर	819	1079	836	1099	25.5%	385.42	571.02	347.42	572.53
5	कालसी	164	69	278	633	74.1%	98.25	192.81	172.71	396.18
6	चकराता	150	35	34	781	80.8%	92.91	167.20	0.00	479.08
योग		**4120**	**4991**	**3366**	**6853**	**39.9%**	**1986.39**	**3727.26**	**1840.30**	**4626.17**

➢ क्रेडिट कार्ड वितरण

सहकारिता विभाग द्वारा विगत चार सालों के मध्य वितरित किये गये क्रेडिट कार्डों हेतु प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद में क्रेडिट कार्डों की अद्यावधिक वितरण एवं वास्तविक वितरण की संख्या में लगभग 9% की ऋणात्मक कमी हुई, जबकि कमी सभी विकासखण्डों में देखी जा सकती है, जिसमें विकासनगर एवं रायपुर विकासखण्डों का योगदान अधिक रहा, जबकि इन्हीं विकासखण्डों में ऋण राशि की सीमा को भी बढ़ाया गया अर्थात किसानों का क्रेडिट कार्ड की ओर ध्यान भंग हो रहा है, क्योंकि किसानों को विपणन का उचित प्रबन्धन उपलब्ध नहीं हो पा रहा है जिस कारण उनकी फसल को उचित दाम उपलब्ध नहीं हो पाता। साधन सहकारी समितियों में ही किसानों को ई–मार्केटिंग की सुविधा उपलब्ध करवाये जाने का प्राविधान किया जाना उचित होगा। आंकड़े निम्नवत तालिकाओं में प्रदर्शित किये गये हैं।

वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य साधन समितियों द्वारा वितरित क्रेडिट कार्डों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण												
क्र. सं.	विकासखण्ड	2016–17		2017–18		2018–19		2019–20		वर्ष 2019–20 हेतु वास्तविक वितरण	वर्ष 2019–20 हेतु वास्तविक एवं अत्यावधिक वितरण में	क्रेडिट कार्ड में बदलाव प्रतिशत
		वर्ष में वितरण	अत्यावधिक वितरण	वर्ष में वितरण	अत्यावधिक वितरण	वर्ष में वितरण	अत्यावधिक वितरण	वर्ष में वितरण	अत्यावधिक वितरण			
1	विकासनगर	70	4833	35	4868	129	4997	186	2180	5183	-3003	**-137.8%**
2	रायपुर	40	2790	40	2830	219	3049	471	3301	3520	-219	**-6.6%**
3	चकराता	30	3102	10	3112	46	3158	402	3514	3560	-46	**-1.3%**
4	कालसी	36	3873	20	3893	55	3948	46	3939	3994	-55	**-1.4%**
5	सहसपुर	92	11837	25	11862	162	12024	0	11862	12024	-162	**-1.4%**
6	डोईवाला	80	14547	50	14597	140	14737	26	14623	14763	-140	**-1.0%**
योग		**348**	**40982**	**180**	**41162**	**751**	**41913**	**1131**	**39419**	**43044**	**-3625**	**-9.2%**

वित्तीय वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य साधन समितियों द्वारा वितरित क्रेडिट कार्डों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण							
क्र. सं.	विकासखण्ड	2016–17 में लगा ऋण	2017–18 में लगा ऋण	2018–19 में लगा ऋण	2019–20 में लगा ऋण	वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 तक लगे ऋण में अन्तर	क्रेडिट कार्ड में लगे ऋण का बदलाव प्रतिशत
1	डोईवाला	476.39	476.39	476.39	476.39	0.00	**0.0%**
2	सहसपुर	1012.00	1012.00	1012.00	1012.00	0.00	**0.0%**
3	कालसी	180.18	180.18	180.18	180.18	0.00	**0.0%**
4	चकराता	216.00	216.00	216.00	216.00	0.00	**0.0%**
5	रायपुर	378.79	443.11	443.11	443.11	64.32	**17.0%**
6	विकासनगर	480.25	480.25	874.22	1016.75	536.50	**111.7%**
योग		**2743.61**	**2807.93**	**3201.90**	**3344.43**	600.82	**21.9%**

स्वजल

❖ शौचालय

व्यक्तिगत शौचालयों के निर्माण हेतु प्राप्त विगत चार सालों के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जनपद अन्तर्गत शौचालय निर्माण हेतु प्राप्त लक्ष्यों के सापेक्ष विकासनगर विकासखण्ड में सबसे अधिक तथा सबसे कम विकासखण्ड रायपुर में स्वच्छ भारत मिशन के तहत हर घर में शौचालय निर्माण करवाया गया। वर्तमान में कोविड–19 के कारण जनपद से बाहर निवास करने वाले प्रवासी ग्रामों में लौट आये हैं। स्वजल इकाई को पुनः सर्वेक्षण करवाकर शौचालयों से वंचित परिवारों को इस मिशन से आच्छादित करने की कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

स्वजल द्वारा व्यक्तिगत शौचालयों निर्माण की विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण							
क्र0सं0	विकासखण्ड	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	विकासखण्ड का जनपद में योगदान प्रतिशत
1	रायपुर	1697	0	0	0	1697	9%
2	कालसी	2036	0	0	1	2037	11%
3	डोईवाला	2615	0	45	19	2679	14%
4	सहसपुर	3161	0	52	0	3213	17%
5	चकराता	3908	0	26	35	3969	21%
6	विकासनगर	4990	0	39	0	5029	27%
योग		**18407**	**0**	**162**	**55**	**18624**	**100%**

❖ ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन

स्वजल इकाई द्वारा ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन के अन्तर्गत विगत चार वर्षों के दौरान जनपद की कुल 401 ग्राम पंचायतों में से अभी तक 181 ग्राम पंचायतों में कार्य करवाया गया अर्थात जनपद की 220 ग्राम पंचायतें इस योजना से वंचित हैं। रायपुर और डोईवाला विकासखण्ड़ों की स्थिति इस योजना में अन्य विकासखण्डों की अपेक्षा बहुत खराब है। स्वजल इकाई को अन्य विकासखण्डों के साथ–साथ इन विकासखण्डों में अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबन्धन की हर विकासखण्ड में नितान्त आवश्यकता है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

स्वजल द्वारा एस.एल.डब्ल्यू0एम0 निर्माण की विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण							
क्र0सं0	विकासखण्ड	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	विकासखण्ड का जनपद में योगदान प्रतिशत
1	रायपुर	4	8	7	0	19	10%
2	डोईवाला	0	15	6	0	21	12%

3	सहसपुर	1	18	7	0	26	14%
4	विकासनगर	0	8	28	0	36	20%
5	कालसी	0	4	34	0	38	21%
6	चकराता	0	33	8	0	41	23%
योग		**5**	**86**	**90**	**0**	**181**	**100%**

❖ सामुदायिक शौचालय निर्माण

सामुदायिक शौचालय निर्माण हेतु स्वजल से प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वर्ष 2018–19 हेतु जनपद अन्तर्गत सामुदायिक शौचालय के प्राप्त लक्ष्यों के सापेक्ष विकासनगर विकासखण्ड में सबसे अधिक तथा सबसे कम विकासखण्ड सहसपुर एवं डोईवाला में निर्मित हुए हैं, जबकि विकासखण्ड रायपुर, चकराता और कालसी में इस योजना की शुरूवात ही नहीं हुई है अर्थात विकासनगर विकासखण्ड के मात्र 04 तथा विकासखण्ड सहसपुर और डोईवाला में मात्र एक–एक ग्राम पंचायतों में सामुदायिक शौचालय निर्माण करवाया गया है, जो कि बहुत न्यून है। सामुदायिक शौचालय निर्माण की सभी विकासखण्डों में अपार सम्भावनाएं हैं, जिसके लिए स्वजल इकाई को सर्वेक्षण कर आगामी कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए। स्वजल द्वारा सम्पादित किये गये कार्यों की समीक्षा करके देखे तो ज्ञात होता है कि रायपुर, कालसी तथा डोईवाला विकासखण्डों की स्थिति अन्य विकासखण्डों की अपेक्षा अच्छी नहीं है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

स्वजल द्वारा सामुदायिक शौचालय निर्माण की विकासखण्डवार एवं वर्षवार विवरण			
क्र0सं0	विकासखण्ड	2018–19	विकासखण्ड का जनपद में योगदान प्रतिशत
3	रायपुर	0	0%
4	चकराता	0	0%
5	कालसी	0	0%
1	सहसपुर	1	17%
2	डोईवाला	1	17%
6	विकासनगर	4	67%
योग		**6**	100%

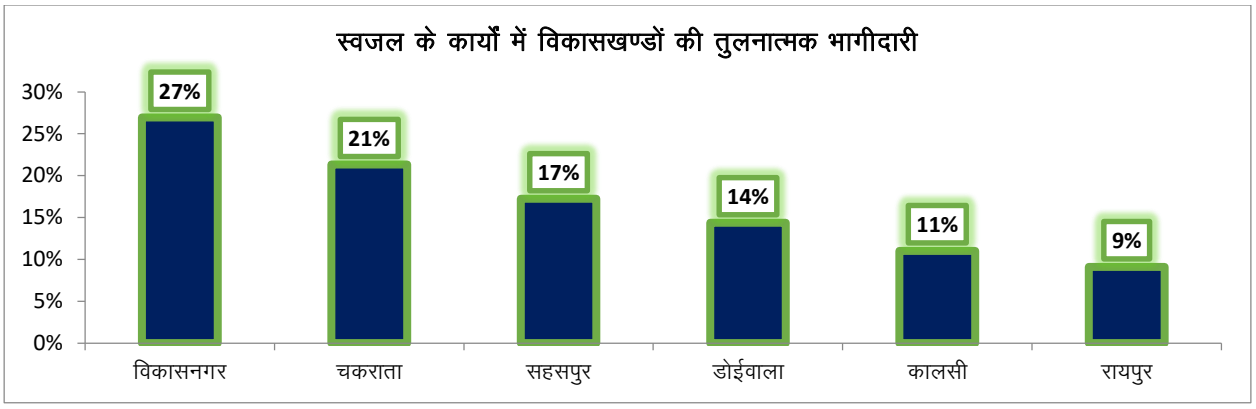

सेवायोजन

❖ पंजीयन

जनपद में बेरोजगारों के लिए सेवायोजन विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद में विगत चार वर्षों के दौरान हर वर्ष पंजीयन के साथ–साथ सक्रिय पंजिका में ऋणात्मक कमी आई है अर्थात जनपद में बेरोजगारों द्वारा सेवायोजन विभाग में पंजीयन नहीं करवाया जा रहा है, क्योंकि विभाग द्वारा बेरोजगारों को रोजगार दिलवाने में सही मार्गदर्शन नहीं किया जा रहा है अथवा बेरोजगारों द्वारा स्वयं के माध्यम से ही रोजगार प्राप्त किया जा रहा है या बेरोजगारों द्वारा पंजीयन का समयबद्ध नवीनीकरण नहीं करवाया जा रहा है, जिससे जनपद में बेरोजगारों की सही संख्या का आंकड़ा प्राप्त होना सम्भव नहीं है। विभाग को चाहिए कि अभ्यर्थियों को सरकारी अथवा गैर सरकारी नौकरी प्राप्त होने के समय सेवायोजन से निरस्त प्रमाण पत्र अनिवार्य रूप से उपलब्ध करवाया जाना एवं न्याय पंचायत स्तर पर रोजगार मेलों को लगवाते हुए पंजीयन किये जाने का भी प्राविधान करना चाहिए, जिससे भविष्य में बेरोजगारों के सत्य आंकड़ें मौजूद हो सके। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

विगत वर्षो में क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय देहरादून में बेरोजगार सम्बन्धी आंकडों का विवरण

वर्ष	पंजीयन	पंजीयन में वर्षवार बदलाव	पंजीयन में वर्षवार बदलाव प्रतिशत	सक्रिय पंजिका	सक्रिय पंजिका में वर्षवार बदलाव	सक्रिय पंजिका में वर्षवार बदलाव प्रतिशत
2016	21742	NA	NA	170919	NA	NA
2017	18540	-3202	-15%	172136	1217	1%
2018	16517	-2023	-11%	129451	-42685	-25%
2019	15935	-582	-4%	90513	-38938	-30%
2020	14934	-1001	-6%	90347	-166	0%

❖ रोजगार मेला एवं कैरियर कांउन्सिलिंग

विगत चार वर्षों के लिए रोजगार मेलों के आयोजन के लिए सेवायोजन विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जनपद में रोजगार मेलों की संख्या में हर वर्ष गिरावट हुई, जिसका प्रभाव प्रतिभागी अभ्यर्थियों एवं चयनित अभ्यर्थियों की संख्या पर भी पड़ा। वर्ष 2020 में भले ही रोजगार मेलों में कमी आई हो किन्तु प्रतिभागी अभ्यर्थियों एवं चयनित अभ्यर्थियों की संख्या में वृद्धि आई, क्योंकि इस समय कोराना–19 के कारण प्रवासी युवक जनपद में लौटे थे। विभाग की कैरियर कांउन्सिलिंग कार्यक्रम की भी यही स्थिति है। अर्थात बेरोजगार युवाओं को रोजगार दिये जाने हेतु विभाग की कोई ठोस नीति नहीं है। विभाग को इस ओर ध्यान केन्द्रित करते हुए रोजगार उपलब्धता हेतु आगामी कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं में दर्शाया गया है।

क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय द्वारा आयोजित रोजगार मेलों का विवरण

वर्ष	रोजगार मेलों की संख्या	रोजगार मेलों की संख्या में वर्षवार बदलाव प्रतिशत	प्रतिभागी अभ्यर्थियों की संख्या	प्रतिभागी अभ्यर्थियों की संख्या में वर्षवार बदलाव प्रतिशत	चयनित अभ्यर्थियों की संख्या	चयनित अभ्यर्थियों की संख्या में वर्षवार बदलाव प्रतिशत
2016	15	38%	4761	27%	265	12%
2017	11	28%	3537	20%	793	36%
2018	7	18%	2435	14%	688	31%
2019	4	10%	1576	9%	41	2%
2020	3	8%	5159	30%	408	19%
योग	40	100%	17468	100%	2195	100%

कैरियर कांउन्सिलिंग कार्यक्रम की वर्षवार विवरण

वर्ष	आयोजित वार्ता / कैरियर कांउन्सिलिंग	आयोजित वार्ता / कैरियर कांउन्सिलिंग का बदलाव प्रतिशत	लाभान्वित अभ्यर्थियों की संख्या	लाभान्वित अभ्यर्थियों की संख्या में बदलाव प्रतिशत
2016	23	4%	2898	12%
2017	236	38%	11103	44%
2018	168	27%	4085	16%
2019	153	25%	4885	20%
2020	42	7%	2028	8%
योग	**622**	**100%**	**24999**	**100%**

जनपद आज की तिथि में शिक्षा एवं कोचिंग का हब बना हुआ है किन्तु फिर भी जनपद के युवाओं का इस ओर कम खिंचाव है अर्थात युवाओं को इसकी पूर्व जानकारी नहीं होती या युवाओं का इस ओर रूझान ही नहीं है, शिक्षण मार्ग दर्शन केन्द्र की भी यही स्थिति है। निम्नवत आंकड़ों से यही स्पष्ट होता है।

कोचिंग के पश्चात युवाओं द्वारा क्या किया जा रहा है, विभाग को इसके अनुश्रवण करने एवं अधिक से अधिक युवाओं को कोचिंग से सम्बद्ध करने की ठोस रणनीति बनाते हुए कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं में दर्शाया गया है।

समूह ग एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु कोचिंग			
वर्ष	कौचिंग की संख्या	लाभान्वित अभ्यर्थियों की संख्या	व्यवसाय
2016	1	42	कम्प्यूटर/टेली/बैकिंग
2017	3	60	बैकिंग/समूह ग/ एस0एस0सी0 आदि प्रतियोगिता परीक्षा
2018	3	145	बैकिंग/समूह ग/ एस0एस0सी0 आदि प्रतियोगिता परीक्षा
2019	0	0	0
2020	0	0	0
योग	**7**	**247**	**0**

शिक्षण मार्ग दर्शन केन्द्र देहरादून की प्रगति विवरण		
वर्ष	टंकण/व्यवसाय में उत्तीर्ण अभ्यर्थियों की संख्या प्रथम एवं द्वितीय सत्र में	एक वर्षीय आशुलिपिक व्यवसाय में उर्त्तीण अभ्यर्थियों की संख्या प्रथम एवं द्वितीय सत्र में
2016	38	9
2017	28	11
2018	39	8
2019	34	5
2020	18	24

आंकड़ों के दृष्टिगत जनपद से पलायन होने की पुष्ठि होती है क्योंकि विभागीय कार्यक्रमों जैसे पंजीयन, सक्रीय पंजिका, कैरियर काउंसलिंग की संख्या, कैरियर काउंसलिंग में प्रतिभागियों की संख्या, रोजगार मेलों की संख्या में ऋणात्मक कमी देखी जा सकती है जबकि रोजगार मेले में प्रतिभागियों की संख्या तथा रोजगार मेले में चयनित अभ्यार्थियों की संख्या में वृद्धि का होना जनपद में रोजगार हेतु सुअवसर में कमी की ओर संकेत है।

खादी एवं ग्रामोद्योग

❖ प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना

खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग द्वारा संचालित प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना के तहत उद्यम स्थापित करवाने के लिए प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है, कि जनपद के पहाड़ी विकासखण्डों की अपेक्षा मैदानी विकासखण्डों में अधिक उद्यम स्थापित किये गये हैं जबकि आंकड़ों के अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि पहाड़ी विकासखण्डों में उद्यम स्थापित करने हेतु वित्तपोषण/ऋण धनराशि मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षाकृत कम है अर्थात पर्वतीय क्षेत्रान्तर्गत उद्यम स्थापना करवाने हेतु वित्तपोषण प्रक्रिया में बैंको की भूमिका अच्छी प्रतीत नहीं होती। पर्वतीय क्षेत्रों में रोजगार सृजन एवं उद्यम स्थापना की अपार सम्भावनाएं हैं। सरकारी योजनाओं

के तहत वित्तपोषण में बैंको को सरलीकृत होना चाहिए। विभाग को ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के अनुसार सर्वेक्षण कर उद्यमों को चिह्नित करते हुए आगामी कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं एवं ग्राफ में प्रदर्शित किया गया है।

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना के तहत स्थापित इकाईयों एवं व्यय राशि का वर्षवार तथा विकासखण्डवार विवरण													
क्र0सं0	विकासखण्ड का नाम	2016–17			2017–18			2018–19			2019–20		
		स्थापित इकाईयों की संख्या	ऋण की धनराशि	मार्जिन मनी	स्थापित इकाईयों की संख्या	ऋण की धनराशि	मार्जिन मनी	स्थापित इकाईयों की संख्या	ऋण की धनराशि	मार्जिन मनी	स्थापित इकाईयों की संख्या	ऋण की धनराशि	मार्जिन मनी
1	चकराता	1	50000	17500	0	0	0	4	1331578	466052	5	973684	435289
2	डोईवाला	2	1000000	300000	5	5000000	1320000	5	1770000	539500	8	7000000	1970000
3	कालसी	3	700000	245000	4	2305316	806861	4	2489474	871316	3	889474	311316
4	रायपुर	6	6921053	2392369	2	2950526	782684	15	10965602	3463516	3	1726316	484211
5	सहसपुर	0	0	0	4	3580000	1193000	12	12943601	4498594	12	9142632	2770921
6	विकासनगर	4	1700000	595000	9	4150000	1372500	9	5400000	1640000	8	5566000	1863100
योग		16	10371053	3549869	24	17985842	5475045	49	34900255	11478978	39	25298106	7834837

वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना के तहत स्थापित इकाईयों एवं व्यय राशि का तुलनात्मक विकासखण्डवार विवरण					
क्र0सं0	विकासखण्ड का नाम	स्थापित इकाईयों की संख्या	ऋण की धनराशि	मार्जिन मनी	ऋण राशि का उपयोग प्रतिशत
1	चकराता	10	2355262	918841	3%
3	कालसी	14	6384264	2234493	7%
2	डोईवाला	20	14770000	4129500	17%
4	रायपुर	26	22563497	7122780	25%
5	सहसपुर	28	25666233	8462515	29%
6	विकासनगर	30	16816000	5470600	19%
योग		**128**	**88555256**	**28338729**	**100%**

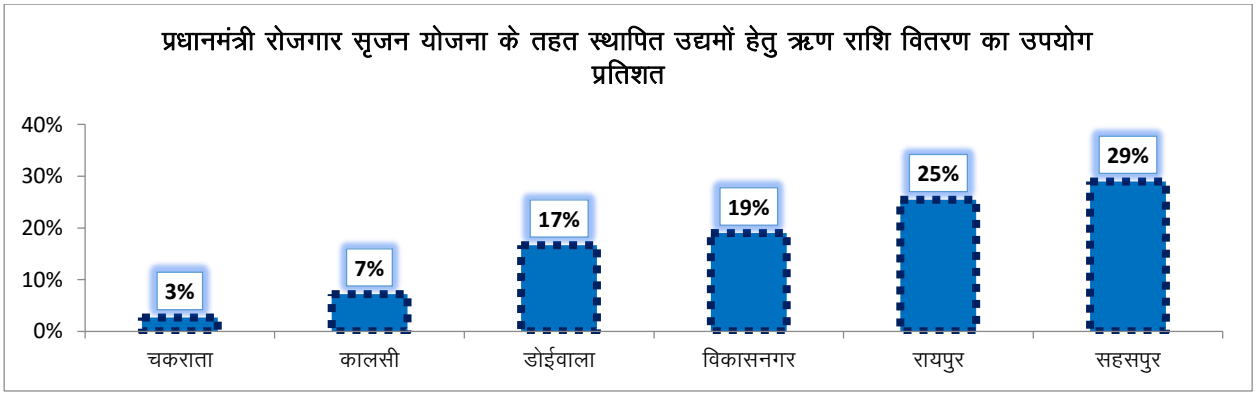

उद्यान

उद्यान विभाग द्वारा जनपदान्तर्गत फल पौध, सब्जी बीज, मसाला बीज, पुष्प बीज, मौनपालन, पॉली हाउस, एन्टी हैलनेट, मल्चिंग सीट तथा एप्पल मिशन आदि कार्यक्रमों में कार्य सम्पादित किये जा रहे हैं जिनके लिए प्राप्त आंकड़ों का विशलेषण निम्नवत किया गया है :–

उपरोक्त उल्लिखित कार्यक्रमों हेतु विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि जनपद के मैदानी विकासखण्डों की सापेक्ष पर्वतीय विकासखण्डों की स्थिति अच्छी नहीं है। विभाग द्वारा मसाला, सब्जी बीज तथा फल पौध वितरण में लगभग एक समानान्तर मानक रखा गया है अर्थात विभाग द्वारा बिना सर्वेक्षण के ही कार्यक्रमों को संचालित किया जा रहा है। सर्वविदित है कि पर्वतीय क्षेत्रों से रोजगार के अभाव में अधिक पलायन हो रहा है जबकि उद्यान के क्षेत्र में रोजगार की अपार सम्भावनाएं हैं, किन्तु विभाग की ठोस नीति के अभाव में ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमियों की रूचि उद्यान के क्षेत्र में कम हो रही है। विभाग को सभी विकासखण्डों का सर्वेक्षण कार्य करवाते हुए आगामी कार्ययोजना तैयारी करनी चाहिए। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं एवं ग्राफ में प्रदर्शित किया गया है।

विगत तीन वर्षों के मध्य उद्यान विभाग द्वारा संचालित कार्यक्रमों में भौतिक स्थिति हेतु विकासखण्डवार तुलनात्मक विवरण

क्र0स0	विकासखण्ड	मिल्चिंग सीट वितरण प्रतिशत	एन्टी हेलमेट वितरण प्रतिशत	मसाला बीज वितरण प्रतिशत	सब्जी बीज वितरण प्रतिशत	फल पौध वितरण प्रतिशत	पुष्प बीज वितरण प्रतिशत	मौनपालन प्रतिशत	पॉलीहाउस वितरण प्रतिशत	सभी कार्यक्रमों हेतु विकासखण्ड की स्थिति
1	कालसी	17.5%	25.4%	17.0%	16.5%	16.9%	4.7%	0.0%	4.4%	**12.8%**
2	चकराता	19.5%	34.0%	16.5%	17.0%	16.9%	4.6%	0.0%	5.4%	**14.2%**
3	विकासनगर	15.1%	10.9%	16.7%	16.9%	16.7%	21.3%	0.0%	20.1%	**14.7%**
4	सहसपुर	17.3%	10.8%	16.7%	16.6%	16.3%	22.1%	0.0%	24.5%	**15.5%**
5	रायपुर	15.5%	8.1%	16.5%	16.7%	16.8%	22.0%	50.0%	22.6%	**21.0%**
6	डोईवाला	15.2%	10.8%	16.6%	16.3%	16.4%	25.3%	50.0%	23.0%	**21.7%**
योग		100%	100%	100%	100%	100%	100%	100%	100%	100%

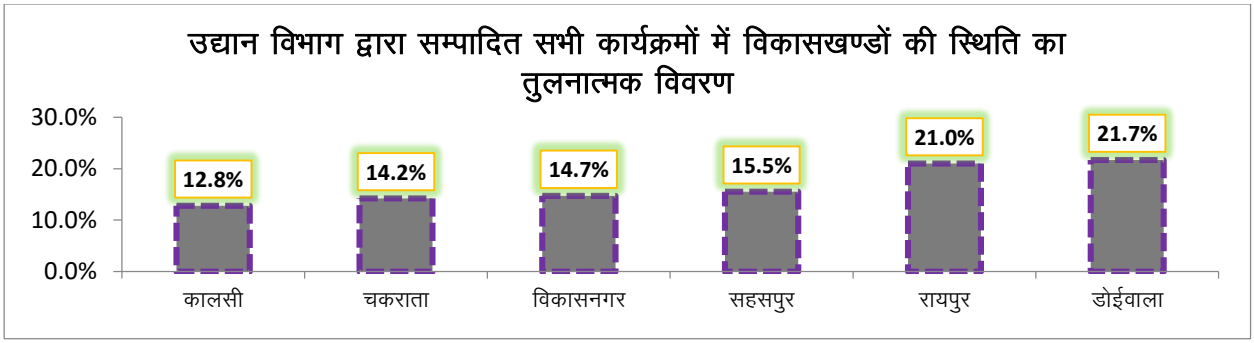

1. फल पौध, सब्जी बीज, मसाला बीज

उद्यान विभाग द्वारा विगत तीन वर्षों के लिए प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जनपद में फल पौध, सब्जी बीज तथा मसाला बीज हेतु विभाग द्वारा सभी विकासखण्डों के लिए एक जैसा मानक निर्धारण किया गया है जबकि विकासखण्ड में सम्मिलित ग्राम पंचायतों की संख्या में काफी अन्तर है। आंकड़ों से यह भी स्पष्ट होता है कि विगत वर्षों में विभाग द्वारा सभी विकासखण्डों के अन्तर्गत लगभग 16% से 17% हे0 को ही फल पौध, सब्जी बीज तथा मसाला बीज का वितरण किया गया है जो कि जनपद के भौगोलिक परिवेश के लिए बहुत ही न्यून है। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है।

❖ फल पौध

फल पौध आच्छादन का वर्षवार एवं विकासखण्डवार भौतिक व वित्तीय विवरण										
क्र0स0	विकासखण्ड	भौतिक विवरण (संख्या में)					वित्तीय विवरण (लाख में)			
		वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग	विगत तीन वर्षों में फल पौध वितरण प्रतिशत	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग
1	सहसपुर	3200	8107	29469	40776	**16.3%**	1.12	3.00	11.17	15.29
2	डोईवाला	3500	8107	29469	41076	**16.4%**	1.23	3.00	11.17	15.40
3	विकासनगर	4000	8107	29469	41576	**16.7%**	1.40	3.00	11.17	15.57
4	रायपुर	4400	8107	29469	41976	**16.8%**	1.54	3.00	11.17	15.71
5	कालसी	4500	8107	29469	42076	**16.9%**	1.58	3.00	11.17	15.75
6	चकराता	4710	8107	29469	42286	**16.9%**	1.65	3.00	11.17	15.82
योग		**24310**	**48644**	**176811**	**249765**	**100.0%**	**8.51**	**18.00**	**67.02**	**93.53**

❖ **सब्जी बीज**

सब्जी बीज वितरण का वर्षवार एवं विकासखण्डवार भौतिक व वित्तीय विवरण										
क्र0स0	विकासखण्ड	भौतिक विवरण (कु0 में)					वित्तीय विवरण (लाख में)			
		वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग	विगत तीन वर्षों में सब्जी बीज वितरण प्रतिशत	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग
1	डोईवाला	6.45	19.73	62.71	89	**16.3%**	2.27	3.03	11.59	16.89
2	कालसी	7.24	19.73	62.71	90	**16.5%**	2.547	3.03	11.59	17.17
3	सहसपुर	7.84	19.73	62.71	90	**16.6%**	2.759	3.03	11.59	17.38
4	रायपुर	8.22	19.73	62.71	91	**16.7%**	2.892	3.03	11.59	17.51
5	विकासनगर	9.45	19.73	62.71	92	**16.9%**	3.325	3.03	11.59	17.95
6	चकराता	10.1	19.73	62.71	93	**17.0%**	3.554	3.03	11.59	18.17
योग		**49.30**	**118.38**	**376.26**	**543.94**	**100%**	**17.35**	**18.18**	**69.54**	**105.1**

❖ **मसाला बीज**

मसाला बीज वितरण का वर्षवार एवं विकासखण्डवार भौतिक व वित्तीय विवरण										
क्र0स0	विकासखण्ड	भौतिक विवरण (कु0 में)					वित्तीय विवरण (लाख में)			
		वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग	विगत तीन वर्षों में मसाला बीज वितरण प्रतिशत	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग
1	चकराता	10.0	19.73	7183.00	7212.7	**16.5%**	0.28	3.03	7.48	10.79
2	रायपुर	25.0	19.73	7183.00	7227.7	**16.5%**	0.70	3.03	7.48	11.21
3	डोईवाला	35.4	19.73	7183.00	7238.1	**16.6%**	0.99	3.03	7.48	11.50
4	विकासनगर	75.0	19.73	7183.00	7277.7	**16.7%**	2.09	3.03	7.48	12.60
5	सहसपुर	100.0	19.73	7183.00	7302.7	**16.7%**	2.79	3.03	7.48	13.30
6	कालसी	250.0	19.73	7183.00	7452.7	**17.0%**	6.98	3.03	7.48	17.49
योग		**495.4**	**118.38**	**43098**	**43711.8**	**100%**	**13.84**	**18.18**	**44.88**	**76.90**

2. पुष्प बीज तथा पॉलीहाउस

जनपदान्तर्गत पुष्प बीज एवं पॉलीहाउस वितरण हेतु विभागीय आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जनपद के पर्वतीय विकासखण्डों में उल्लिखित कार्यक्रमों का प्रतिशत मैदानी विकासखण्डों के सापेक्ष बहुत न्यूनतम है जैसे विकासखण्ड कालसी और चकराता में सबसे कम 4% से 5% तथा सबसे अधिक विकासखण्ड डोईवाला सहसपुर 24% से 25% के माध्यम से उल्लिखित सुविधाएं उपलब्ध करवाई गयी। जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में भी पुष्प बीज और पॉलीहाडस की अधिक मांग है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है।

❖ पुष्प बीज वितरण

पुष्प बीज वितरण का वर्षवार एवं विकासखण्डवार भौतिक व वित्तीय विवरण										
क्र0स0	विकासखण्ड	भौतिक विवरण (हे0 में)					वित्तीय विवरण (लाख में)			
		वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग	विगत तीन वर्षों में फल पौध वितरण प्रतिशत	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग
1	कालसी	0	5.15	1.25	6.40	**4.6%**	0.00	2.61	0.25	2.86
2	चकराता	0	5.15	1.25	6.40	**4.6%**	0.00	2.61	0.25	2.86
3	विकासनगर	1.00	22.89	5.56	29.45	**21.3%**	0.20	11.61	1.11	12.92
4	रायपुर	0.50	24.03	5.83	30.36	**22.0%**	0.10	12.19	1.17	13.46
5	सहसपुर	2.00	22.89	5.56	30.45	**22.1%**	0.40	11.61	1.11	13.12
6	डोईवाला	6.50	22.89	5.56	34.95	**25.3%**	1.30	11.61	1.11	14.02
योग		**10.00**	**103.00**	**25.01**	**138.01**	**100%**	**2.00**	**52.24**	**5.00**	**59.24**

❖ पॉली हाउस वितरण

पॉली हाउस वितरण का वर्षवार एवं विकासखण्डवार भौतिक व वित्तीय विवरण										
क्र0 स0	विकासखण्ड	भौतिक विवरण (वर्ग मी0 में)					वित्तीय विवरण (लाख में)			
		वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग	विगत तीन वर्षों में पॉलीहाउस वितरण प्रतिशत	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग
1	कालसी	500.00	2265.00	1250.00	4015	**4.4%**	2.48	11.30	6.83	20.61
2	चकराता	1500.00	2265.00	1250.00	5015	**5.4%**	7.45	11.30	6.83	25.58

3	विकासनगर	2925.00	10066.67	5555.56	18547	**20.1%**	14.52	50.24	30.44	95.2
4	रायपुर	4400.00	10570.00	5833.33	20803	**22.6%**	21.84	52.75	31.97	106.6
5	डोईवाला	5600.00	10066.67	5555.56	21222	**23.0%**	27.80	50.24	30.44	108.48
6	सहसपुर	6975.00	10066.67	5555.56	22597	**24.5%**	34.62	50.24	30.44	115.3
योग		**21900**	**45300**	**25000**	**92200**	**100%**	**108**	**226**	**136**	**471.7**

3. एन्टी हेलमेट तथा मल्चिंग सीट वितरण

विभाग द्वारा विगत तीन वर्षों के दौरान एन्टी हेलमेट तथा मल्चिंग सीट वितरण में विकासखण्ड रायपुर में सबसे कम लगभग **8%** से **15%** तथा सबसे अधिक विकासखण्ड चकराता में लगभग **34%** से **19%** की दर से वितरण किया गया जबकि वर्तमान समय में उक्त आधुनिक गतिविधि का उपयोग हर उद्यमी करना चाह रहा है फिर भी विगत तीन वर्षों के लिए प्रगति आशापूर्ण नहीं है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है।

❖ एन्टी हेलमेट वितरण

एन्टी हेलमेट वितरण का वर्षवार एवं विकासखण्डवार भौतिक व वित्तीय विवरण										
क्र0 स0	विकासखण्ड	भौतिक विवरण (वर्ग मी0 में)					वित्तीय विवरण (लाख में)			
		वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग	विगत तीन वर्षों में एन्टी हेलमेट वितरण प्रतिशत	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग
1	रायपुर	700	102417	9984	113101	**8.1%**	0.12	17.92	17.47	35.51
2	सहसपुर	580	136556	13311	150447	**10.8%**	0.10	23.90	23.29	47.29
3	डोईवाला	600	136556	13311	150467	**10.8%**	0.11	23.90	23.29	47.30
4	विकासनगर	840	136556	13311	150707	**10.9%**	0.15	23.90	23.29	47.34
5	कालसी	15112	307250	29950	352312	**25.4%**	2.64	53.77	52.41	108.8
6	चकराता	22668	409667	39933	472268	**34.0%**	3.97	71.69	69.89	145.5
योग		**40500**	**1229000**	**119801**	**1389301**	**100%**	**7.09**	**215.08**	**209.64**	**431.8**

❖ **मल्चिंग सीट वितरण**

मल्चिंग सीट वितरण का वर्षवार एवं विकासखण्डवार भौतिक व वित्तीय विवरण										
क्र0स0	विकासखण्ड	भौतिक विवरण (हे0 में)					वित्तीय विवरण (लाख में)			
		वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग	विगत तीन वर्षों में मल्चिंग सीट वितरण प्रतिशत	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग
1	विकासनगर	15500	30	14.67	15545	**15.1%**	3.50	5.12	2.70	11.32
2	डोईवाला	15600	30	14.67	15645	**15.2%**	3.53	5.12	2.70	11.35
3	रायपुर	15881	30	14.67	15926	**15.5%**	3.59	5.12	2.70	11.41
4	सहसपुर	17800	30	14.67	17845	**17.3%**	4.02	5.12	2.70	11.84
5	कालसी	18000	30	14.67	18045	**17.5%**	4.07	5.12	2.70	11.89
6	चकराता	20000	30	14.67	20045	**19.5%**	4.52	5.12	2.70	12.34
योग		**102781**	**180**	**88**	**103049**	**100%**	**23.23**	**30.72**	**16.20**	**70.15**

❖ **मौनपालन**

मौनपालन का वर्षवार एवं विकासखण्डवार भौतिक व वित्तीय विवरण										
क्र0स0	विकासखण्ड	भौतिक विवरण (संख्या में)					वित्तीय विवरण (लाख में)			
		वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग	विगत तीन वर्षों में मौनपालन का प्रतिशत	वर्ष 2017–18	वर्ष 2018–19	वर्ष 2019–20	योग
1	सहसपुर	0	0	0	0	**0.0%**	0	0	0	0
2	विकासनगर	0	0	0	0	**0.0%**	0	0	0	0
3	कालसी	0	0	0	0	**0.0%**	0	0	0	0
4	चकराता	0	0	0	0	**0.0%**	0	0	0	0
5	रायपुर	0	130.00	175.00	305	**50.0%**	0	2.08	2.80	4.88
6	डोईवाला	0	130.00	175.00	305	**50.0%**	0	2.08	2.80	4.88
योग		**0**	**260**	**350**	**610**	**100%**	**0.00**	**4.16**	**5.60**	**9.76**

पर्यटन

देहरादून जनपद में विगत चार वर्षों के दौरान आये पर्यटकों हेतु विभाग से प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि वर्ष 2016–17 के लिए पर्यटकों की संख्या में 19% तथा वर्ष 2019–20 में 76% की ऋणात्मक कमी केदारनाथ आपदा एवं कोविड–19 वैश्विक महामारी के कारण आई जबकि जनपद में हर वर्ष पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि देखी जा सकती है अर्थात जनपदान्तर्गत पर्यटन के क्षेत्र में स्वरोजगार की अत्यधिक सम्भावनाएं मौजूद है। जनपद अन्तर्गत ईको पर्यटन के साथ–साथ होमस्टे जैसी महत्वपूर्ण योजना को बढ़ावा दिये जाने की और अधिक आवश्यकता है जिसके लिए पर्यटन विभाग को पौराणिक धार्मिक स्थलों के साथ–साथ इको पर्यटन स्थलों के सुव्यवस्थित विकास करने की कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

विगत वर्षों के मध्य देहरादून जनपद में आये पर्यटकों का वर्षवार तुलनात्मक विवरण

वर्ष	भारतीय पर्यटक			विदेशी पर्यटक			कुल पर्यटक		
	वर्ष में आये कुल पर्यटक	पर्यटकों की संख्या में वर्षवार बदलाव	पर्यटकों की संख्या में वर्षवार बदलाव प्रतिशत	वर्ष में आये कुल पर्यटक	पर्यटकों की संख्या में वर्षवार बदलाव	पर्यटकों की संख्या में वर्षवार बदलाव प्रतिशत	वर्ष में आये कुल पर्यटक	पर्यटकों की संख्या में वर्षवार बदलाव	पर्यटकों की संख्या में वर्षवार बदलाव प्रतिशत
2015-16	2609993	NA	NA	23746	NA	NA	2633739	NA	NA
2016-17	2118533	-491460	-19%	27956	4210	18%	2146489	-487250	-19%
2017-18	2453998	335465	16%	30291	2335	8%	2484289	337800	16%
2018-19	2875467	421469	17%	29836	-455	-2%	2905303	421014	17%
2019-20	696079	-2179388	-76%	6951	-22885	-77%	703030	-2202273	-76%

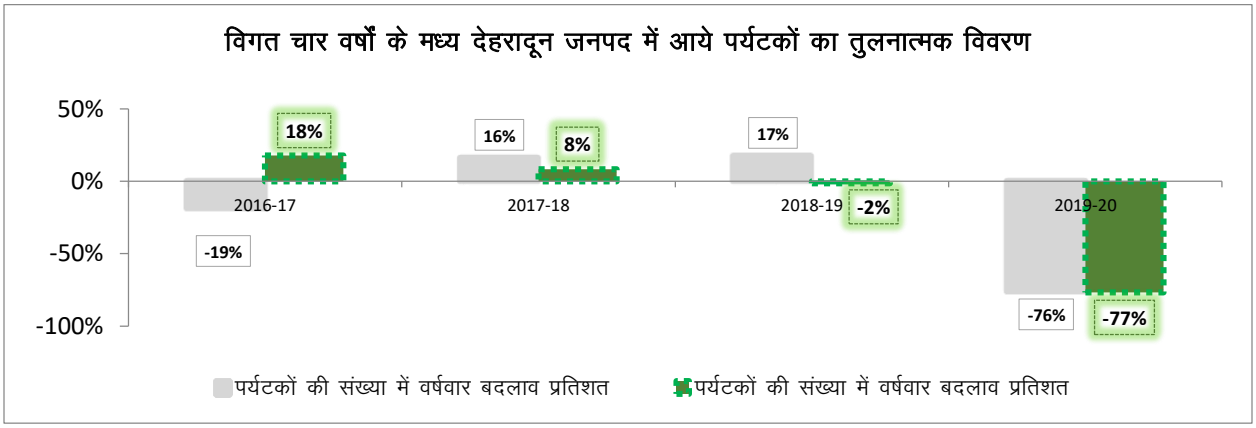

❖ होमस्टे

विभाग द्वारा जनपदान्तर्गत विगत चार वर्षों के दौरान पंजीकृत होमस्टे हेतु प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद के विकासखण्ड चकराता में सबसे कम 6.3% तथा सबसे अधिक विकासखण्ड रायपुर में 39% होमस्टे स्थापित होने की पुष्टि होती है, किन्तु विकासखण्ड कालसी में अभी तक कोई भी

होमस्टे स्थापित नहीं हुआ है अर्थात विकासखण्ड कालसी, चकराता तथा विकासनगर की ओर पर्यटकों का कम आना–जाना है, जबकि जनपदान्तर्गत सभी होमस्टे के माध्यम से 4211 पर्यटकों को सिल्वर, ब्रॉज तथा गोल्ड सुविधाओं के साथ प्रतिदिन ठहराया जा सकता है। विकासखण्डों के सभी पर्यटक स्थलों को एक माला में पिरोते हुए विभाग को टूर–पैकेजों को सृजित कर आगामी कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

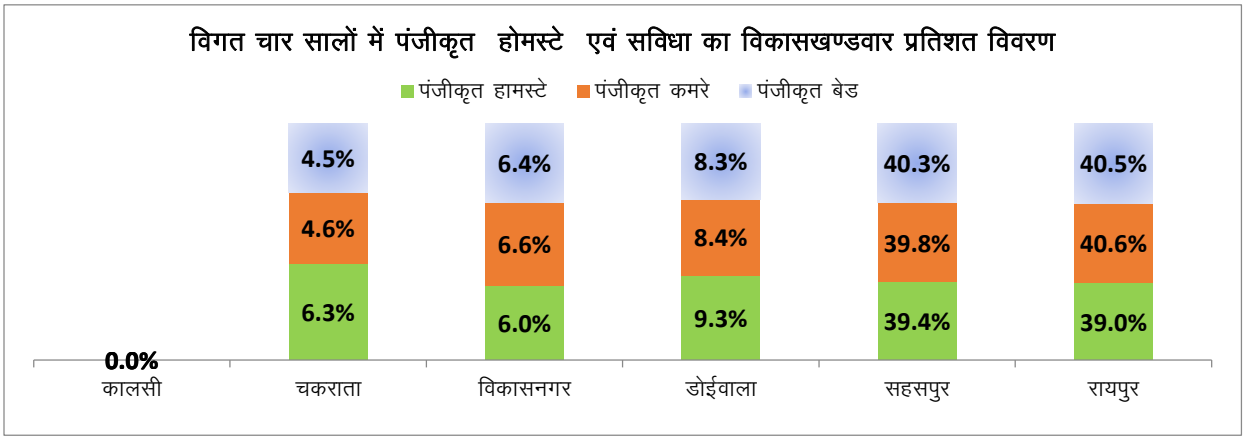

जनपद में पंजीकृत होमस्टे का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण की संख्या					
विकासखण्ड / वर्ष	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	विगत चार वर्षों का योग
कालसी	0	0	0	0	**0**
विकासनगर	0	2	6	18	**26**
चकराता	0	1	7	19	**27**
डोईवाला	4	11	8	17	**40**
रायपुर	3	22	44	99	**168**
सहसपुर	3	33	67	67	**170**
योग	**10**	**69**	**132**	**220**	**431**

होमस्टे में पंजीकृत कक्षों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण					
विकासखण्ड / वर्ष	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	विगत चार वर्षों का योग
कालसी	0	0	0	0	**0**
चकराता	0	6	26	63	**95**
विकासनगर	0	12	28	95	**135**
डोईवाला	20	56	28	67	**171**
सहसपुर	11	167	337	299	**814**
रायपुर	16	117	230	467	**830**
योग	**47**	**358**	**649**	**991**	**2045**

होमस्टे में पंजीकृत शैय्याओं की संख्या का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण					
विकासखण्ड / वर्ष	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	विगत चार वर्षों का योग
कालसी	0	0	0	0	**0**
चकराता	0	12	52	126	**190**
विकासनगर	0	24	56	190	**270**
डोईवाला	40	114	56	140	**350**
सहसपुर	22	371	692	610	**1695**
रायपुर	32	243	478	953	**1706**
योग	**94**	**764**	**1334**	**2019**	**4211**

होमस्टे हेतु क्षेत्रवार आंकड़ों के अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थापित होमस्टे की संख्या रायपुर एवं सहसपुर विकासखण्डों के शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा बहुत न्यूनतम है, जिनमें 21% गोल्डन, 38% ब्राँज तथा 41% सिल्वर सुविधाओं से युक्त होमस्टे सम्मिलित हैं। अर्थात जनपद में कुल पंजीकृत होमस्टे में ग्रामीण क्षेत्र में मात्र 22% होमस्टे ही स्थापित हुए, जबकि नगरीय क्षेत्रों में 78% होमस्टे स्थापित हैं। विभाग को नगरीय क्षेत्र की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में होमस्टे स्थापित करने की ओर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हुए आगामी कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं एवं ग्राफ में दर्शाया गया है।

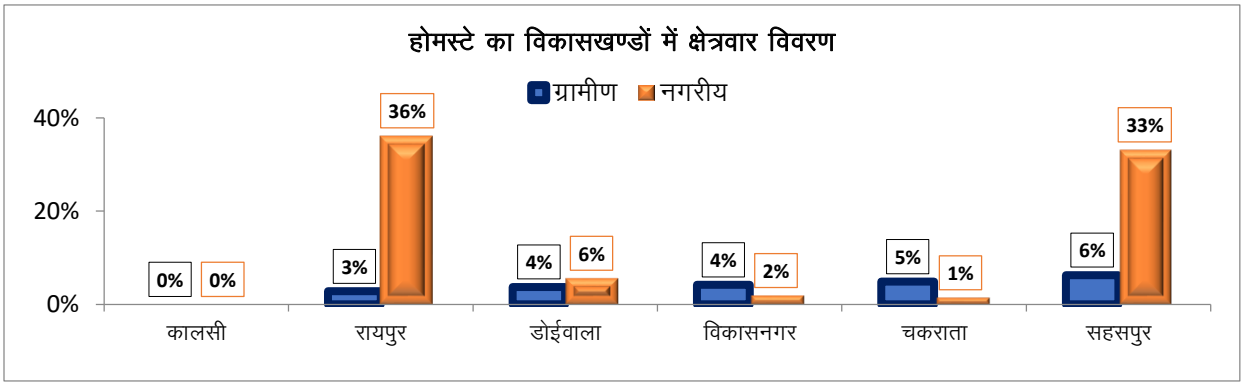

जनपद में पंजीकृत होमस्टे का वर्षवार एवं विकासखण्डवार क्षेत्रवार विवरण															
वर्ष	विकासखण्ड / होमस्टे का प्रकार	विकासनगर		सहसपुर		कालसी		चकराता		डोईवाला		राईपुर		योग	
		ग्रामीण	नगरीय	ग्रामीण	नगरीय	ग्रामीण	नगरीय	ग्रामीण	नगरीय	ग्रामीण	नगरीय	ग्रामीण	नगरीय	ग्रामीण	नगरीय
2016-17	गोल्ड	0	0	1	0	0	0	0	0	2	0	0	2	3	2
	सिल्वर	0	0	0	2	0	0	0	0	2	0	1	0	3	2
	ब्रोंज	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0

2017-18	गोल्ड	0	0	1	6	0	0	0	0	1	0	0	1	2	7
	सिल्वर	2	0	1	12	0	0	0	1	3	2	1	8	7	23
	ब्रोंज	0	0	0	13	0	0	0	0	0	5	0	12	0	30
2018-19	गोल्ड	0	0	0	18	0	0	1	1	0	1	0	16	1	36
	सिल्वर	5	0	1	21	0	0	2	0	2	3	0	8	10	32
	ब्रोंज	0	1	0	27	0	0	2	1	0	2	1	19	3	50
2019-20	गोल्ड	4	0	8	7	0	0	1	2	0	0	3	13	16	22
	सिल्वर	5	6	14	22	0	0	1	1	6	4	3	39	29	72
	ब्रोंज	2	1	1	15	0	0	14	0	0	7	3	38	20	61
योग		**18**	**8**	**27**	**143**	**0**	**0**	**21**	**6**	**16**	**24**	**12**	**156**	**94**	**337**

विकासखण्ड / प्रकार	**गोल्ड**	ब्रोंज	**सिल्वर**
विकासनगर	4	4	18
सहसपुर	41	56	73
कालसी	0	0	0
चकराता	5	17	5
डोईवाला	4	14	22
रायपुर	35	73	60
योग	**89**	**164**	**178**
योग प्रतिशत	**21%**	**38%**	**41%**

पशुपालन

❖ गौ–पालन

जनपद में पशुपालन विभाग द्वारा विगत चार वर्षों के दौरान SCP तथा TSP के अन्तर्गत गौ–पालन हेतु विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उल्लिखित कार्यक्रमों हेतु आंकड़ा जहाँ वर्ष 2016–17 में 38% था वहीं वर्ष 2019–20 तक आते–आते 17% गिरकर 21% रह जाता है। अर्थात जनपदान्तर्गत समय के बढ़ने के साथ–साथ गौ–पालन हेतु पशुपालकों की रूचि में गिरावट का आना इस बात की ओर इशारा करता है कि पशुपालकों को उन्नत प्रजाति की गाय उपलब्ध नहीं करवायी जा रही है। विभाग को उन्नत नस्ल की गाय पशुपालकों को उपलब्ध करवाने की आगामी ठोस कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए, साथ ही गाय के दूध एवं मल–मूत्र से निर्मित होने वाली वस्तुओं की उपयोगिता को सर्वसाधारण में प्रसारित करने का प्राविधान करना उचित होगा। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

विगत चार सालों के दौरान SCP तथा TSP के अन्तर्गत गौ–पालन का तुलनात्मक विवरण				
वर्ष	SCP के अन्तर्गत गौ–पालन इकाई	TSP के अन्तर्गत गौ–पालन इकाई	योग	वर्षवार तुलनात्मक प्रतिशत
2016–17	45	39	84	**38%**
2017–18	9	24	33	**15%**
2018–19	37	20	57	**26%**
2019–20	13	33	46	**21%**
योग	**104**	**116**	**220**	**100%**

❖ बकरी–पालन

SCP तथा TSP के अन्तर्गत बकरी–पालन कार्यक्रम हेतु विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपद में बकरीपालन के प्रति पशुपालकों की रूचि में वृद्धि होती दिखाई देती है, किन्तु विभाग मांग के अनुसार बकरीपालन हेतु इच्छुक पशुपालकों की मांग पूर्ति नहीं कर पा रहा है। विभाग के बजट में वृद्धि किया जाना उचित होगा जिससे अधिक से अधिक लाभार्थियों को लाभान्वित किया जा सके एवं कार्यक्रम में सामान्य जाति के पशुपालकों को भी सम्मिलित किये जाने का भी प्राविधान हो। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

विगत चार सालों के दौरान SCP तथा TSP के अन्तर्गत बकरी–पालन का तुलनात्मक विवरण				
वर्ष	**SCP के अन्तर्गत बकरी–पालन इकाई**	**TSP के अन्तर्गत बकरी–पालन इकाई**	**योग**	**वर्षवार तुलनात्मक प्रतिशत**
2016–17	5	5	10	11%
2017–18	4	6	10	11%
2018–19	30	7	37	41%
2019–20	16	17	33	37%
योग	**55**	**35**	**90**	**100%**

❖ अहिल्या बाई होल्कर योजना

विभाग द्वारा विगत चार वर्षों के दौरान अहिल्या बाई होल्कर योजना के अन्तर्गत गौ–पालन हेतु विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि वर्तमान में उक्त योजना के किसी भी मद में किसी भी लाभार्थी को लाभान्वित नहीं किया गया है, जबकि उक्त व्यवसाय को पशुपालकों की आय में अतिरिक्त आय स्रोत के रूप में जोड़ा जा सकता है, एवं उनकी सामाजिक–आर्थिकी के विकास को सुदृढ़ किया जा सकता है। विभाग की उल्लिखित योजना हेतु बजट वृद्धि का प्राविधान किया जाना भविष्य में रॉल मॉडल के रूप में बकरी–भेड़ पालकों को प्रोत्साहित करना होगा। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

अहिल्या बाई होल्कर योजनान्तर्गत विगत चार सालों के दौरान बकरी–पालन का तुलनात्मक विवरण										
वर्ष	सामान्य योजना के तहत बकरी–पालन इकाई		SCP के तहत बकरी–पालन इकाई		TSP के तहत बकरी–पालन इकाई		योग		महायोग	वर्षवार तुलनात्मक प्रतिशत
	बकरी	भेड़	बकरी	भेड़	बकरी	भेड़	बकरी	भेड़		
2016–17	6	1	5	1	1	0	12	2	14	**50%**
2017–18	4	0	3	1	3	3	10	4	14	**45%**
2018–19	0	0	0	0	0	0	0	0	0	**0%**
2019–20	0	0	0	0	0	0	0	0	0	**0%**
योग	**10**	**1**	**8**	**2**	**4**	**3**	**22**	**6**	**28**	**100%**

❖ चारा बीज एवं चारा मिनी किट्स वितरण कार्यक्रम

1. उल्लिखित कार्यक्रम के लिए विभाग द्वारा विगत चार वर्षों के मध्य केन्द्रपोषित एवं जिला योजना के तहत वितरण की गई चारा बीज एवं चारा मिनी किट्स हेतु प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है, कि वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के दौरान क्रमशः 53% व 44% की गिरावट आती है, अर्थात ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालकों द्वारा चारा उगाने एवं चारा मिनी किट्स में उपलब्ध करवाये जा रहे पशु आहार के लिए पूर्णरूप से तैयार नहीं हैं या पशुपालकों को समय पर उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। विभाग को पौष्टिक पशु आहार तैयार की नई तकनीकी के साथ न्याय पंचायत अथवा विकासखण्डस्तर पर समूह गठित कर प्रशिक्षण देते हुए क्रय–विक्रय केन्द्र स्थापित करने की आगामी कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए। जनपद में उल्लिखित कार्यक्रमों में जिला योजना का ही अधिक योगदान प्रलक्षित होता है। सम्बन्धित आंकड़े निम्नवत तालिकाओं में प्रदर्शित किये गये हैं।

विगत चार वर्षों के मध्य चारा बीज वितरण का वर्षवार तुलनात्मक विवरण (किग्रा में)										
वर्ष	सामान्य योजना के तहत चारा बीज वितरण		SCP के तहत चारा बीज वितरण		TSP के तहत चारा बीज वितरण		योग		महायोग	वर्षवार तुलनात्मक प्रतिशत
	केन्द्र पोषित	जिला योजना	केन्द्र पोषित	जिला योजना	केन्द्र पोषित	जिला योजना	केन्द्र पोषित	जिला योजना		
2016–17	9536	6756	2352	1667	495	351	12383	8774	21157	**69%**
2017–18	0	863	0	726	0	266	0	1855	1855	**6%**
2018–19	0	2405	0	260	0	55	0	2720	2720	**9%**
2019–20	0	3859	0	953	0	200	0	5012	5012	**16%**

योग	**9536**	**13883**	**2352**	**3606**	**495**	**872**	**12383**	**18361**	**30744**	**100%**
योग प्रतिशत	**31%**	**45%**	**8%**	**12%**	**2%**	**3%**	**40%**	**60%**	**100%**	

विगत चार वर्षों के मध्य चारा मिनी किट्स वितरण का वर्षवार तुलनात्मक विवरण (संख्या में)										
वर्ष	सामान्य योजना के तहत चारा मिनी किट्स वितरण		SCP के तहत चारा मिनी किट्स वितरण		TSP के तहत चारा मिनी किट्स वितरण		योग		महायोग	वर्षवार तुलनात्मक प्रतिशत
	केन्द्र पोषित	जिला योजना	केन्द्र पोषित	जिला योजना	केन्द्र पोषित	जिला योजना	केन्द्र पोषित	जिला योजना		
2016–17	2435	2508	600	618	127	130	3162	3256	6418	**65%**
2017–18	0	250	0	213	0	67	0	530	530	**5%**
2018–19	0	751	0	104	0	21	0	876	876	**9%**
2019–20	0	1596	0	394	0	83	0	2073	2073	**21%**
योग	**2435**	**5105**	**600**	**1329**	**127**	**301**	**3162**	**6735**	**9897**	**100%**
योग प्रतिशत	**25%**	**52%**	**6%**	**13%**	**1%**	**3%**	**32%**	**68%**	**100%**	

❖ मुर्गीपालन

वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य मुर्गीपालन हेतु विभाग द्वारा उपलब्ध करवाये गये आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इस दौरान अधिकतम 6% की वृद्धि के साथ विभाग द्वारा मुर्गीपालन हेतु चूजे उपलब्ध करवाये गये, अर्थात जनपद में मुर्गीपालन के व्यवसाय में कृषकों की रूचि में इजाफा होना जनपद की सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु अच्छा द्योतक है। वर्तमान समय में जनपद ही नहीं राज्य के हर हिस्से में मुर्गीपालन का व्यवसाय रोजगार देने में चरम सीमा पर है, क्योंकि हर जगह इसकी डिमाण्ड दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। किन्तु जनपद के मुर्गीपालक जनपद की ही मांग को ही पूरा नहीं कर पा रहे हैं जिस कारण राज्य के बाहर से मुर्गों की आपूर्ति की जा रही है।

राज्य में मुर्गीपालन के व्यवसाय को यदि बढ़ाना है, तो विभाग द्वारा मुर्गीपालकों को समुचित व्यवस्था देने का प्राविधान किया जाना चाहिए, जिससे स्थानीय मुर्गीपालकों द्वारा बाहरी राज्यों के मुर्गीपालकों से प्रतिस्पर्धा कर सके, क्योंकि बाहरी मुर्गीपालकों द्वारा राज्य के मुर्गीपालकों से कम मूल्य दर पर मुर्गों को उपलब्ध करवाया जा रहा है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाये गये हैं।

विगत चार सालों के दौरान मुर्गीपालन का वर्षवार तुलनात्मक विवरण (संख्या लाख में)					
वर्ष	सामान्य योजना के तहत मुर्गीपालन	SCP के तहत मुर्गीपालन	TSP के तहत मुर्गीपालन	योग	वर्षवार तुलनात्मक प्रतिशत
2016–17	12.33	13.67	0.87	26.87	**24%**
2017–18	13.73	12.19	0.87	26.78	**24%**
2018–19	15.45	8.94	1.47	25.86	**23%**
2019–20	21.50	10.32	2.22	34.03	**30%**
योग	**63.00**	**45.12**	**5.43**	**113.55**	**100%**
योग प्रतिशत	**55%**	**40%**	**5%**	**100%**	

महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास

❖ आंगनवाड़ी केन्द्र

जनपद देहरादून में वर्तमान समय में कुल 1657 आंगनवाड़ी केन्द्र एवं 250 मिनी आंगनवाड़ी केन्द्र संचालित हो रहे हैं। आंगनवाड़ी केन्द्रों में 16 पद कार्यकर्ती एवं 31 सहायिकाओं के पद रिक्त चल रहे हैं, वहीं मिनी आंगनवाड़ी केन्द्रों में भी 5 पद कार्यकर्ती के रिक्त हैं। विभाग को शीघ्र पदापूर्ति की कार्यवाही करनी चाहिए। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिकाओं में प्रदर्शित किये गये हैं।

आंगनवाड़ी केन्द्र हेतु वर्तमान विवरण					
विकासखण्ड	**स्वीकृत/संचालित आंगनवाड़ी केन्द्र**	**कार्यरत आंगनवाड़ी कार्यकर्ति**	**कार्यरत आंगनवाड़ी सहायिका**	**आंगनवाड़ी कार्यकर्तियों हेतु रिक्त पद**	**आंगनवाड़ी सहायिकाओं हेतु रिक्त पद**
कालसी	126	125	125	-1	-1
चकराता	148	146	141	-2	-7
डोईवाला	320	319	318	-1	-2
रायपुर	209	209	204	0	-5
विकासनगर	249	243	244	-6	-5
सहसपुर	316	312	311	-4	-5
शहर	289	287	283	-2	-6
योग	**1657**	**1641**	**1626**	**-16**	**-31**

मिनी आंगनवाड़ी केन्द्र हेतु वर्तमान विवरण			
विकासखण्ड	**स्वीकृत/संचालित मिनी आंगनवाड़ी केन्द्र**	**कार्यरत आंगनवाड़ी कार्यकर्ति**	**आंगनवाड़ी कार्यकर्तियों हेतु रिक्त पद**
कालसी	67	67	0
चकराता	67	64	-3
डोईवाला	18	18	0
रायपुर	14	14	0
विकासनगर	23	22	-1
सहसपुर	27	27	0
शहर	34	33	-1
योग	**250**	**245**	**-5**

❖ टेक होम राशन

जनपद के अन्तर्गत लाभार्थी समूह के 06 माह से 3 वर्ष के बच्चों, अतिकुपोषित बच्चों, गर्भवती एवं धात्री महिलाओं को प्रत्येक माह निर्धारित मानकों के अनुसार पूरक पोषाहार (दलिया, सूजी, मूंगफली के दाने, अण्डा, चौलाई के लड्डू, भूना चना, चिवड़ा/पोहा, इलायची दाना, गुड़, सोयाबीन, राजमा, मूंग की दाल (साबूत)/छिलका, भूने मुरमुरे, लाल मलका, काला चना, मण्डुवा का आटा, आयोडीन नमक आदि) टेक होम राशन विकेन्द्रिकरण व्यवस्था में उपलब्ध करवाया जाता है। लाभार्थियों को पूरक पोषाहार उपभोग, रख–रखाव, गुणवत्ता व इससे होने वाले लाभ के सम्बन्ध में परामर्श दिया जाता है। वर्तमान में टेक होम राशन 52 महिला स्वंय सहायता समूहों के माध्यम से लाभार्थियों को आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों/सहायिकाओं एवं मिनी आ0बा0 कार्यकत्रियों द्वारा वितरित किया जा रहा है।

लाभार्थी वर्ग	किलो कैलोरी	प्रोटीन (ग्राम में)	दर (रू0में)
06 माह से 3 वर्ष के बच्चें	500	12 से 15	8.00
अतिकुपोषित बच्चे	800	20 से 25	12.00
गर्भवती एवं धात्री महिलायें	600	18 से 20	9.50

❖ कुक्ड फूड योजना

सही आदतों के विकास हेतु 3–6 वर्ष के बच्चों में सफाई तथा आहार सम्बन्धी आंगनवाड़ी केन्द्र पर बच्चों को पोषाहार विभिन्न व्यंजनों के रूप में परोसकर उपलब्ध किया जाता है। योजना के तहत प्रत्येक केन्द्र पर 07 महिला सदस्यीय **''माता समिति''** का गठन किया गया है, जिसमें अध्यक्ष का चयन समस्त सदस्यों द्वारा किया जायेगा व सचिव आंगनबाड़ी कार्यकत्री होती है। उल्लिखित योजना में धनराशि का आंवटन सीधे अध्यक्ष व सचिव के संयुक्त खाते में हस्तान्तरित की जाती है। समस्त आंगनबाड़ी केन्द्रों हेतु साप्ताहिक **व्यंजन सूची** नाश्ते व दोपहर भोजन हेतु उपलब्ध करवाई गई है, जिसके मानक निम्नवत् है :–

लाभार्थी वर्ग	किलो कैलोरी	प्रोटीन (ग्राम में)	दर (रू0में)
3 से 6 वर्ष के बच्चें	500	12 से 15	8.00
अतिकुपोषित बच्चे	800	20 से 25	12.00

❖ व्यंजन तालिका

क्र0स0	दिन	नाष्ता	दिन का भोजन
1	सोमवार	बिस्कुट	पुलाव
2	मंगलवार	भुना चना, गुड़	हलवा
3	बुधवार	इलायची दाना, लईया	भरवा पराठा
4	वीरवार	मूंगफली	खिचडी
5	शुक्रवार	बिस्कुट	गुलगुले
6	शनिवार	भुना चना, गुड	नमकीन दलिया

टेक होम राषन एवं कुक्ड–फूड लाभार्थियों का विवरण						
क्र0सं0	वर्ष	06 माह से 03 वर्ष के बच्चे	3–6 वर्ष के बच्चे	गर्भवती महिलाएं	धात्री महिलाएं	योग
3	2016–17	65105	18960	11392	13263	108720
4	2017–18	60178	17446	10953	12952	101529
5	2018–19	62711	17371	12401	13572	106055
6	2019–20	65584	16324	11969	14458	108335

❖ मुख्यमंत्री बाल पोषण योजना

राज्य को कुपोषण से मुक्त करने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री बाल पोषण योजना का आरम्भ किया गया है, जिसके अन्तर्गत कुपोषित एवं अतिकुपोषित बच्चों हेतु स्थानीय खद्यानों युक्त ''ऊर्जा पाउडर'' तैयार किया गया है। ''ऊर्जा'' पाउडर में ऊर्जा, प्रोटीन, आयरन व कैल्शियम की मात्रा पर्याप्त है, जो कि अतिकुपोषित एवं कुपोषित बच्चों के लिये उपयोगी है। पाउडर गेहूँ का आटा, सोयाबीन, भूना चना, भूनी मूंगफली, मण्डुवे का आटा, चीनी/गुड़ आदि को निर्धारित मात्रा अनुसार मिलाकर तैयार किया जाता है। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

06 माह से 01 वर्ष के कुपोषित एवं अतिकुपोषित बच्चें हेतु	1.250 कि0ग्रा0	25 दिवस हेतु
01–05 वर्ष के कुपोषित एवं अतिकुपोषित बच्चें हेतु	272.50 कि0ग्रा0	25 दिवस हेतु

वर्षवार लाभान्वित बच्चों की संख्या			
क्र0सं0	वर्ष	लाभान्वित बच्चों की संख्या	
		कुपोषित बच्चे	अतिकुपोषित बच्चे
01	2017–18	1758	122
02	2018–19	1384	142
03	2019–20	1035	138

❖ मुख्यमंत्री बाल पलाश योजना

इस योजना के अन्तर्गत राज्य में बच्चों के वजन एवं पोषण में सुधार, शारीरिक विकास, आंगनबाड़ी केन्द्रों पर बच्चों की संख्या में वृद्धि एवं निरन्तरता को प्रोत्साहित करने के लिए आंगनबाड़ी केन्द्रों में 3–6 वर्ष के सभी बच्चों को सप्ताह में दो दिन अण्डा एवं दो दिन मौसमी फल या केला उपलब्ध कराया जा रहा है।

उबला अण्डा – **बुधावार व शनिवार**

केला या मौसमी फल– **सोमवार व मंगलवार**

सप्ताह में दो दिन अण्डा एवं दो दिन मौसमी फल या केला प्राप्त करने वाले बच्चे		
क्र0स0	**विकासखण्ड**	**संख्या**
1	रायपुर	221
2	विकासनगर	574
3	चकराता	764
4	कालसी	865
5	सहसपुर	2372
6	डोईवाला	2404
7	शहर	3575
योग		**10775**

❖ प्रधानमंत्री मातृ वन्दना योजना

पात्र लाभार्थी महिला द्वारा गर्भवती होने के 150 दिन के भीतर आंगनबाड़ी केन्द्र पर अपना पंजीकरण करवाया जाता है। तद्पोरान्त आंगनबाड़ी कार्यकत्री द्वारा लाभार्थी महिला का आवेदन भरा जाता है, जिसमें उसके समस्त आवश्यक दस्तावेज जमा किये जाते है। सम्पूर्ण रूप से भरा हुआ आवेदन–पत्र आंगनबाड़ी कार्यकत्री द्वारा अपनी क्षेत्रीय सुपरवाइजर को प्राप्त कराया जाता है। सुपरवाइजर द्वारा उक्त आवेदन का भलीभॉति परीक्षण कर, आवेदन को ऑनलाइन किया जाता है। ऑनलाइन जमा आवेदन–पत्रों को सम्बन्धित परियोजना की सी0डी0पी0ओ0 द्वारा जांच कर, Approve कर राज्य स्तर पर फारवार्ड कर दिया जाता है। Approved आवेदन–पत्र की राज्य स्तर पर पुनः जांच की जाती है तथा लाभ हेतु बैंक को अग्रसारित किया जाता है। बैंक स्तर से पुष्टि उपरान्त लाभार्थी के खाते में धनराशि हस्तान्तरित की जाती है। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

किश्त	शर्ते	समयावधि	धनराशि
पहली	आंगनवाड़ी केन्द्र में गर्भधारण का शीघ्र पंजीकरण करवाने पर	150 दिन के भीतर	₹ 1000
दूसरी	कम से कम एक प्रसव पूर्व जांच करवाने पर	180 दिन पूर्ण होन के उपरान्त	₹ 2000

तीसरी	संस्थागत प्रसव बच्चे का जन्म पंजीकरण पहले चक्र के टीकाकरण (बी0सी0जी0ओ0, पी0वी0डी0पी0टी0, हेपीटाइटिस–बी या इसके समतुल्य) करवाने पर	जन्म के 3½ माह के उपरान्त	₹ 2000

प्रधानमंत्री मातृ वन्दना योजना का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण						
क्र0स0	**विकासखण्ड / वर्ष**	**2017–18**	**2018–19**	**2019–20**	**योग**	**योग प्रतिशत**
1	चकराता	128	252	265	645	3.0%
2	कालसी	181	210	330	721	3.4%
3	रायपुर	532	529	995	2056	9.6%
4	विकासनगर	1031	1261	1419	3711	17.3%
5	सहसपुर	1071	1126	1591	3788	17.6%
6	डोईवाला	1390	1781	2015	5186	24.1%
7	शहर	1021	1818	2546	5385	25.1%
योग		**5354**	**6977**	**9161**	**21492**	100%

❖ नन्दा गौरा योजना

पात्र लाभार्थियों द्वारा आंगनबाड़ी केन्द्र एवं परियोजना कार्यालय में जमा किये गये आवेदनों–पत्रों का भलीभॉति परीक्षण कर, जनपद स्तर पर मुख्य विकास अधिकारी महोदय की अध्यक्षता में गठित समिति के सम्मुख रखा जाता है, जहॉ समिति की संस्तुति के उपरान्त नियमानुसार लाभार्थी के खाते में ई0पेमेन्ट या प्रत्यक्ष लाभ अन्तरण (डी0बी0टी0) के माध्यम से धनराशि हस्तान्तरित की जाती है। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

क्र0स0	**चरण**	**धनराशि**	
1	बालिका के जन्म पर	₹ 11,000	बालिका की माता के खाते में ई0पेमेन्ट के माध्यम से अवमुक्त की जायेगी।
2	अविवाहित बालिका को कक्षा 12 उत्तीर्ण करने पर	₹ 51,000	बालिका के बैंक खाते में प्रत्यक्ष लाभ अन्तरण (डी0बी0टी0) के माध्यम से हस्तान्तरित की जायेगी।

नन्दा गौरा योजना के अन्तर्गत लाभार्थियों का विवरण		
क्र0स0	**वर्ष**	**संख्या**
1	2017–18	1093
2	2018–19	4535
3	2019–20	4835

❖ वीरागंना तीलू रौतेली कामकाजी महिला छात्रावास स्थापना

19 वर्ष से अधिक आयु की शासकीय विभागों या निजी क्षेत्र की इकाईयों (उद्योगो) या संस्थाओं में कार्यरत कामकाजी महिलाएं हेतु 80 कक्षों (फर्नीचर एवं VVSPM बाथरूम युक्त) वाला वीरांगना तीलू रौतेली कामकाजी महिला छात्रावास सर्वे चौक, निकट आयुक्त कार्यालय, ई0सी0 रोड पर वर्ष 2019 में स्थापित किया गया है।

छात्रावास में उपलब्ध सुविधाएं :–

- ★ 24 घण्टे बिजली, पेयजल एवं गर्मपानी तथा वैकल्पिक ऊर्जा की सुविधा
- ★ 24X7 सुरक्षा व्यवस्था।
- ★ शहर के बीचो बीच स्थित कही भी आने जाने के सार्वजनिक साधन उपलब्ध।
- ★ छात्रावास के परिसर में घरेलू या किसी भी प्रकार की हिंसा से पीड़ित महिला हेतु महिला हैल्पलाइन एवं वन स्टॉप सेन्टर एवं रेसक्यू वैन की 24X7 सुविधा उपलब्ध।
- ★ छात्रावास में लिफ्ट, मेस, व्हीलचेयर, रैंप आदि की सुविधा
- ★ महिला छात्रावास में कमरे हेतु पात्र महिला ऑनलाइन आवेदन कर सकती है। आवेदन हेतु www.teelurauteliwwh.com पर लॉगइन करें और अपनी सुविधानुसार डीलक्स, सेमी डीलक्स एवं इकॉनामी रूम प्राप्त करें। अगर ऑनलाइन आवेदन करने में कोई असुविधा हो तो छात्रावास परिसर में ही संचालित महिला हैल्पलाइन 181, वन स्टॉप सेन्टर में सम्पर्क कर आवेदन कर सकतीं है। जन सुविधा केन्द्र या साइबर कैफे से भी ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता हैं।

रेशम

जनपद में रेशम विभाग द्वारा विगत चार वर्षों के मध्य जिला योजना में 24% तथा राज्य योजना में 76% धनराशि का परिव्यय करते हुए रेशम उत्पादन का कार्य करवाया जा रहा है जिसके लिए कीटपालकों को निशुल्क कीट एवं पौध उपलब्ध करवाये जा रहे हैं। रेशम का पौध लगभग 3 साल में रेशम उत्पादन के लिए तैयार हो जाता है, जो लगभग 20 से 25 साल तक रेशम उत्पादन में योगदान देता है। कीटपालक प्रति वर्ष मार्च, अप्रैल, सितम्बर तथा अक्टूबर माह में 25 से 30 दिन रेशम उत्पादन का कार्य करते हैं।

जनपद में रेशम उत्पादन हेतु विभाग द्वारा लाभान्वित किये जा रहे कीटपालकों एवं कोया उत्पादन के लिए आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जहाँ वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य विकासखण्डों में कीटपालकों की संख्या में गिरावट दर्ज होती है, वहीं कोया उत्पादन में कई विकासखण्डों के अन्तर्गत बहुत कम मात्रा में वृद्धि होती है।

विभाग को रेशम पौध वितरण के साथ–साथ नये कीटपालकों को भी जोड़ने की कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए ताकि अधिक से अधिक ग्रामीणों को लाभान्वित किया जा सके। इसके लिए विभाग का वित्तीय बजट को बढ़ाये जाने का प्राविधान किया जाना जनहित में होगा। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

क्र0 सं0	विकासखण्ड	कीटपालक उत्पादन					कोया उत्पादन				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	बदलाव	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	बदलाव
1	सहसपुर	1000	1050	900	915	**-85**	48003	51068	50000	58627	**10624**
2	विकासनगर	712	687	675	570	**-142**	45000	47500	44099	39400	**-5600**
3	डोईवाला	730	740	675	636	**-94**	39861	42244	40325	45900	**6039**
योग		**2442**	**2477**	**2250**	**2121**	**-321**	**132864**	**140812**	**134424**	**143927**	**11063**

रेशम उत्पादन हेतु विगत चार वर्षों में व्यय का विवरण							
क्र0सं0	योजना/वर्ष	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	योग प्रतिशत
1	जिला योजना	21.46	42.71	19.97	39.92	124.06	**24%**
2	राज्य योजना	72.69	37.65	160.97	132.17	403.47	**76%**
योग		94	80	181	172	527.54	**100%**
योग प्रतिशत		**18%**	**15%**	**34%**	**33%**	**100%**	

कृषि

विभाग द्वारा जिला योजना, राज्य सेक्टर, बीज ग्राम, RKVY, NFSM, NMSA, SMAM, PKVY, PMSKY आदि योजनाओं के अन्तर्गत सम्पादित कार्यक्रमों हेतु उपलब्ध करवाये गये विगत चार वर्षों के आंकड़ों का विश्लेषण से स्पष्ट होता है जो निम्नवत है :–

- **जिला योजना :–** विभाग द्वारा वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के दौरान बीज वितरण, कृषि रक्षा वितरण व कृषि यंत्र वितरण आदि कार्यक्रमों हेतु उपलब्ध करवाये गये आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जहाँ एक ओर कालसी, सहसपुर तथा डोईवाला विकासखण्डों द्वारा क्रमशः 63%, 16% व 3% की लक्ष्य ही प्राप्त नहीं किया जाता है, वहीं दूसरी ओर विकासखण्ड चकराता और रायपुर द्वारा शतप्रतिशत लक्ष्य प्राप्त किया गया है, जबकि विकासनगर विकासखण्ड में 58% लक्ष्य से भी अधिक लक्ष्य की प्राप्ति की जाती है अर्थात कालसी, सहसपुर तथा डोईवाला विकासखण्डों में प्रगति न होना कर्मचारियों द्वारा की जा रही अनदेखी है या कर्मचारियों द्वारा समय से कृषकों को उचित जानकारी उपलब्ध नहीं करवायी जा रही है। विभाग को लक्ष्यपूर्ति में पीछे रहने वाले विकासखण्डों में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि कालसी विकासखण्ड में ही अधिक पलायन की पुष्टि हुई है यदि भविष्य में इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो विकासखण्डों से पलायन की गति में और वृद्धि होने की पूर्ण सम्भावनायें होगी। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किये गये हैं।

जिला योजना के तहत सम्पादित कार्यों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण (कु0 / कि0ग्रा0 / लि0 / है0 / सं0)												
क्र0 स0	विकासखण्ड	बी0वि0 / कृ0र0र0–सू0त0वि कृ0य0वि0 आदि कार्यों हेतु वर्षवार लक्ष्य					बी0वि0 / कृ0र0र0–सू0त0वि कृ0य0वि0 आदि कार्यों हेतु वर्षवार लक्ष्यपर्ति					लक्ष्यपूर्ति का स्तर कम / ज्यादा (प्रतिशत में)
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	
1	कालसी	345	915	280	1002	2542	50	423	408	52	933	-63%
2	सहसपुर	350	910	400	13	1673	331	750	315	12	1408	-16%
3	डोईवाला	544	799	967	0	2310	544	725	967	0	2236	-3%
4	चकराता	50	423	408	71	952	50	423	408	71	952	0%
5	रायपुर	212	643	720	424	1999	212	643	720	424	1999	0%
6	विकासनगर	340	966	304	2	1612	345	915	280	1002	2542	58%
योग		**17%**	**42%**	**28%**	**14%**	**11088**	**15%**	**39%**	**31%**	**16%**	10070	**-9%**

❖ **राज्य सेक्टर :–** वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य विभाग द्वारा कृषि निवेश, सिंचाई टेंक व कृषक प्रशिक्षण आदि कार्यक्रमों के लिए प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि लक्ष्य प्राप्ति में नीचे की ओर से सहसपुर विकासखण्ड में सबसे अधिक 05%, तथा विकासखण्ड विकासनगर द्वारा सबसे कम 01% से लक्ष्य प्राप्ति में पीछे रहते हैं जबकि विकासखण्ड चकराता और कालसी द्वारा शतप्रतिशत लक्ष्य प्राप्त किया गया है, लक्ष्य पूर्ति न करने वाले विकासखण्डों में विभाग को अधिक ध्यान केन्द्रित करते हुए लक्ष्य पूर्ति करने की कार्यवाही अमल में लानी चाहिए। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

राज्य सेक्टर के तहत सम्पादित कार्यों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण (कु0 / कि0ग्रा0 / लि0 / है0 / सं0)												
क्र0 स0	विकासखण्ड	कृ0नि0वि0, सिंचाई टै0, कृ0प्र0 आदि कार्यों हेतु वर्षवार लक्ष्य					कृ0नि0वि0, सिंचाई टै0, कृ0प्र0 आदि कार्यों हेतु वर्षवार लक्ष्यपर्ति					लक्ष्यपूर्ति का स्तर कम / ज्यादा (प्रतिशत में)
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	
1	सहसपुर	1500	412	0	0	1912	1400	412	0	0	1812	**-5%**
2	रायपुर	670	1182	0	308	2160	560	199	0	1323	2082	**-4%**

3	डोईवाला	670	0	308	1223	2201	670	1182	0	308	2160	**-2%**
4	विकासनगर	1558	0	194	499	2251	1534	0	194	499	2227	**-1%**
5	चकराता	1182	136	0	1480	2798	1182	136	0	1480	2798	**0%**
6	कालसी	1182	702	66	1480	3430	1182	702	66	1480	3430	**0%**
योग		**6762**	**2432**	**568**	**4990**	**14752**	**6528**	**2631**	**260**	**5090**	**14509**	**-2%**

❖ **राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY) :–** विभाग द्वारा विगत वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के दौरान राष्ट्रीय कृषि विकास योजनान्तर्गत फसल प्रदर्शन, कृषि निवेश वितरण तथा कृषि यंत्र वितरण आदि कार्यक्रमों के लिए प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि डोईवाला विकासखण्ड द्वारा सबसे अधिक 60% तथा विकासखण्ड विकासनगर द्वारा सबसे कम 14% लक्ष्य प्राप्ति न करने में अपना योगदान दिया जा रहा है। अर्थात लक्ष्यपूर्ति न होना जनपदान्तर्गत किसानों को समय से सुविधाओं का प्राप्त न होना होगा क्योंकि पलायन आयोग को स्थलीय सत्यापन के दौरान किसानों द्वारा अवगत कररवाया गया कि कृषि विभाग द्वारा बीज तथा दवाईयाँ जैसी आदि सुविधाएं समय से उपलब्ध नहीं करवायी जाती है। विभाग को इस पर ध्यान देते हुए उन्नत किस्म के बीज एवं दवाईयाँ किसानों को उपलब्ध करवाये जाने की रणनीति तैयार करने की आवश्यकता है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया हैं।

RKVY के तहत सम्पादित कार्यों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण
(कु0 / कि0ग्रा0 / लि0 / है0 / सं0)

क्र0 स0	विकासखण्ड	फ0प्र0, कृ0नि0वि0, कृ0यं0वि0 आदि कार्यों हेतु वर्षवार लक्ष्य					कृ0नि0वि0, सिंचाई टै0, कृ0प्र0 आदि कार्यों हेतु वर्षवार लक्ष्यपर्ति					लक्ष्यपूर्ति का स्तर कम / ज्यादा (प्रतिशत में)
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	
1	डोईवाला	40	627	89	540	1296	30	108	87	287	512	**-60%**
2	रायपुर	40	314	272	540	1166	22	117	272	194	605	**-48%**
3	सहसपुर	1110	395	415	445	2365	833	175	305	325	1638	**-31%**
4	चकराता	181	187	106	97	571	181	67	72	97	417	**-27%**
5	कालसी	181	187	106	97	571	181	67	72	97	417	**-27%**
6	विकासनगर	1175	191	455	435	2256	905	180	430	421	1936	**-14%**
योग		**2727**	**1901**	**1443**	**2154**	**8225**	**2152**	**714**	**1238**	**1421**	**5525**	**-33%**

❖ **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिषन(NFSM) :–** राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अन्तर्गत विभाग द्वारा विगत वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य फसल प्रदर्शन, कृषि निवेश वितरण तथा कृषि यंत्र

वितरण आदि कार्यक्रमों के लिए प्राप्त आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि चकराता विकासखण्ड द्वारा सबसे अधिक 21% तथा विकासखण्ड सहसपुर द्वारा सबसे कम 10% से लक्ष्यपूर्ति न करने में अपना योगदान दिया जा रहा है। अर्थात लक्ष्य के सापेक्ष लक्ष्यपूर्ति में हर वर्ष पूर्ति शत–प्रतिशत नहीं हुआ है। विगत चार वर्षों के मध्य भी 12% लक्ष्य की पूर्ति नहीं हुई है, जो कि विभाग की अनदेखी का द्योतक है। विभाग को शत–प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति किये जाने हेतु ठोस रणनीति तैयार करनी की आवश्यकता है। सम्बन्धित आंकड़े निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किये गये हैं।

NFSM के तहत सम्पादित कार्यों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण (कु0)												
क्र0 स0	विकासखण्ड	फ0प्र0, कृ0नि0वि0, कृ0यं0वि0 हेतु वर्षवार लक्ष्य					फ0प्र0, कृ0नि0वि0, कृ0यं0वि0 हेतु वर्षवार लक्ष्यपूर्ति					लक्ष्यपूर्ति का स्तर कम/ज्यादा (प्रतिशत में)
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	
1	चकराता	100	40	50	126	316	100	40	35	74	249	**-21%**
2	कालसी	100	40	50	136	326	100	40	35	84	259	**-21%**
3	डोईवाला	644	517	685	423	2269	474	517	547	418	1956	**-14%**
4	रायपुर	429	402	684	282	1797	316	402	574	277	1569	**-13%**
5	विकासनगर	2110	810	578	598	4096	1810	810	485	521	3626	**-11%**
6	सहसपुर	2000	915	715	745	4375	1735	915	615	666	3931	**-10%**
योग		**41%**	**21%**	**21%**	**18%**	**13179**	**39%**	**24%**	**20%**	**18%**	**11590**	**-12%**

❖ **राष्ट्रीय सम्पोषणीय कृषि मिषन वर्षा आधारित (NMSA) :–** विभाग द्वारा राष्ट्रीय सम्पोषणीय कृषि मिशन के अन्तर्गत विगत वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य फसल प्रदर्शन, कृषि निवेश वितरण तथा कृषि यंत्र वितरण आदि कार्यक्रमों के लिए उपलब्ध करवाये गये आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि रायपुर विकासखण्ड द्वारा सबसे अधिक 36% तथा विकासखण्ड डोईवाला द्वारा सबसे कम 20% से लक्ष्यपूर्ति न करने में नीचे पायदान से योगदान दिया जा रहा है। वर्ष 2017–18 से वर्ष 2019–20 के मध्य हर वर्ष लक्ष्यपूर्ति में कमी देखी जा सकती है, साथ ही विगत चार वर्षों के मध्य भी 25% लक्ष्यपूर्ति ही नहीं हुई है, जो कि विभाग की अनदेखी का द्योतक है। विभाग को शत–प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति किये जाने हेतु ठोस रणनीति तैयार करने की आवश्यकता है। सम्बन्धित आंकड़े निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किये गये हैं।

NMSA के तहत सम्पादित कार्यों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण (कु0)												
क्र0 स0	विकासखण्ड	फ0प्र0, कृ0नि0वि0, कृ0यं0वि0 हेतु वर्षवार लक्ष्य					फ0प्र0, कृ0नि0वि0, कृ0यं0वि0 हेतु वर्षवार लक्ष्यपूर्ति					लक्ष्यपूर्ति का स्तर कम/ज्यादा (प्रतिशत में)
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	
1	रायपुर	40	372	51	56	519	40	219	41	33	333	-36%
2	विकासनगर	75	330	255	225	885	4	200	200	198	602	-32%
3	सहसपुर	80	275	225	190	770	5	213	190	185	593	-23%
4	डोईवाला	35	123	58	77	293	20	117	46	50	233	-20%
5	चकराता	27.5	25	60	50	162.5	27.5	25	60	50	162.5	0%
6	कालसी	27.5	25	90	0	142.5	27.5	25	90	0	142.5	0%
योग		**10%**	**41%**	**27%**	**22%**	**2772**	**6%**	**39%**	**30%**	**25%**	**2066**	**-25%**

❖ **सब मिशन ऑफ एग्रीकल्चर मैकेनाईजेशन (SMAM) :–** विभाग द्वारा सब मिशन ऑफ एग्रीकल्चर मैकेनाईजेशन के अन्तर्गत विगत वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य कृषि यंत्र वितरण कार्यक्रम के लिए उपलब्ध करवाये गये आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि रायपुर विकासखण्ड द्वारा सबसे अधिक 09% तथा विकासखण्ड चकराता द्वारा सबसे कम 01% से लक्ष्यपूर्ति न करने में नीचे पायदान से योगदान दिया जा रहा है। विभाग को शत–प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति किये जाने हेतु ठोस रणनीति तैयार करनी की आवश्यकता है। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

SMAM के तहत सम्पादित कार्यों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण (सं)												
क्र0स0	विकासखण्ड	कु0यं0वि हेतु वर्षवार लक्ष्य					कु0यं0वि हेतु वर्षवार लक्ष्यपूर्ति					लक्ष्यपूर्ति का स्तर कम/ज्यादा (प्रतिशत में)
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	
1	रायपुर	6	223	32	67	328	0	217	20	63	300	**-9%**
2	डोईवाला	9	332	48	114	503	0	326	36	110	472	**-6%**
3	विकासनगर	3	8	465	455	931	3	8	450	438	899	**-3%**

4	सहसपुर	3	519	519	471	1512	2	519	509	452	1482	**-2%**
5	कालसी	4	1259	1849	2596	5708	4	1259	1814	2591	5668	**-1%**
6	चकराता	4	1259	1848	2593	5704	4	1259	1813	2593	5669	**-1%**
योग		**29**	**3600**	**4761**	**6296**	**14686**	**13**	**3588**	**4642**	**6247**	**14490**	**-1%**

❖ **परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY) :–** परम्परागत कृषि विकास योजना के अन्तर्गत विभाग द्वारा विगत वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के दौरान जैविक कार्यक्रम, जैविक कृषि निवेश वितरण जैसे कार्यक्रर्मों के लिए उपलब्ध करवाये गये आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सहसपुर विकासखण्ड द्वारा सबसे अधिक 23% तथा विकासखण्ड विकासनगर द्वारा सबसे कम 14% से लक्ष्यपूर्ति न करने में नीचे पायदान से योगदान दिया गया है। विभाग को शत–प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति किये जाने हेतु ठोस रणनीति तैयार करनी की आवश्यकता है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किये गये हैं।

PKVY के तहत सम्पादित कार्यों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण (है0/कु0)

क्र0 स0	विकासखण्ड	जै0का0,क0वि0 हेतु वर्षवार लक्ष्य					जै0का0,क0वि0 हेतु वर्षवार लक्ष्यपूर्ति					लक्ष्यपूर्ति का स्तर कम/ज्यादा (प्रतिशत में)
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	
1	सहसपुर	0	410	410	692	1512	0	410	255	492	1157	-23%
2	विकासनगर	0	190	475	810	1475	0	190	315	760	1265	-14%
3	चकराता	0	60	112	380	552	0	60	112	380	552	0%
4	कालसी	0	40	72	420	532	0	40	72	420	532	0%
5	रायपुर	0	75	75	550	700	0	75	75	550	700	0%
6	डोईवाला	0	75	75	597	747	0	75	75	597	747	0%
योग		**0**	**850**	**1219**	**3449**	**5518**	**0**	**850**	**904**	**3199**	**4953**	**-10%**

❖ **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY) :–** प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अन्तर्गत विभाग द्वारा विगत वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के दौरान जल पम्प वितरण, सिंचाई टैंक, चैकडैम, स्प्रिकंलर सेट वितरण जैसे कार्यक्रर्मों के लिए उपलब्ध करवाये गये आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सहसपुर विकासखण्ड द्वारा सबसे अधिक 54% तथा विकासखण्ड डोईवाला द्वारा सबसे कम 32% से लक्ष्यपूर्ति न करने में नीचे पायदान से योगदान दिया गया है। जबकि सिंचाई सुविधा के लिए कृषकों की अधिक मांग है किन्तु फिर भी लक्ष्य की पूर्ति न होना संदेहास्पद प्रतीत होता है। विभाग को शत–प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति करने की कार्यवाही अमल में लानी चाहिए। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

PMKSY के तहत सम्पादित कार्यों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण (सं)												
क्र0 स0	विकासखण्ड	ज0प0, सि0टै0, सि0सै0, चै0डै0 हेतु वर्षवार लक्ष्य					ज0प0, सि0टै0, सि0सै0, चै0डै0 हेतु वर्षवार लक्ष्यपूर्ति					लक्ष्यपूर्ति का स्तर कम/ज्यादा (प्रतिशत में)
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	
1	सहसपुर	0	20	550	430	1000	0	5	200	254	459	-54%
2	कालसी	0	58	140	3	201	0	58	40	3	101	-50%
3	विकासनगर	0	20	500	321	841	0	6	195	252	453	-46%
4	रायपुर	0	38	18	20	76	0	29	5	12	46	-39%
5	डोईवाला	0	8	43	72	123	0	8	11	65	84	-32%
6	चकराता	0	58	60	4	122	0	58	60	4	122	0%
योग		**0**	**202**	**1311**	**850**	**2363**	**0**	**164**	**511**	**590**	**1265**	**-46%**

❖ **बीज ग्राम :–** विभाग द्वारा बीज ग्राम कार्यक्रम के तहत विगत वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के दौरान की उपलब्धि हेतु दिये गये आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि कालसी विकासखण्ड द्वारा सबसे अधिक 25% तथा विकासखण्ड विकासनगर द्वारा सबसे कम 08% से लक्ष्यपूर्ति न करने में नीचे पायदान से जनपद में योगदान दिया जाना इस बात की ओर संकेत करता है कि पर्वतीय क्षेत्रों में कृषकों का विभाग द्वारा उपलब्ध करवाये जा रहे बीजों पर विश्वास नहीं है या विभाग समय रहते कृषकों को बीज उपलब्ध करवाने में असमर्थ है। आयोग को सर्वेक्षण के दौरान काश्तकारों द्वारा अवगत करवाया गया कि विभाग द्वारा बीज समय से उपलब्ध नहीं करवाये जाते एवं बीज उन्नत प्रजाति के भी नहीं होते। विभाग को उन्नत प्रजाति के बीज समय से उपलब्ध करवाये की नीति तैयार करनी चाहिए। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किये गये हैं।

बीज ग्राम के तहत सम्पादित कार्यों का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण (कु0)												
क्र0 स0	विकासखण्ड	बीज वितरण हेतु वर्षवार लक्ष्य					बीज वितरण हेतु वर्षवार लक्ष्यपूर्ति					लक्ष्यपूर्ति का स्तर कम/ज्यादा (प्रतिशत में)
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	
1	कालसी	85	86	45	139	355	85	86	27	69	267	-25%
2	चकराता	85	86	45	69	285	85	86	27	27	225	-21%

3	सहसपुर	406	370	255	625	1656	406	255	190	625	1476	-11%
4	विकासनगर	431	395	145	623	1594	431	275	130	623	1459	-8%
5	रायपुर	339	160	400	400	1299	339	160	400	400	1299	0%
6	डोईवाला	508	272	657	657	2094	508	272	657	657	2094	0%
योग		**1854**	**1369**	**1547**	**2513**	**7283**	**1854**	**1134**	**1430**	**2401**	**6819**	**-6%**

❖ **विगत चार वर्षों की वित्तीय रूपरेखा :–** विभाग द्वारा वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के दौरान व्यय की गयी धनराशि हेतु उपलब्ध करवाये गये आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सहसपुर विकासखण्ड द्वारा सबसे अधिक 65% तथा डोईवाला विकासखण्ड द्वारा सबसे कम 0.4% से वित्तीय लक्ष्यपूर्ति न करने में निचले स्तर से जनपद में योगदान दिया जाना, विभाग द्वारा शत–प्रतिशत आंवटित धनराशि का व्यय न किया जाना है। विभाग की संचालित सभी योजनाओं हेतु आंकड़ों के संकलन करने से भी स्पष्ट होता है कि सहसपुर विकासखण्ड द्वारा सबसे अधिक 35% तथा चकराता विकासखण्ड द्वारा सबसे कम 05% से वित्तीय लक्ष्यपूर्ति न करने में निचले पायदान से जनपद में योगदान दिया गया। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

कृषि विभाग द्वारा सम्पादित कार्यों हेतु विगत चार सालों में आंवटित धनराशि एवं व्यय धनराशि का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण (वित्तीय रू0 लाख में)

क्र0 स0	विकासखण्ड	वर्षवार आंवटित धनराशि					वर्षवार व्यय धनराशि					लक्ष्यपूर्ति का स्तर कम/ज्यादा (प्रतिशत में)
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	
1	सहसपुर	949	79	230	307	1565	39	64	177	266	546	-65.1%
2	रायपुर	33	137	198	221	589	26	93	160	201	480	-18.5%
3	कालसी	37	68	211	116	432	37	67	176	106	386	-10.7%
4	चकराता	37	74	228	122	461	37	72	192	114	414	-10.1%
5	विकासनगर	5692	2910	3371	3968	15940	5032	2584	2679	4714	15009	-5.8%
6	डोईवाला	56	85	101	245	487	35	69	148	234	485	-0.4%
योग		**6804**	**3352**	**4339**	**4979**	**19474**	**5206**	**2948**	**3531**	**5635**	**17320**	**-11%**

वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य कृषि विभाग द्वारा सम्पादित कार्यों के लक्ष्यपूर्ति में विकासखण्डवार बदलाव प्रतिशत											
क्र0 स0	विकासखण्ड	जिला योजना	राज्य सेक्टर	RKVY	बीज ग्राम	NFSM	NMSA	SMAM	PKVY	PMKSY	लक्ष्यपूर्ति का स्तर कम/ज्यादा (प्रतिशत में)
1	सहसपुर	-26%	-41%	-27%	-39%	-28%	-25%	-15%	-63%	-49%	-35%
2	कालसी	-158%	0%	-6%	-19%	-4%	0%	-20%	0%	-9%	-24%
3	विकासनगर	91%	-10%	-12%	-29%	-30%	-40%	-16%	-37%	-35%	-13%
4	रायपुर	0%	-32%	-21%	0%	-14%	-26%	-14%	0%	-3%	-12%
5	डोईवाला	-7%	-17%	-29%	0%	-20%	-8%	-16%	0%	-4%	-11%
6	चकराता	0%	0%	-6%	-13%	-4%	0%	-18%	0%	0%	-5%
योग		**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**	**100%**

विभाग को लक्ष्य प्राप्ति एवं आंवटित धनराशि को शत–प्रतिशत पूर्ति हेतु जनपदस्तर पर विभागीय सैल गठित करना चाहिए, जो जनपद के ग्रामीण अंचलों में सामाजिक–आर्थिक विकास को सुदृढ़ करने एवं पलायन को कम करने हेतु विभागीय कार्यक्रमों का अनुश्रवण करते हुए विभाग की भूमिका कायम रख सके।

मत्स्य

विभाग द्वारा जनजाति उपयोजना, अनुसूचित जाति उपयोजना, पर्वतीय क्षेत्रों में आदर्श तालाब योजना, पर्वतीय क्षेत्रों में तालाब निर्माण योजना, मत्स्य पालक विकास अभिकरण योजना, ट्राउट रेसवेज निर्माण योजना, नील क्रांति रनिंग वाटर कच्चे–कच्चे तालाब निर्माण योजना, मीठा जल मात्स्यिकी मैदानी तालाब निर्माण, अनुसूचित जनजाति हेतु तालाब सुधार योजना, ब्लू रिवोल्यूशन समन्वित विकास एवं मात्स्यिकी प्रबंधन कार्यक्रम, मत्स्य उत्पादकता वृद्वि योजना (जिला योजना) तालाब सुधार योजना, स्पेशल कम्पोनेन्ट सब प्लान तालाब सुधार तथा रनिंग वाटर फिश कल्चर तालाब निर्माण जैसी योजनाओं के अन्तर्गत सम्पादित कार्यक्रमों हेतु उपलब्ध करवाये गये विगत चार वर्षों के आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जनपद के विकासखण्ड सहसपुर व डोईवाला में सबसे कम 10–10 परिवार तथा चकराता व कालसी विकासखण्डों में क्रमशः सबसे अधिक 88 व 84 परिवार लाभान्वित किये गये हैं अर्थात जनपद के अन्तर्गत विभाग की कुल 13 योजनाओं के अन्तर्गत मात्र 248 परिवारों को वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य लाभान्वित किया गया जो कि चार वर्षों के लिए कम उपलब्धि है। कई योजनाओं के अन्तर्गत विभाग द्वारा अधिकांश विकासखण्डों के लिए कोई भी लक्ष्य नहीं रखा गया है। विभाग को इस ओर गम्भीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है।

विभाग द्वारा जनपद के भौगोलिक परिवेश के आधार पर पर्वतीय क्षेत्रों में विदेशीकॉर्प, कॉमन कॉर्प, ग्रास कॉर्प, ट्राउट तथा मैदानी क्षेत्रों में रोहू, कतला, नैन, ग्रास कॉर्प, सिल्वर कॉर्प, कॉमन कॉर्प के साथ–साथ पंगेसियस का बीज वितरण कर मत्स्यपालकों से पालन करवाया जा रहा है।

मत्स्य विभाग द्वारा वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य संचालित योजनाओं के अन्तर्गत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	सहसपुर	2	6	1	1	10	0.01	1.34	0.01	0.01	1.37
2	डोईवाला	4	3	2	1	10	1.60	0.40	0.08	0.01	2.09
3	रायपुर	9	5	3	5	22	3.76	0.43	0.04	0.06	4.29
4	विकासनगर	12	6	11	5	34	1.56	0.44	0.56	0.06	2.62
5	कालसी	19	15	14	36	84	0.19	0.15	0.14	0.93	1.41
6	चकराता	28	6	22	32	88	0.29	0.05	0.22	0.32	0.87
योग		**74**	**41**	**53**	**80**	**248**	**7.41**	**2.81**	**1.04**	**1.39**	**12.64**

ट्राउट रेसवेज निर्माण योजना के तहत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	कालसी	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
2	विकासनगर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
3	रायपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
4	सहसपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
5	डोईवाला	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
6	चकराता	1	1	0	0	2	0.02	0.01	0.00	0.00	0.02
योग		**1**	**1**	**0**	**0**	**2**	**0.02**	**0.01**	**0.00**	**0.00**	**0.02**

जनजाति उपयोजना के तहत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	रायपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
2	सहसपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
3	डोईवाला	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
4	कालसी	8	9	5	0	22	0.08	0.09	0.05	0.00	0.22
5	चकराता	17	4	15	0	36	0.17	0.04	0.15	0.00	0.36
6	विकासनगर	1	1	1	0	3	0.40	0.01	0.20	0.00	0.61
योग		**26**	**14**	**21**	**0**	**61**	**0.65**	**0.14**	**0.40**	**0.00**	**1.19**

अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	रायपुर	1	0	0	0	1	0.01	0.00	0.00	0.00	0.01
2	सहसपुर	0	3	1	0	4	0.00	0.03	0.01	0.00	0.04
3	चकराता	8	0	1	9	18	0.08	0.00	0.01	0.09	0.18
4	कालसी	6	3	2	9	20	0.06	0.03	0.02	0.09	0.20
5	विकासनगर	5	2	5	2	14	0.24	0.02	0.05	0.02	0.33
6	डोईवाला	1	2	0	0	3	0.40	0.20	0.00	0.00	0.60
योग		**21**	**10**	**9**	**20**	**60**	**0.79**	**0.28**	**0.09**	**0.20**	**1.36**

पर्वतीय क्षेत्रों में आदर्श तालाब योजना के तहत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	सहसपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
2	डोईवाला	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
3	विकासनगर	0	0	1	1	2	0.00	0.00	0.02	0.02	0.04
4	चकराता	0	0	1	4	5	0.00	0.00	0.02	0.04	0.06
5	कालसी	1	1	0	9	11	0.02	0.02	0.00	0.07	0.11
6	रायपुर	1	1	1	4	7	0.02	0.02	0.02	0.05	0.11
योग		**2**	**2**	**3**	**18**	**25**	**0.04**	**0.04**	**0.06**	**0.18**	**0.32**

पर्वतीय क्षेत्रों में तालाब निर्माण योजना के तहत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	डोईवाला	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
2	सहसपुर	2	1	0	0	3	0.01	0.01	0.00	0.00	0.02
3	विकासनगर	2	2	0	0	4	0.01	0.01	0.00	0.00	0.02
4	चकराता	0	1	4	0	5	0.00	0.01	0.03	0.00	0.03
5	रायपुर	2	2	2	0	6	0.01	0.01	0.02	0.00	0.04
6	कालसी	2	2	4	0	8	0.01	0.01	0.04	0.00	0.06
योग		**8**	**8**	**10**	**0**	**26**	**0.04**	**0.04**	**0.08**	**0.00**	**0.16**

मत्स्य पालक विकास अभिकरण योजना के तहत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	कालसी	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
2	सहसपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
3	चकराता	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
4	विकासनगर	2	0	0	0	2	0.40	0.00	0.00	0.00	0.40
5	डोईवाला	3	0	0	0	3	1.20	0.00	0.00	0.00	1.20
6	रायपुर	2	0	0	0	2	3.20	0.00	0.00	0.00	3.20
योग		**7**	**0**	**0**	**0**	**7**	**4.80**	**0.00**	**0.00**	**0.00**	**4.80**

नील क्रांति रनिंग वाटर कच्चे–कच्चे तालाब निर्माण योजना के तहत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	सहसपुर	0	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00
2	डोईवाला	0	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00
3	विकासनगर	1	0	0	0	1	0.01	0.00	0.00	0.00	0.01
4	कालसी	2	0	0	0	2	0.02	0.00	0.00	0.00	0.02
5	रायपुर	2	0	0	0	2	0.02	0.00	0.00	0.00	0.02
6	चकराता	2	0	0	0	2	0.02	0.00	0.00	0.00	0.02
योग		**7**	**0**	**0**	**0**	**7**	**0.07**	**0.00**	**0.00**	**0.00**	**0.07**

मीठा जल मात्स्यिकी मैदानी तालाब निर्माण के तहत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	कालसी	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
2	चकराता	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
3	डोईवाला	0	1	0	0	1	0.00	0.20	0.00	0.00	0.20
4	विकासनगर	1	1	0	0	2	0.50	0.40	0.00	0.00	0.90
5	रायपुर	1	2	0	0	3	0.50	0.40	0.00	0.00	0.90
6	सहसपुर	0	2	0	0	2	0.00	1.30	0.00	0.00	1.30
योग		**2**	**6**	**0**	**0**	**8**	**1.00**	**2.30**	**0.00**	**0.00**	**3.30**

अनुसूचित जनजाति हेतु तालाब सुधार योजना के तहत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	विकासनगर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
2	रायपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
3	सहसपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
4	डोईवाला	0	0	1	0	1	0.00	0.00	0.01	0.00	0.01
5	चकराता	0	0	1	13	14	0.00	0.00	0.01	0.13	0.14
6	कालसी	0	0	2	9	11	0.00	0.00	0.02	0.68	0.70
योग		**0**	**0**	**4**	**22**	**26**	**0.00**	**0.00**	**0.04**	**0.81**	**0.85**

ब्लू रिवोल्यूषन समन्वित विकास एवं मात्स्यिकी प्रबंधन कार्यक्रम अन्तर्गत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	रायपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
2	सहसपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
3	चकराता	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
4	कालसी	0	0	0	3	3	0.00	0.00	0.00	0.03	0.03
5	विकासनगर	0	0	1	0	0	0.00	0.00	0.07	0.00	0.07
6	डोईवाला	0	0	1	1	1	0.00	0.00	0.07	0.01	0.08
योग		**0**	**0**	**2**	**4**	**4**	**0.00**	**0.00**	**0.14**	**0.04**	**0.18**

मत्स्य उत्पादकता वृद्वि योजना (जिला योजना) तालाब सुधार योजना के तहत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	रायपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
2	सहसपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
3	डोईवाला	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
4	चकराता	0	0	0	1	1	0.00	0.00	0.00	0.01	0.01
5	विकासनगर	0	0	1	1	2	0.00	0.00	0.01	0.01	0.02
6	कालसी	0	0	1	0	1	0.00	0.00	2.00	0.00	2.00
योग		**0**	**0**	**2**	**2**	**4**	**0.00**	**0.00**	**2.01**	**0.02**	2.03

स्पेषल कम्पोनेन्ट सब प्लान तालाब सुधार के अन्तर्गत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	रायपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
2	डोईवाला	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
3	सहसपुर	0	0	0	1	1	0.00	0.00	0.00	0.01	0.01
4	चकराता	0	0	0	2	2	0.00	0.00	0.00	0.02	0.02
5	कालसी	0	0	1	4	5	0.00	0.00	0.01	0.04	0.05
6	विकासनगर	0	0	2	0	2	0.00	0.00	0.21	0.00	0.21
योग		**0**	**0**	**3**	**7**	**10**	**0.00**	**0.00**	**0.22**	**0.07**	0.29

रनिंग वाटर फिश कल्चर तालाब निर्माण योजना के तहत लाभार्थियों एवं आच्छादित क्षेत्रफल का वर्षवार एवं विकासखण्डवार विवरण											
क्र0स0	विकासखण्ड	लाभार्थियों की संख्या					आच्छादित क्षेत्रफल (हे0 में)				
		2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	योग
1	सहसपुर	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
2	डोईवाला	0	0	0	0	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
3	विकासनगर	0	0	0	1	1	0.00	0.00	0.00	0.01	0.01
4	रायपुर	0	0	0	1	1	0.00	0.00	0.00	0.01	0.01
5	कालसी	0	0	0	2	2	0.00	0.00	0.00	0.02	0.02
6	चकराता	0	0	0	3	3	0.00	0.00	0.00	0.03	0.03
योग		**0**	**0**	**0**	**7**	**7**	**0.00**	**0.00**	**0.00**	**0.07**	0.07

आयोग को सर्वेक्षण के दौरान मत्स्यपालकों द्वारा अवगत करवाया गया कि विभागीय अनुश्रवण की कमी के कारण जनपद में 30% मत्स्य तालाब वर्तमान में संचालित नहीं हैं अर्थात विगत चार वर्षों में स्थापित 248 तालाबों में से 174 मत्स्य तालाब ही वर्तमान में संचालित हो रहे हैं। विभाग को विकासखण्ड स्तर पर ''**मत्स्य विकसित सैल**'' का गठन करने का प्राविधान करना चाहिए। गठित सैल मत्स्यपालकों की सभी मूलभूत आवश्यकताओं का निदान करते हुए मत्स्य व्यवसाय में रोजगार के सुअवसरों को बढ़ाते हुए जनपद के ग्रामीण अंचलों में सामाजिक–आर्थिक विकास को सुदृढ़ करने एवं पलायन को कम करने हेतु विभाग की अहम भूमिका कायम कर सकें। सम्बन्धित आंकड़ों का विवरण उपरोक्त तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है।

अध्याय v

विश्लेषण एवं सिफारिशें

समुद्र तल से औसत 640 मीटर (2100 फीट) की ऊँचाई पर स्थित देहरादून जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3088 वर्ग किलोमीटर है। जनपद देहरादून उत्तर और उत्तर पश्चिम में उत्तरकाशी, पूर्व में टिहरी और पौड़ी, पश्चिम में हिमाचल प्रदेश का सिरमौर जनपद तथा दक्षिण में हरिद्वार और उत्तरप्रदेश के सहारनपुर जनपद की सीमाओं से घिरा हुआ है। जनपद के उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में शिवालिक की पहाड़ियाँ स्थित हैं। देहरादून जनपद में 01 नगर निगम, 03 नगर पालिका परिषद, 02 नगर पंचायत, 04 छावनी क्षेत्र, 01 औद्योगिक कस्बा, 11 जनगणना शहर, 07 तहसील, 06 विकासखण्ड, 36 न्याय पंचायत और 402 ग्राम पंचायत सम्मिलित हैं।

जनसांख्यिकीय विवरण

जनपद देहरादून हेतु वर्ष 1901 से वर्ष 2011 के मध्य दशकीय जनगणना आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है, कि वर्ष 1941 से वर्ष 2011 के मध्य दशकीय जनगणनाओं हेतु जनसंख्या वृद्धि दर में लगातार विचलन देखा जा सकता है अर्थात जनसंख्या वृद्धि दर में हो रहा विचलन, पलायन के उतार–चढ़ाव की पुष्टि करता है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

वर्ष 1901 की स्थिति से वर्ष 2011 के मध्य जनसंख्या में दशकीय बदलाव						
जनपद	जनगणना वर्ष	जनसंख्या	पूर्ववर्ती जनगणना के बाद जनसंख्या में बदलाव		पुरूष	महिला
			शुद्व बदलाव	प्रतिशत		
देहरादून	1901	177465	NA	NA	102374	75091
	1911	204534	27069	+15.25	120578	83956
	1921	211877	7343	+03.59	127971	83906
	1931	229850	17973	+08.48	137348	92502
	1941	265786	35936	+15.63	161671	104115
	1951	361689	95903	+36.08	210860	150829
	1961	429014	67325	+18.61	242987	186027
	1971	577306	148292	+34.57	326108	251198
	1981	761668	184362	+31.93	420465	341203
	1991	1025679	264011	+34.66	556432	469247
	2001	1282143	256464	+25.00	679583	602560
	2011	1696694	414551	+32.33	892199	804495

जनगणना वर्ष 2001 से वर्ष 2011 के मध्य विकासखण्डवार जनसंख्या वृद्धि दर हेतु आंकड़ों से ज्ञात होता है कि जनपद के पहाड़ी क्षेत्र में स्थित विकासखण्ड कालसी में जनसंख्या वृद्धि सबसे कम तथा

विकासखण्ड सहसपुर और विकासनगर में सबसे अधिक वृद्धि होती है। अन्य विकासखण्ड़ों में भी दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर अपेक्षाकृत कम है।

विकासखण्डवार तथा क्षेत्रवार दशकीय जनगणना हेतु जनसंख्या वृद्धि दर का तुलनात्मक विवरण				
विकासखण्ड	विकासखण्डवार एवं क्षेत्रवार जनसंख्या वितरण			
	वर्ष 2001	वर्ष 2011	बदलाव	बदलाव प्रतिशत
कालसी	55127	58228	3101	05.63%
डोईवाला	151236	168986	17750	11.74%
रायपुर	88628	99844	11216	12.66%
चकराता	59466	67258	7792	13.10%
विकासनगर	124246	153793	29547	23.78%
सहसपुर	120048	167501	47453	39.53%
योग ग्रामीण	**598751**	**715610**	116859	19.52%
नगरीय क्षेत्र	678742	941941	263199	38.78%
योग जनपद	**1282143**	**1696694**	414551	32.33%

आर्थिकी

जनपद की अर्थव्यवस्था हेतु वर्ष 2011–12 से वर्ष 2016–17 के लिए GDDP हेतु उपलब्ध आंकड़ों से स्पष्ट होता है, कि उक्त अवधि के मध्य जनपद की GDDP एवं प्रति व्यक्ति आय में क्रमशः1.2% तथा 2.0% की गिरावट हुई है, जो जनपद के सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु उचित नहीं है। आंकड़ों को निम्नवत तालिका में दर्शाया गया है।

सकल जिला घरेलू उत्पाद हेतु वर्षवार विवरण			
वर्ष	GDDP **(लाख में)**	पूर्ववर्ती GDDP के बाद से बदलाव	
		शुद्व बदलाव	बदलाव प्रतिशत
2011–12	2221193	NA	NA
2012–13	2521800	300607	13.53%
2013–14	2863184	341384	13.54%
2014–15	3232306	369122	12.89%
2015–16	3612100	379794	11.75%
2016–17	4057583	445483	12.33%

प्रति व्यक्ति आय का वर्षवार विवरण			
वर्ष	PCI (रूपये में)	पूर्ववर्ती PCI के बाद से बदलाव	
		शुद्व बदलाव	बदलाव प्रतिशत
2011–12	114020	NA	NA
2012–13	127848	13828	12.13%
2013–14	142718	14870	11.63%
2014–15	159807	17089	11.97%
2015–16	176658	16851	10.54%
2016–17	195925	19267	10.91%

प्राथमिक क्षेत्र :– देहरादून जनपद में कुल 66231 हेक्टेयर भूमि या कुल भौगोलिक क्षेत्र का 18 प्रतिशत से थोड़ा अधिक खेती के अन्तर्गत आती है। 20796 हेक्टेयर भूमि पर गेहूँ प्राथमिक फसल है, जबकि गेहूँ के अलावा, अन्य प्रमुख फसलों में चावल, मक्का, फल, सब्जियाँ और चाय बागान शामिल हैं।

माध्यमिक क्षेत्र :– जिला औद्योगिक केन्द्र के अनुसार 5883 पंजीकृत औद्योगिक इकाइयाँ हैं, जिनकी अनुमानित संख्या 34733 और 4471 दैनिक श्रमिक लघु, मध्यम और बडे उद्योगों में कार्यरत हैं। वर्ष 2011–12 तक उद्योगों द्वारा कुल निवेश 57887.25 लाख था। कुछ प्रमुख सूक्ष्म, लघु और कारीगर इकाइयाँ निम्नवत हैं:–

औद्योगिक उद्यम	इकाइयाँ
1. खाद्य उत्पाद एवं पेय पदार्थ	105
2. परिधान और ड्रेसिंग	269
3. रासायनिक उत्पाद	84
4. लकड़ी एवं लकड़ी के उत्पाद	43
5. रबर और प्लास्टिक	56
6. निर्मित धातु	53
7. इलेक्ट्रॉनिक मशीनरी एवं उपकरण	67
8. कपड़ा उद्योग	19
9. कम्प्यूटर से सम्बन्धित गतिविधियाँ	129
10. मरम्मत और रखरखाव	81
योग	**906**

तृतीयक क्षेत्र :– राज्य की राजधानी और राज्य का सबसे बड़ा शहर होने के अलावा, तृतीयक क्षेत्र की अधिकांश गतिविधियाँ देहरादून में केन्द्रित हैं। जिले के मुख्यालय में हर साल बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। देहरादून में कई पर्यटन स्थल हैं जैसे मसूरी, गुरूराम राय दरबार साहिब, सहस्रधारा, गुच्चूपानी (लुटेरों की गुफा), डाकपत्थर, टपकेश्वर महादेव मन्दिर, मालसी डियर पार्क, आदि।

पलायन

जनपद देहरादून के कुल 231 ग्राम पंचायतों में 25781 व्यक्तियों द्वारा विगत दस सालों में अस्थायी पलायन किया गया है, जिसमें सबसे अधिक विकासखण्ड कालसी के 107 ग्राम पंचायतों में 11399 व्यक्तियों द्वारा तथा सबसे कम सहसपुर विकासखण्ड के मात्र 04 ग्राम पंचायतों में 144 व्यक्तियों द्वारा अस्थायी पलायन किया गया, जबकि विकासखण्ड विकासनगर के कुल 26 ग्राम पंचायतों में 7397 व्यक्तियों द्वारा अस्थायी पलायन किया गया है जो कि नजदीकी कस्बों/शहरों की ओर रोजगार हेतु अस्थायी पलायन का द्योतक है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

पिछले 10 वर्षों में ग्राम पंचायतों से हुए अस्थायी पलायन का विकासखण्ड़वार विवरण			
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	ग्रामों की कुल संख्या (जिन्होने पूर्ण रूपेण पलायन न किया हो/ घर में आना–जाना लगा रहता हो/अस्थाई रूप से रोजगार के लिए बाहर रहता हो)	पिछले 10 वर्षो में पलायन करने वाले कुल व्यक्तियों की संख्या (जिन्होने पूर्ण रूपेण पलायन न किया हो/ घर में आना–जाना लगा रहता हो/अस्थाई रूप से रोजगार के लिए बाहर रहता हो)
Dehradun	Kalsi	107	11399
Dehradun	Chakrata	59	3172
Dehradun	Raipur	26	3176
Dehradun	Vikasnagar	26	7397
Dehradun	Doiwala	9	493
Dehradun	Shaspur	4	144
Total in District		**231**	**25781**
Total in State		**6338**	**383726**

देहरादून जनपद में कुल 53 ग्राम पंचायतों में 2802 व्यक्तियों द्वारा पिछले दस सालों में स्थायी पलायन किया गया, जिसमें सबसे अधिक विकासखण्ड चकराता के 16 ग्राम पंचायतों में 611 व्यक्तियों द्वारा तथा सबसे कम विकासखण्ड डोईवाला के मात्र 04 ग्राम पंचायतों में 26 व्यक्तियों द्वारा स्थायी पलायन किया गया, जबकि विकासखण्ड रायपुर के कुल 08 ग्राम पंचायतों में ही 1657 व्यक्तियों द्वारा स्थायी पलायन किया जाना नजदीकी कस्बों/शहरों में शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी सुविधाओं की समुचित व्यवस्था में अभाव के कारण स्थायी पलायन की ओर इशारा करता है। आंकड़ों का विवरण निम्नवत तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

पिछले 10 वर्षों में ग्राम पंचायतों से हुए स्थायी पलायन का विकासखण्ड़वार विवरण			
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	ग्रामों की कुल संख्या (जो पूर्ण रूप से पलायन कर चुके हो या अपनी जमीन बेच चुके हो/अथवा भूमि बंजर पड़ी हो/घरों पर ताले लगे हो/तथा बहुत कम गॉव आना होता हो)	पिछले 10 वर्षो में पूर्ण पलायन करने वाले कुल व्यक्तियों की संख्या (जो पूर्ण रूप से पलायन कर चुके हो या अपनी जमीन बेच चुके हो/अथवा भूमि बंजर पड़ी हो/घरों पर ताले लगे हो/तथा बहुत कम गॉव आना होता हो)
Dehradun	Chakrata	16	611
Dehradun	Vikasnagar	11	354
Dehradun	Raipur	8	1657
Dehradun	Kalsi	7	34
Dehradun	Shaspur	7	120
Dehradun	Doiwala	4	26
Total in District		**53**	**2802**
Total in State		**3946**	**118981**

सिफारिशें

ग्राम्य विकास

जनपद में कुल 401 ग्राम पंचायतें हैं, जिनमें ग्राम विकास विभाग द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक–आर्थिक विकास को सुदृढ़ करने के लिए महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), मेरा गांव मेरी सड़क योजना, दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना, पी0एम0जी0एस0वाई0, सांसद निधि तथा विधायक निधि जैसी कई योजनाओं का सम्पादन किया जाता है।

जनपदान्तर्गत ग्राम्य विकास के क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत हैं :–

1. विभाग की महत्वपूर्ण योजना महात्मा गांधी नरेगा के आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनपदान्तर्गत कुल 73774 जारी किये गये जॉबकार्डों में से अभी लगभग 36% जॉबकार्ड निष्क्रीय हैं, निष्क्रीय जॉबकार्डों के आंकड़ों में पर्वतीय विकासखण्डों की अपेक्षा मैदानी विकासखण्डों का प्रतिशत अधिक है। महात्मा गाँधी नरेगा योजना अन्तर्गत कुल 118795 श्रमिक पंजीकृत हुए हैं, जिसमें से अभी लगभग 47% श्रमिक काम की मांग ही नहीं करते। सबसे अधिक विकासखण्ड सहसपुर तथा सबसे कम विकासखण्ड कालसी द्वारा योगदान दिया जा रहा है।

   विभाग को निष्क्रीय जॉबकार्ड एवं काम की मांग न करने वाले श्रमिकों के लिए सघन सर्वेक्षण करते हुए इन आंकड़ों को सन्तुलित करना चाहिए, ताकि वास्तविक जॉबकार्ड धारकों एवं श्रमिकों को चिह्नित करते हुए सूचीवद्व किया जा सके।

2. पर्वतीय विकासखण्डों की अपेक्षा मैदानी विकासखण्डों में विगत चार वर्षों के दौरान सृजित मावन दिवस के आंकडें कम प्राप्त हुए अर्थात इन विकासखण्डों में महात्मा गांधी नरेगा के अन्तर्गत पंजीकृत जॉबकार्डों में पंजीकृत श्रमिकों की रूचि कम है, क्योंकि शहरी क्षेत्रों में स्थानीय रूप में देय हो रही मजदूरी दर मनरेगा मजदूरी दर से कई अधिक है।

राज्य सरकार को पर्वतीय एवं शहरी क्षेत्रों के लिए अलग–अलग मजदूरी देय किये जाने हेतु प्रस्ताव भारत सरकार को प्रेषित करना चाहिए जिससे आगामी समय में पर्वतीय क्षेत्रों से हो रहे पलायन पर काफी हद तक अंकुश लगेगा।

3. विकासखण्ड कालसी एवं चकराता में सक्रीय जॉबकार्ड, सक्रीय श्रमिक तथा कुल सृजित मानव दिवस हेतु आंकड़ों का अन्य विकासखण्डों की अपेक्षा बहुत अधिक रहना, तथा महिलाओं की भागीदारी कम हो जाना इस बात की ओर संकेत करता है कि पर्वतीय क्षेत्रों में महिलाओं को रोजगार उपलब्ध होने में कमी है या महिलाओं को कार्य के लिए मांग करने हेतु जानकारी का अभाव प्रकट होता है।

विभाग को उक्त अभाव को दूर करने के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर रोजगार दिवस मनाने के प्राविधान को दृढ़ता से लागू करने की कार्ययोजना तैयार की जानी चाहिए जिससे जनपद के विकासखण्डों में महात्मा गांधी नरेगा के अन्तर्गत महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि होगी तथा ग्रामीण क्षेत्रों से हो रहे पलायन पर भी अंकुश लगेगा अर्थात मैदानी क्षेत्रों के विपरीत पर्वतीय क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी में कमी आई है।

4. विभाग द्वारा विगत चार वर्षों के दौरान औसत 497 परिवारों को ही 100 दिन का रोजगार उपलब्ध करवाया गया, जो कि कम है, जिसमें पर्वतीय विकासखण्डों के सापेक्ष मैदानी विकासखण्ड सबसे पीछे रहे अर्थात मैदानी क्षेत्रों में महात्मा गांधी नरेगा पर निर्भरता की कमी तो है ही, किन्तु पर्वतीय विकासखण्डों में भी अपेक्षाकृत बहुत कम है।

5. मनरेगा के अन्तर्गत प्रारम्भ और पूरे किये गये औसत कार्यों हेतु पिछले चार वर्षों के आंकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि विकासखण्ड रायपुर द्वारा उल्लिखित मद में 255 कार्य प्रारम्भ करते हुए छठवां तथा विकासखण्ड कालसी द्वारा 904 कार्य के साथ प्रथम स्थान से योगदान किया गया। विकासखण्डों की यही स्थिति कार्य पूर्ण करनें में भी हैं।

विभाग को कार्यो की अधिकता को मध्यनजर रखते हुए ग्रामीणों की आवश्यकता एवं मांग के अनुसार कई योजनाओं को एकीकृत करते हुए कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए, ताकि एक ही परियोजना से कई परिवारों को रोजगार उपलब्धता के साथ–साथ आजीविका के स्रोतों में भी वृद्धि की जा सके।

6. जनपद के अन्तर्गत विगत चार वर्षों के दौरान ग्राम्य विकास विभाग द्वारा आजीविका मिशन के तहत गठित स्वयं सहायता समूह हेतु उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि विकासखण्ड चकराता एवं कालसी में वर्ष 2019–20 में ही NRLM जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम को प्रारम्भ किया गया जिस कारण उक्त विकासखण्डों में निचले पायदान पर समूह गठित हुए हैं, जहाँ एक ओर जनपद की सबसे अधिक 57% ग्राम पंचायतें इन विकासखण्डों में ही सम्मिलित हैं वहीं दूसरी ओर पलायन के आंकड़े भी इन्हीं विकासखण्डों में अधिक हैं।

विभाग को मैदानी विकासखण्डों के साथ पहाड़ी विकासखण्डों में अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है, क्योंकि पर्वतीय विकासखण्डों में महिलाओं का अधिक निवास है। पात्र महिलाओं को उक्त योजना से जोड़ते हुए उनकी आजीविका के संसाधनों में वृद्धि करते हुए आगामी पलायन को रोका जा सकता है।

7. आजीविका पैदा करने पर आधारित योजनाओं को प्रत्येक विकासखण्ड और उप योजनाओं को पंचायत स्तर के लिए तैयार किया जाना चाहिए। इन योजनाओं का कार्यान्वयन ग्रामीण विकास और अन्य विभागों की मौजूदा योजनाओं के माध्यम से किया जा सकता है।

कृषि

मडुंवा, झंगोरा, गेहूं, धान, गहथ, चौलाई, भट्ट, मसूर, उडद, तुअर, राजमा, अलसी, तिल, जैसी पारम्परिक फसलों के उत्पादन में पिछले कई सालों से स्पष्ट गिरावट देखी जा रही है परन्तु आलू, मटर, गोभी, टमाटर, प्याज, लहसुन, अदरक सहित सब्जियों, एवं बागवानी जैसी नकदी फसलों की ओर कृषकों द्वारा रूचि बढ़ रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादित की जाने वाली फसलों के उत्पादन की मात्रा बारिश की निर्भरता और जंगली जानवरों के आतंक के कारण कम हुई है।

देहरादून जनपद में कुल 66231 हेक्टेयर भूमि या कुल भौगोलिक क्षेत्र का 18 प्रतिशत से थोड़ा अधिक खेती के तहत प्रयोग में लायी जाती थी। 20796 हेक्टेयर भूमि पर गेहूँ प्राथमिक फसल है, जबकि गेहूँ के अलावा, अन्य प्रमुख फसलों में चावल, मक्का, फल, सब्जियाँ और चाय बागान शामिल हैं।

जनपद के अर्न्तगत कृषि क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत हैं :–

जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों से हो रहे पलायन को रोकने हेतु हमें ग्रामीणों व युवाओं का रूझान स्वरोजगार की ओर लाना पडेगा। इसके लिए हमें मुख्य रूप से उद्यान व कृषि विभागों को सशक्त करने की आवश्यकता है।

1. उद्यमियों द्वारा आयोग को सर्वेक्षण के दौरान यह भी अवगत करवाया गया कि किसानों को मृदापरीक्षण के अभाव में नुकसान उठाना पड़ता है। यदि किसान मृदापरीक्षण करवाता है तो उसकी रिपोर्ट देर से प्राप्त होती है।

2. उद्यमियों द्वारा आयोग को सर्वेक्षण के दौरान यह भी अवगत करवाया गया कि विभाग जिन बीजों को बाहर से खरीद कर काश्तकारों को वितरित कर रहा है, वह क्षेत्रीय वातावरण के अनुकूल नहीं होता है। इस कारण भी अपेक्षानुसार उत्पादन क्षमता पूर्णतया घट जाती है।

   क्षेत्रीय–अनुकूलित बीजों का शोधन किया जाना नितान्त आवश्यक है। इसका प्राविधान किया जाय।

3. विभाग में कार्यरत क्षेत्रीय कर्मचारियों में नयी तकनीकी ज्ञान का अभाव है, जिनका परिणाम किसानों को भुगतना पड़ता है।

   विभागों में कार्यरत क्षेत्रीय कर्मचारियों को प्रत्येक साल कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा एंडवास तकनीकी व प्रैक्टिकल प्रशिक्षण दिये जाने का प्राविधान किया जाता है, तो इसका फायदा किसानों को होगा और

बेहतर परिणाम भविष्य में देखने को मिल सकेंगे, जिससे जनपद में विकास के नए आयाम स्थापित हो सकेगें।

4 विपणन तरीकों का विश्लेषण प्रत्येक विकासखण्ड में किया जाना चाहिए, विशेष रूप से पारंपरिक के साथ–साथ नकदी फसलों के सम्बन्ध में और विपणन पैटर्न को सुव्यवस्थित करने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में मदद मिलेगी।

उद्यान

उद्यान विभाग द्वारा जनपदान्तर्गत फल पौध, सब्जी बीज, मसाला बीज, पुष्प बीज, मौनपालन, पॉली हाउस, एन्टी हैलनेट, मल्चिंग सीट तथा एप्पल मिशन आदि कार्यक्रमों में कार्य सम्पादित किये जा रहे हैं। जनपद के मैदानी विकासखण्डों की सापेक्ष पर्वतीय विकासखण्डों की स्थिति अच्छी नहीं है। विभाग द्वारा मसाला, सब्जी बीज तथा फल पौध वितरण में लगभग एक समानान्तर मानक रखा गया है अर्थात बिना सर्वेक्षण के ही कार्यक्रमों को संचालित किया जा रहा है।

जनपद के अर्न्तगत उद्यान क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत हैं :–

1. विभाग द्वारा काश्तकारों को निम्न स्तरीय पौधे वितरण एवं कई जगह हर साल एक ही स्थान पर पौध रोपण किए जाने की समस्या से भी उद्यमियों द्वारा आयोग को सर्वेक्षण के दौरान अवगत करवाया गया।

   विभाग को उन्नत किस्म के पौधे काश्तकारों द्वारा स्वयं खरीदने एवं बिल भुगतान काश्तकार के खाते में उपलब्ध करवाये जाने का प्राविधान किया जाना उचित होगा। साथ ही उच्च कोटि की नर्सरियों को स्थानीय स्तर पर स्थापित किया जाना अति आवश्यक है। स्थानीय नर्सरियों के बनने से पारदर्शिता भी बनी रहेगी।

2. सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादित सामाग्री के लिए विपणन व बाजार उपलब्ध नहीं हो पाता है कारण कि काश्तकारों को उचित मूल्य नहीं मिल पाता है, उदाहरण के लिए सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादित माल्टा, कागजी नींबू, नींबू, सेब, आंवला, संतरा, अमरूद, हल्दी, अदरक, अरबी आदि। सब्जियों में राई, पालक, आलू, मूली सहित कई प्रकार के उत्पाद नष्ट हो रहे हैं, जिसका फायदा बिचौलियों द्वारा लिया जा रहा है। जिस कारण काश्तकार अपने को आर्थिक दृष्टि से कमजोर महसूस कर रहा है।

   सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों से प्रत्येक उत्पाद को उचित मूल्य पर खरीदने हेतु व्यवस्था व उक्त उत्पादन को बाजारों में भेजने व विपणन हेतु सहकारिता समितियों का गठन किया जाना अति आवश्यक है।

3. जनपद देहरादून के चकराता तथा कालसी विकासखण्डों में मसाला प्रजाति का अधिक मात्रा में उत्पादन उद्यमियों द्वारा किया जा रहा है किन्तु उद्यमियों को इसका पूर्ण लाभ नहीं हो पा रहा है।

   विभाग को चकराता और कालसी विकासखण्डों को मसाला हब के रूप में विकासित करने की आगामी कार्ययोजना में प्राविधान करना चाहिए।

अतः प्रत्येक न्याय पंचायत स्तर पर सहकारिता के तहत उक्त सुविधाओं का लाभ दिया जाना अति आवश्यक है तभी काश्तकार आत्मनिर्भर हो सकता है एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक विकास को सुदृढ़ करने एवं पलायन को करने में सहयोग मिलेगा।

4. उद्यान विभाग को मौजूदा फल उत्पादन को ध्यान में रखते हुए जनपद के लिए एक बागवानी विकास योजना तैयार करने की आवश्यकता है, जो गुणवत्ता (प्रजातियों सहित), विपणन तथा खामियों को इंगित करती हो। प्रत्येक विकासखण्ड में उन्नत बागवानी के विकास को ध्यान में रखना चाहिए, जो गुणवत्ता वाले रोपण सामाग्री से लेकर प्रसंस्करण और विपणन के उपयुक्त पैकेजों के लिए सही किस्म/प्रजातियों जैसे सभी पहलुओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

सिंचाई

उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्रों की भौगौलिक परिस्थितियां लगभग एक जैसी है, इसलिये सिंचाई की समस्याएं भी एक जैसी ही है। जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में सिचाई की नहरों, वन क्षेत्र, चट्टानीय भूमि, नालों व सघन वन क्षेत्र से निकल कर बनी हुई है। प्रतिकूल भौगौलिक परिस्थितियों के कारण नहरों में पानी का चलना अक्सर बाधित रहता है, कुछेक कारण है जिनका अवलोकन करना आवश्यक होगाः–

1. चट्टानीय क्षेत्र होने के कारण नहर जगह–जगह भूस्खलन होने से टूट जाती है, इसकी मरम्मत के लिए ऊँची दीवारे बनानी पडती हैं, जिनकी वित्तीय लागत अत्यधिक आती है, और विभाग के पास बजट का अभाव रहता है ऐसे में ग्रामवासियों को बडा नुकसान उठाना पडता है।

2. नहरों के क्षेत्र में जगह–जगह नाले पडते है, बरसात में इन नालों में मलवा व ढलानीय भूमि की मिट्टी बहकर नहरों में आ जाती है, और मलवा भर जाने से नहर अवरूद्ध हो जाती है।

3. घने जंगल से नहर निकलने के कारण आँधी तूफान से पेड़ो के गिरने से नहर क्षतिग्रस्त हो जाती है, पतझड़ में पेडों के पत्ते नहर में गिरने से पानी अवरूद्ध हो जाता है, बार–बार इनकी सफाई के लिए लोगों को जाना पडता है।

4. साथ ही वाष्पीकरण से जो पानी स्रोत से चलता है वो पानी पूरी मात्रा में टेल तक नहीं पहुंच पाता है।

जनपद देहरादून के पहाड़ी क्षेत्रों में सिंचाई परियोजनाओं में नहर के स्थान पर HDPE पाईपों का प्रयोग करवाया जाना उचित होगा।

उद्योग

जनपद में वर्ष 1991 की जनगणना से वर्ष 2011 की जनगणना तक मुख्य कर्मकर में कृषकों की संख्या में 10.3% तथा कृषि श्रमिकों की संख्या में 5.3% कमी आई। आंकड़ों से यह भी स्पष्ट होता है कि जहाँ मैदानी विकासखण्डों में कृषकों एवं कृषि श्रमिकों जैसे कर्मकरों की संख्या कम है वहीं पारिवारिक उद्योग एवं अन्य कर्मकरों की संख्या अधिक है जबकि पहाड़ी विकासखण्डों में इसके विपरीत स्थिति है अर्थात पर्वतीय क्षेत्रों से हो रहे पलायन को रोका जा सकता है क्योंकि इन स्थानों पर रोजगार की अधिक सम्भावनाएं हैं जिसके लिए सरकार को गाँवों में भी शहर जैसी सुविधाएं उपलब्ध करानी होगी।जनपद में वर्ष 2018–19 के

सापेक्ष वर्ष 2019–20 में मात्र 10% की वृद्धि दर से ही सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम स्थापित किये गये हैं। वर्ष 2018–19 हेतु उक्त आंकड़ा ऋणात्मक रहता है, जबकि इसी वित्तीय वर्ष में अन्य वर्षों के मुकाबले अधिक रोजगार उपलब्ध किया गया। रायपुर एवं डोईवाला विकासखण्डों की अपेक्षा अन्य विकासखण्डों में उक्त योजना की स्थिति अच्छी नहीं है अर्थात विभाग के पास ग्रामीण क्षेत्रों में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को विकसित एवं स्थापित करने हेतु कोई ठोस रणनीति एवं कार्ययोजना तैयार नहीं है।

जनपद के अर्न्तगत उद्योग क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें की जाती हैं :–

1. उद्यमियों द्वारा आयोग को सर्वेक्षण के दौरान यह अवगत करवाया गया कि प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना एवं मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के तहतबैंकों के द्वारा विभिन्न प्रकार की शर्तें रखी जा रही हैं, जिस कारण योजनाओं का असर कम देखने को मिलता है साथ ही स्वरोजगार हेतु युवाओं का मनोबल भी टूट रहा है। प्रत्येक योजना में बैंकों की ऋणीय जवाबदेही बनाई जाय तथा शर्तो का सरलीकरण किया जाय।

2. **उद्यमियों की समस्या :–**उद्योग विभाग द्वारा वर्ष 2016–17 ये वर्ष 2019–20 के मध्य विकासखण्ड चकराता एवं कालसी में जनपद के अन्य विकासखण्डों के सापेक्ष कमशः 1.2% व 1.8% उद्यम ही स्थापित किये गये जिससे विभाग इन विकासखण्डों में मात्र 0.8% व 1.0% रोजगार ही उपलब्ध करवाया पाया जो कि बहुत न्यूनतम है।

   विभाग को इन विकासखण्डों के लिए नये तकनीकी के स्थानीय उद्यम स्थापित करने हेतु अलग से बजट का प्राविधान करना चाहिए। जिससे इन विकासखण्डों में अधिक से अधिक सूक्ष्म एवं लघु उद्यम स्थापित हो सके और ग्रामीण को स्थानीय स्तर पर ही रोजगार उपलब्ध हो सके।

3 जनपद में सूक्ष्म, लघु और कारीगर इकाइयों के विकास हेतु क्षमता विकास योजना को आवश्यकता के अनुरूप होना चाहिए।

पर्यटन

जनपदान्तर्गत पर्यटन के क्षेत्र में स्वरोजगार की अत्यधिक सम्भावनाएं मौजूद है। जनपद अन्तर्गत ईको पर्यटन के साथ–साथ होमस्टे जैसी महत्वपूर्ण योजना को बढ़ावा दिये जाने की और अधिक सम्भावनायें है जिसके लिए पर्यटन विभाग को पौराणिक धार्मिक स्थलों के साथ–साथ ईको पर्यटन के स्थलों का सुव्यवस्थित विकास करना चाहिए। जनपद के विकासखण्ड चकराता में सबसे कम 6.3% तथा सबसे अधिक विकासखण्ड रायपुर में 39% होमस्टे स्थापित होने की पुष्टि होती है, किन्तु विकासखण्ड कालसी में अभी तक कोई भी होमस्टे स्थापित नहीं हुआ है।

जनपद के अर्न्तगत पर्यटन क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत की जाती हैं:–

1. जनपद में धार्मिक और पर्यटक स्थलों की वजह से पर्यटन की अपार संभावनाए मौजूद हैं। इसलिए इन स्थलों को जाने वाले मुख्य राष्ट्रीय राजमार्ग पर जितने भी सदाबहार रहने वाले गाड गदेरे है, इन्हें सहस्त्रधारा की तर्ज पर एक सुदंर मनमोहक पर्यटन स्थलों के रूप मे विकसित किया जा सकता है, जिनमें साहसिक खेल भी शामिल हो। ऐसे स्थानों पर ग्रामीण हट्स, कॉटेज, कैप्स, दुकानें इत्यादि

की व्यवस्था करते हुए विभाग को राजस्व प्राप्ति के साथ–साथ युवाओं का रूझान स्वरोजगार की ओर खीचने में सफल भी हो सकेगा।

2. जनपद के चकराता, विकासनगर में कम होमस्टे संचालित हो रहे हैं किन्तु कालसी में कोई भी होमस्टे अभी संचालित नहीं है जबकि कालसी चकराता विकासखण्डों में पर्यटक अधिक मात्रा में आना–जाना करते हैं। कालसी और चकराता विकासखण्डों में हर परिवार के घर में उन्नत किस्म के कमरे मौजूद हैं जिन्हें वो होमस्टे में उपयोग करवाना चाहते हैं किन्तु इस योजना के बारे में इन्हें कम जानकारी है। विभाग को जनपद में सर्वेक्षण कर (खास कर इन विकासखण्डों में) होमस्टे की परिकल्पना को साकार करते हुए जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों से हो रहे पलायन को कम करने एवं सामाजिक–आर्थिक विकास को सुदृढ़ करने में अपना योगदान देना चाहिए।

3. जनपद के अन्तर्गत एक जिला पर्यटन विकास योजना तैयार की जाय जिसमें विकास खण्ड़वार विशेष स्थलों की पहचान करवाये। यह आजीविका के साधनों में अपनी पहुंच बना चुका है परन्तु इसमें बढ़ावा दिये जाने हेतु क्षमता विकास कार्यक्रमों में भी अभिसरण होने की जरूरत है।

सहकारिता विभाग

जनपद में खरीफ अभियान के तहत लाभान्वित होने वाले सदस्यों की संख्या में जहाँ एक ओर लगभग 53% की ऋणात्मक कमी आती है वहीं रबी अभियान के अन्तर्गत लगभग 40% की वृद्धि होती है, कमी और वृद्धि हर विकासखण्ड में देखी जा सकती है अर्थात लगभग 13% किसानों द्वारा विगत चार सालों में सहकारी समितियों से अल्पकालीन ऋण लेने में रूचि कम हुई है। किसानों की आय में वृद्धि न होने के कारण कई किसानों को ऋण अदायगी में कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

जनपद के अर्न्तगत सहकारिता क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत हैं :–

1 सहकारिता विभाग के जरिए स्वयं सेवी के लक्ष्य आधारित कराये जा रहे है, जिसके धरातलीय परिणाम सुखद नहीं कहे जा सकते।

विभाग को चाहिए कि एक साल में एक विकासखण्ड में न्यूनतम 10 लाभार्थियों का चयन करके उन्हें रोल मॉडल के रूप में धरातल पर क्रियान्वित किया जाये और विभागों को पूरा करने का दायित्व दिया जाए,तो धरातल में वास्तविक परिणाम आ सकते है।

2 **समाधान हेतु सुझाव :–**किसानों की आय में वृद्धि न होने के कारण कई किसानों को ऋण अदायगी में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इसलिए किसानों का अल्पकालीन ऋण एवं क्रेडिट कार्ड की ओर ध्यान नहीं है, क्योंकि किसानों को विपणन का उचित प्रबन्धन उपलब्ध नहीं हो पा रहा है जिस कारण उनकी फसल को उचित दाम उपलब्ध नहीं हो पाता। सहकारी समितियों में किसानों को ई–मार्केटिंग की सुविधा उपलब्ध करवाये जाने का प्राविधान किया जाना उचित होगा। भविष्य में किसानों की आय में बढ़ोत्तरी के परिणाम देखने को मिलेगें।

पशुपालन

पशुपालन विभाग द्वारा विगत चार वर्षों के दौरान SCP तथा TSP के अन्तर्गत गौ–पालन हेतु आंकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2016–17 में 38% था वहीं वर्ष 2019–20 तक आते–आते 17%गिरकर 21% रह जाता है। जबकि SCP तथा TSP के अन्तर्गत बकरी–पालन कार्यक्रम के अन्तर्गत जनपद में बकरीपालन एवं मुर्गीपालन के प्रति पशुपालकों की रूचि में वृद्धि होती दिखाई देती है, किन्तु विभाग मांग के अनुसार बकरीपालन हेतु इच्छुक पशुपालकों की मांग पूर्ति नहीं कर पा रहा है।विगत चार वर्षों के मध्य केन्द्रपोषित एवं जिला योजना के तहत चारा बीज एवं चारा मिनी किट्स वितरण हेतु आंकड़ों में वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के दौरान क्रमशः 53% व 44% की गिरावट देखी गयी। जनपद में मुर्गीपालन के व्यवसाय में कृषकों की रूचि में इजाफा होना जनपद की सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु अच्छा द्योतक है।

जनपद के अर्न्तगत पशुपालन क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें की जाती हैं :–

1. जनपदान्तर्गत समय के बढ़ने के साथ–साथ गौ–पालन हेतु पशुपालकों की रूचि में गिरावट का आना इस बात की ओर इशारा करता है कि पशुपालकों को उन्नत प्रजाति की गाय उपलब्ध नहीं करवायी जा रही है।

   विभाग को उन्नत नस्ल की गाय पशुपालकों को उपलब्ध करवाने की आगामी ठोस कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए, साथ ही गाय के दूध एवं मल–मूत्र से बनने वाली वस्तुओं की उपयोगिता को सर्वसाधारण में प्रसारित करने का प्राविधान कराना उचित होगा।

2. ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालक चारा उगाने एवं चारा मिनी किट्स में उपलब्ध करवाये जा रहे पशु आहार के लिए पूर्णरूप से तैयार नहीं हैं अथवा आहार पशुपालकों को समय पर उपलब्ध नहीं हो पा रहा है।

   विभाग को पौष्टिक पशु आहार तैयार करने की नई तकनीकी के साथ न्याय पंचायत अथवा विकासखण्डस्तर पर समूह गठित कर प्रशिक्षण देते हुए क्रय–विक्रय केन्द्र स्थापित करने की आगामी कार्ययोजना तैयार करनी चाहिए।

3. वर्तमान समय में जनपद ही नहीं राज्य के हर हिस्से में मुर्गीपालन का व्यवसाय रोजगार देने में चरम सीमा पर है, क्योंकि इसकी डिमाण्ड दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। किन्तु जनपद के मुर्गीपालक जनपद की ही मांग को पूरा नहीं कर पा रहे हैं जिस कारण जनपद के बाहर से मुर्गों की आपूर्ति की जा रही है।

   जनपद में मुर्गीपालन के व्यवसाय को यदि बढ़ाना है, तो विभाग द्वारा मुर्गीपालकों को समुचित व्यवस्था देने का प्राविधान किया जाना चाहिए, जिससे स्थानीय मुर्गीपालकों द्वारा बाहरी राज्यों के मुर्गीपालकों से प्रतिस्पर्धा कर सके, क्योंकि बाहरी मुर्गीपालकों द्वारा राज्य के मुर्गीपालकों से कम मूल्य दर पर मुर्गों को उपलब्ध करवाया जा रहा है।

4. SCP तथा TSP के अन्तर्गत बकरी–पालन कार्यक्रम के अन्तर्गत जनपद में बकरीपालन एवं मुर्गीपालन के प्रति पशुपालकों की रूचि में वृद्धि होती दिखाई देती है, किन्तु विभाग मांग के अनुसार बकरीपालन हेतु इच्छुक पशुपालकों की मांग पूर्ति नहीं कर पा रहा है।

विभाग के बजट में वृद्धि किया जाना उचित होगा जिससे अधिक से अधिक लाभार्थियों को लाभान्वित किया जा सके एवं कार्यक्रम में सामान्य जाति के पशुपालकों को भी सम्मिलित किये जाने का भी प्राविधान हो।

5. कोरोना महामारी के बाद लोगों का रूझान पशुपालन की ओर बढा है, जबकि जनपद में पशु जनसंख्या के आधार पर पशु चिकित्सालयों की संख्या कम है, जिससे पशुपालकों को परेशानियों का सामना करना पड रहा है। खासतौर पर डेरी उत्पादन, कुक्कुट पालन, बकरी पालन से स्वरोजगार करने वाले युवाओं को कठिनाई हो रही है।

विभाग को पशु जनसंख्या के आधार पर पशु सेवा केन्द्र खुलवाने का प्राविधान करना चाहिए एवं जनपद के उत्कृष्ठ पशुपालकों को ही प्रशिक्षित करते हुए एक निश्चित मानदेय पर रखा जाय ताकि पशुपालकों को स्थानीयस्तर पर ही उचित सुविधायें मिल सकेगी, और जिसका परिणाम भविष्य में अच्छे देखने को मिल पायेगें।

डेयरी विकास

संतुलित पशु आहार अनुदान, डिवार्मिग, नई दुग्ध समिति गठन हेतु प्रथम वर्ष सहायता तथास्वच्छ दुग्ध उत्पादन गोष्ठी/उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम को भी बढ़ावा किये जाने की आवश्यकता है, जिसका परिणाम होगा ग्रामीणों को अधिक से अधिक सुविधायें उपलब्ध होंगी और ग्रामीण क्षेत्रों में डेरी के प्रति लोग की भावनाओं में परिवर्तन भी आयेगा, जिससे डेरी व्यवसाय को और मजबूती प्राप्त होगी।

जनपद के अर्न्तगत डेयरी क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत हैं :–

1. आयोग के द्वारा सर्वेक्षण के दौरान डेयरी विकास विभाग से जुड़े हुए पशुपालकों, किसानों साथ वार्ता में पाया गया कि विभाग द्वारा उनसे दूध 38 रूपये प्रति लीटर के भाव से खरीदा जा रहा है, जबकि स्थानीय स्तर पर दूध का मूल्य 55 से 60 रूपये प्रति लीटरहै। विभागीय स्तर से किसानों को मिल रहे दूध मूल्य में बढोत्तरी करनी चाहिए।

2. आयोग के द्वारा सर्वेक्षण के दौरान पशुपालक एवं किसानों द्वारा अवगत करवाया गया कि अच्छी नस्ल के नाम पर बाहरी/मैदानी क्षेत्रों एवं वातावरण में पले–बड़े दुधारू पशुओं को ग्रामीण पशुपालकों का उपलब्ध करवाया जा रहा है, जो पर्वतीय क्षेत्रों के वातावरण में अनुकूलित नहीं हो पाती है जिस कारण उसकी दूध देने की क्षमता में गिरावट आ जाती है जिससे पशुपालकों को नुकसान होता है।

ग्रामीणों को पहाड़ी दुधारू पशुओं की नस्ल जो जनपदों में स्थापित AI सेन्टरों में अपग्रेड की हुई हो उपलब्ध करवाये जाने का प्राविधान किया जाना उचित होगा जिसका परिणाम भविष्य में होगा कि कम दुधारू पशुओं से अधिक दूध का प्राप्त होना तथा ग्रामीणों में दुधारू पशु पालने की कम होती इच्छा शक्ति में भी वृद्धि देखने को प्राप्त होगी।

मत्स्य विभाग

जनपद के विकासखण्ड सहसपुर व डोईवाला में सबसे कम 10–10 परिवार तथा चकराता व कालसी विकासखण्डों में क्रमशः सबसे अधिक 88 व 84 परिवार लाभान्वित किये गये हैं अर्थात जनपद के अन्तर्गत

विभाग की कुल 13 योजनाओं के अन्तर्गत मात्र 248 परिवारों को वर्ष 2016–17 से वर्ष 2019–20 के मध्य लाभान्वित किया गयाजो कि चार वर्षों के लिए कम उपलब्धि है। कई योजनाओं के अन्तर्गत विभाग द्वारा अधिकांश विकासखण्डों के लिए कोई भी लक्ष्य नहीं रखा गया है। विभाग को इस ओर गम्भीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है।

जनपद के अर्न्तगत मत्स्य क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तुत की जा रही हैंः–

1. आयोग को सर्वेक्षण के दौरान मत्स्यपालकों द्वारा अवगत करवाया गया कि विभागीय अनुश्रवण की कमी के कारण जनपद में लगभग 30% मत्स्य तालाब वर्तमान में संचालित नहीं हैं अर्थात विगत चार वर्षों में स्थापित 248 तालाबों में से 174 मत्स्य तालाब ही वर्तमान में संचालित हो रहे हैं, जो कि मत्स्य व्यवसाय के लिए सकारात्मक प्रतीत नहीं होता है।

   विभाग को विकासखण्ड स्तर पर ''**मत्स्य विकसित सैल**'' का गठन करने का प्राविधान करना चाहिए। गठित सैल मत्स्य पालकों की सभी मूलभूत आवश्यकताओं का निदान करते हुए मत्स्य व्यवसाय में रोजगार के सुअवसरों को बढ़ाते हुए जनपद के ग्रामीण अंचलों में सामाजिक–आर्थिक विकास को सुदृढ़ करने एवं पलायन को कम करने हेतु विभाग की अहम भूमिका कायम कर सकें।

2. मत्स्य व्यवसाय में रोजगार उपलब्ध करवाने के अपार आयाम मौजूद हैं, किन्तु विभाग मत्स्य पालकों को सिर्फ मत्स्य पालन एवं बिक्री तक ही सीमित रखे हुए है। विभाग को मत्स्य पालकों को मछली के चिप्प, कीमा, तेल, पैंकिंग कच्ची फिश, पैंकिंग, फ्राई फिश आदि नये संसाधनों के साथ जोड़ते हुए जनपद के ग्रामीणों की आजीविका में आय का नया आयाम जोड़ने में सफलता प्राप्त कर सकेगा जिसका परिणाम आगामी समय में देखने को मिलेगा।